कृत हकीकत का पैगाम

शुभाशीष – जैनाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

कृतिकार – प्रखर वक्ता आचार्य विनम्रसागर

प्रथमावृत्ति – 2200 प्रति सावर 2005	
द्वितीयावृत्ति – 2200 प्रति बिजयनगर 2005	
तृतीयावृत्ति – 2200 प्रति अजमेर 2007	
चतुर्थावृत्ति –	

प्रकाशक
सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ, भिण्ड
देवेन्द्र जैन, बड़ी बजरिया, बीना (☎07580-223344)

मुद्रक
कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक :- मुकेश जैन 94145-55103
आर्यन् एजेन्सीज्
इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

पुनःप्रकाशन हेतु ज्ञानदान राशि 30/- रु. मात्र

ज्योति तो
गुरु की है
मेरा तो है सिर्फ
दिया।
जो कुछ भी
लिखा है हमने
वो सब गुरु ने ही दिया।
गुरुदेव की अमानत
गुरुदेव को अर्पित।
अर्पित से पूर्व
हम और हमारा
सब कुछ
समर्पित

आचार्य विनम्रसागर

गुरुदेव को समर्पित

कई शास्त्रों को पढ़ने की अपेक्षा संतों के प्रवचन बहुत महत्वशाली हैं क्योंकि कई शास्त्रों को पढ़कर भी हम उसके सार तक नहीं पहुँच सकते लेकिन प्रवचन उपसंहार का भी सार है शास्त्रों को पढ़कर उतना समझ में नहीं आता जितना प्रवचन सुनकर समझ में आता है शास्त्रों में बातें हैं धर्म की, प्रवचन में बातें ही नहीं अनुभव भी है धर्म का। वक्ता बनने के लिए सिद्धान्त-न्याय और नय को समझकर अपनी बात को सरल ढंग से कहने की कुशलता होना जरूरी है वक्ता वही बन पाता है जो कई अनुभवों की नहरों को पार कर चुका है। संत अपनी बातों में ही बहुत ही गहराइयों की बातें बता देते हैं संतों के प्रवचन समाज के लिए एक अमूल्य निधि हैं। साधुओं का सोच जीवन के बदलाव से पैदा होता है इसलिये उनके विचारों से कई लोगों का जीवन परिवर्तित हो जाता है। एक संत ही है जो एक कहानी में कई मोड़ देकर हर व्यक्ति को अपने जीवन के प्रति सोचने को मजबूर कर देता है।

मैं जब कलम को हाथ में उठाता हूँ तो मुझे खुद ही नहीं पता कि मेरी लेखनी को कौन चलाता है? कौन प्रेरित करता है? मेरा मस्तिष्क कौन सक्रिय कर देता है? मैं बहुत सोचता हूँ तब एक ही बात मेरी समझ में आती है ये गुरु का आशीर्वाद है उन्हीं की कृपा है मुझे तो ये लगता है कि हम तो निर्जीव शरीर की तरह हैं हमारे अन्दर प्राण फूँकने वाले हैं तो वह हमारे गुरुदेव ही हैं गुरु के आशीष से ही हमें कार्य में सफलता प्राप्त हो जाती है। जिसने अपने जीवन में कोई गुरु नहीं बनाया उसका जीवन तो कटी पंतग और बिना पते की बैरिंग पाती की तरह है वो कभी भी एक कदम नहीं चल सकता और जीवन का उत्थान नहीं कर सकता है जीवन में गुरु होना जरूरी है फिर चाहे वह मिट्टी का गुरु द्रोणाचार्य ही क्यों न हो।

हमने जो कुछ लिखा है वह सब गुरुवर का ही है उन्हीं का आशीष है अत: यह लघु चिंतन गुरुवर के चरणों में ही समर्पित है।

हमारा ज्ञान और वृद्धि को प्राप्त हो, हमें बोधि उपलब्ध हो ऐसी भावना को साकार करने के लिए गुरुवर के पावन चरणों में त्रयभक्तियुत् विनम्र नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

आचार्य विनम्रसागर

हकीकत का पैगाम

कविवर - सिद्धांतज्ञ - ओजस्वी वक्ता

आचार्य विनम्रसागर

नींव के पत्थर

- न्यूटन का सिद्धांत जैन दर्शन को अमान्य
- सच्चाई अँधेरे में नहीं उजाले में ही दिखेगी
- साधना के बिना आराधना नहीं होती
- बिन्दु को सिंधु बनाओ
- फूल और काँटे संयोग हैं ज़िन्दगी नहीं
- शक्ति ज्ञान के लिए वरदान है अभिशाप नहीं
- चिंता है सुलगती हुई चिता
- सत्य के बीज में से ज्ञान के फूल खिलेंगे
- मूल से ही ज़िंदगी की भूल मिट सकती है
- वस्तु को ही नहीं उसकी वास्तविकता भी जानो
- नज़रिया से नजारा अच्छा बुरा बनता है
- इच्छाओं से गर्त, दीक्षा से स्वर्ग निश्चित
- सच्चे ज्ञान से ही जीवन महकेगा
- हमारा ह्रदय, बाँटने वाली वस्तु से भरता है
- पीड़ा देने पर तुम्हें पेड़ा नहीं मिलेंगे
- खाक में मिलने वाले चिराग–जलते नहीं, धधकते हैं
- संत के चरण से घर और आचरण से जीवन पवित्रा
- वेदन और वेदना संवेदनशील बनाती है
- सीखना है तो जीना सीखो मरना नहीं
- क्रोध का जामा नौकर की तरह हो, मालिक सा नहीं
- मानव वही है जो मानवीयता की कीमत समझे

आचार्य
विरागसागर जी महाराज

नाम	:	अरविन्द कुमार जैन
पिता का नाम	:	श्री कपूर चन्द्र जैन
माता का नाम	:	श्रीमति श्यामा देवी जैन
जन्म तिथि	:	02/05/1963
जन्म स्थान	:	पथरिया, दमोह
मुनिदीक्षा	:	05/12/1983
आचार्य पद	:	08/11/1992
प्रदत्त दीक्षाएँ	:	लगभग 124

लेखन कई पुस्तकों के लेखक व रचयिता, सर्वचर्चित पुस्तक शुद्धोपयोग व आगम चक्खू साहू एवं सम्यग्दर्शन

भारत देश में बुंदेलखण्ड की पावन वसुंधरा पर जन्मे मात्र 20 वर्ष की उम्र में मुनि दीक्षा प्राप्त करके दिगम्बर परम्परा को चिरजीवित रखने वाले, केवल 41 वर्ष की उम्र में लगभग 120 शिष्यों को दीक्षा से विभूषित करने वाले अपने 20 प्रभावक लघु संघों के अधिनायक, अनुशासन और वात्सल्य के धनी, लगभग 80 शिष्य मुनि दीक्षा लेने के लिये साधनारत तथा जिनने कई शिष्यों को श्री धवला जी, जय धवला जी व महा धवला जी का अध्यापन कराया।

आचार्य
विनम्रसागर

नाम	:	रतनस्वरूप जैन "नवरत्न"
पिता का नाम	:	पं.श्री मेरचन्द जी जैन (समाधिस्थ मुनि 108 श्री विश्वकीर्तिसागर जी)
माता का नाम	:	श्रीमति चमेली देवी जैन
जन्म तिथि	:	01/10/1963 भिण्ड
शिक्षा	:	एम. कॉम
ऐलक दीक्षा	:	09/08/1992, द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र (म.प्र.)
मुनि दीक्षा	:	08/06/2003, ललितपुर (उ.प्र.)
आचार्य पद	:	10/12/2010 बाँसवाड़ा (राज.)

रुचि : काव्य रचना, वैज्ञानिक, सैद्धान्तिक, मनोवैज्ञानिक खोज, चिंतन, लेखन व गहन तर्कशीलता (हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं का ज्ञान)

एम.कॉम तक उच्च शिक्षा प्राप्तकर आठ वर्ष सर्विस करके अध्यापन कराया। पश्चात् धर्म की गहनता को समझ सन्यास प्राप्त किया। अद्भुत शब्द विज्ञान के धनी, तर्कशक्ति में अव्वल, उर्दू - संस्कृत - हिंदी - अँग्रेजी - प्राकृत भाषाओं का ज्ञान, सरलता-सहजता-सौम्यता है जिनका लक्षण। विवादित पंथों से दूर, केवल निर्ग्रन्थ, कई पुस्तकों के लेखक व रचयिता, पूजन व भक्तामर शिविर प्रणेता

Donator

भजन

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे – ऽऽऽ
होनी अनहोनी हो – हो–2, कब क्या घट जाये रे – ऽऽ
जीवन है पानी ....
जितना भी कर जाओगे, उतना ही तुम पाओगे,
किये बिना कुछ नहीं मिलता–2
अपना–अपना करना है–करनी का फल भरना है,
नीम के तरु पे–हो हो – नहीं आम दिखायें रे–ऽऽ
जीवन है पानी ....
कर्म किया नहिं है अच्छा, धर्म न मिल पाया सच्चा,
कैसे जीवन गुलशन हो–2
वीराने इस जंगल में–रहें न इक पल मंगल में,
गम का यहां पर हो–हो हम बोझ उठायें रे–ऽऽ
जीवन है पानी ....
पल की हमको खबर नहीं, पीते रहते जहर यहीं,
कैसे हम जी पायेंगे–2
ललक न जागी जीवन की, खिली न किस्मत चेतन की,
केसे यहाँ पर – हो – हो, हम ज्ञान बढाएँ रे–ऽऽ
जीवन है पानी ....
सोचा तुमने कभी नहीं, धोखा तुमने दिया यहीं,
कैसे ईश्वर पाओगे–2
दगा – सगा नहीं होता है–दगा – दाग नहीं धोता है,
जीवन में आकर हो–हो क्यूँ पाप कमाये रे – ऽऽ
जीवन है पानी ....
चंद दिनों का जीवन है–इसमें देखो सुख कम है,
गम ही गम नजराता है–2
जन्म सभी को है मालूम, मृत्यु किसी को नहीं मालूम,
जाने कब तन से हो – हो, पंछी उड़ जाये रे – ऽऽ
जीवन है पानी ....

नींव के पत्थर

- शरण उसकी लो जो स्वतंत्रा करा दे
- कर्म ही भविष्य का निर्माता है
- दिल में प्रेम हो तो घर ही स्वर्ग है
- टेंशन का उपचार मेडीसिन नहीं मेडीटेशन है
- असार में सार खोजना ही विवेक है
- ज्ञान की जड़ें कड़वी हैं लेकिन फल मीठे हैं
- जमाना उसका है जो जमाने को न चाहे
- अच्छे विचारों से स्वस्थ शरीर निर्मित होगा
- दिशा ही जीवन की दशा बदल देती है
- जो गाओगे वही पाओगे – अन्य नहीं
- जीवन निर्माण से निर्वाण की ओर प्रयाण
- हम स्वतंत्रा होने के लिए जियें गुलाम होने को नहीं
- सुसंस्कार ही जीवन की आधारशिला है
- परमात्मा का रिश्ता पवित्राता से है, पदार्थ से नहीं
- प्रभु भक्ति के बिना शक्ति मिलना असंभव
- कलाएँ वेदों से नहीं विज्ञता से उपजेंगीं
- मौज का चयन करो अन्यथा मौत का करना पड़ेगा
- सत्य ज्ञान से है जीवन गुलशन
- सीरत के बिना सूरत फिजूल है
- मिट्टी के नहीं, मन के घर को जगमगाओ
- धर्म मुक्ति पाने को और अर्थ काम के लिए होता है

नींव के पत्थर

- भूखे पेट को भरना सरल है भूखी आँखों को भरना कठिन
- पूजन जीवन के लिए समयसार है
- रोने के पीछे रोना, हँसने के पीछे हँसना है
- रूप को नहीं रूह को सँवारना है
- रोशनी के आँगन में अँधेरा न खिलाओ
- समय का सदुपयोग ही जीवन है
- गर चिराग से न जले तो आग से जलना पड़ेगा
- सीखना है तो जीना सीखो, मरना नहीं
- देने वाला देवता, लेने वाला दैत्य है
- अपना दिया स्वयं जलाओ
- मूल से फूल और भूल से शूल पैदा होंगे
- साक्षी बनो या पुरुषार्थी पर आलसी नहीं
- जीवन को मौतमय नहीं मौजमय बनाओ
- भलाई से अच्छाई और बुराई से बदनसीबी मिलती है
- आकांक्षा धर्म की कीमत को घटाती है
- सूत्रा में सार और संस्कार छिपे रुस्तम हैं
- सबेरा उजाले से नहीं जागने से होता है
- हमें जलने की जरूरत है, दहकने की नहीं
- हँसके वहीं मर सकेगा जो हँसकर जिया हो
- माँस–शराब व शहद खाना बुद्धि भ्रष्ट करना है
- लिखा हुआ जल जाएगा लखा साथ में जाएगा

नींव के पत्थर

- आधि–व्याधि–उपाधि से रहित होती है समाधि
- जीवन स्रजन के लिए है, सर्जन के लिए नहीं
- ज्ञान का चिराग भक्ति से जलता है युक्ति से नहीं
- भय मिटाने के लिए सामना जरूरी
- सच्चाई अँधेरे में नहीं उजाले में ही दिखेगी
- शांति और सुख सत्य की छाया में
- इंसानियत ही इंसान की मूल धरोहर है
- आत्मा की शरण में ही स्वतंत्राता का फूल खिलेगा
- धर्म से धन व सुख दोनों प्राप्त होते हैं
- गलत जीवन अंत में भयभीत नज़र आता है
- जाओ वहाँ, जहाँ सब कुछ मिले
- चिराग न जला तो चिरकाल तक दु:ख रहेगा
- कर्माधीनता में नहीं स्वाधीनता में है मोक्ष
- ज़िन्दगी प्रश्न नहीं, उत्तरों का उत्तर है
- तस्वीर से नहीं, तासीर से प्रेम कर
- ज़िंदगी राह के लिए है, गुनाह के लिए नहीं
- देखोगे वो छपेगा, सोचोगे वो लिखेगा
- सन्त जीवन्त शास्त्रा हैं, मृत नहीं
- ज्ञान से न जले तो अज्ञान से दहकना होगा
- कर्तव्य ही पतित को पावन कर परमात्मा बना देता है
- कर्तव्यशील को ही सत्य नसीब होगा

नींव के पत्थर

- हमारे सारे प्रयास अँधेरा मिटाने के लिए है
- अध्यात्म है हृदय को गुलशन बनाना
- झुकना भरने का आयाम है
- अध्यात्म हृदय से उपजता है मन से नहीं
- सद्भावना शक्तिवर्धक टॉनिक है
- अनंत भ्रमण का अंत हृदय की विशालता से होगा
- शक्ति चाहक परमात्मा को जरूर ध्याये

भजन

कर तू प्रभु का ध्यान बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान ।
निज घट में भगवान बाबा, निज घट में भगवान ।।

काँटों में भी जीवन तेरा फूलों सा खिल जायेगा
खोज रहा है जिसको तू वह पल भर में मिल जायेगा
खुद को तू पहिचान बाबा खुद को तू पहिचान

कभी किसी का दिल दुःख जाये ऐसे बोल कभी मत बोल
घावों पर मलहम बन जायें ऐसे बोल बड़े अनमोल
कहलाता यह ज्ञान बाबा कहलाता यह ज्ञान - 2

धन वैभव यह महल खज़ाना कुछ भी साथ न जायेगा
सुबह खिला जो फूल बाग में साँझ समय मुरझाएगा
कर ले धर्मध्यान बाबा करले धर्मध्यान - 2

मात पिता गुरुजन कर आदर धर्ममार्ग पर चलो सदा
गुरुजन की नित सेवा करना श्रावक का कर्तव्य कहा
पाओगे सम्मान बाबा पाओगे सम्मान - 2

जिसको अपना कहा आज तक हुआ कभी न वह अपना
जिसकी खातिर जिया आज तक वह निकला सुंदर सपना
क्यों तू करे गुमान बाबा क्यों तू करे गुमान - 2

राग - द्वेष भावों के कारण भवसागर में डूब रहा
गँवा रहा भोगों में जीवन फिर भी मन नहिं ऊब रहा
क्यों बनता नादान बाबा क्यों बनता नादान - 2

हिंसा-झूँठ-कुशील-परिग्रह- चोरी ये मत पाप करो
पाप विनाशक धर्म प्रकाशक णमोकार का जाप करो
हो सम्यक् श्रद्धान बाबा हो सम्यक् श्रद्धान - 2

न्यूटन का सिद्धांत जैन दर्शन को अमान्य

सिद्धांत उसे नहीं कहते जो आज कुछ है और कल कुछ और हो जाये जैसे वैज्ञानिक पूर्व में पृथ्वी को गेंद की तरह गोल कहते थे अब उसे थाली जैसी गोल कहने लगे। सिद्धांत वह है जो युगों - युगों तक वही रहता है अंतिम सिद्धि को सिद्धांत कहते हैं, सिद्धांत अटल सत्य होता है, सिद्धांत बनाये नहीं जाते बने हुए सिद्धांतों को अनुभव की कसौटी पर परखा जाता है, जो नये सिद्धांत बनाते हैं और उस पर अपनी सील लगाते हैं उनके सिद्धांत प्रकृति अमान्य कर देती है। जितने भी सिद्धांत थे वो सभी पूर्व महा वैज्ञानिकों द्वारा महासंतों द्वारा प्रतिपादित हो चुके हैं इसलिए अब कोई ऐसा सिद्धांत पेश करने को नहीं है, यदि न्यूटन ने कहा है कि आँखों से दिखने वाली वस्तु गुरुत्वाकर्षण के क्षेत्र में हो तो वह जमीन की ओर चली आती है तो जैन दर्शन इस बात को अस्वीकार करता है, क्योंकि तीर्थंकर केवली भगवान और ऋद्धिधारी ऋषिराज आकाश में गमन करते हैं, वहीं रहते हैं, जमीं पर भगवान कभी नहीं आते और वो गुरुत्वाकर्षण के अंदर भी हैं क्योंकि तीर्थंकर प्रभु की प्रवचन सभा लगभग 9 किलोमीटर की ऊँचाई पर लगती है, अतः न्यूटन का सिद्धांत जैन दर्शन को अमान्य है।

सत्य की कसौटी पर जो खरा उतरे वही सिद्धांत है सिद्धांत वह अंतिम सार है जिसे किसी भी तर्क से खण्डित न किया जा सके। न्यूटन का सिद्धांत गलत सिद्ध हो गया है अतः इसे सिद्धांत न कहकर विचार कहा जाना चाहिए। जैन दर्शन किसी एक विचार को सम्पूर्ण नहीं मानता सम्पूर्ण में कई विचारधाराएँ हो सकतीं हैं सम्पूर्ण को जानने पर ही सत्य की सिद्धि होती है, पूर्व सत्य की सिद्धि होने पर ही सिद्धान्त निर्मित होता है। आज के वैज्ञानिकों ने कुछ सत्य तो हासिल किया है लेकिन सब कुछ नहीं। सब कुछ हासिल आज कोई भी महान व्यक्ति नहीं कर सकता। न्यूटन ने हर वस्तु को नीचे आते देखा तो उसने कह दिया कि पृथ्वी में चुम्बकत्व है लेकिन यह घटना तो न्यूटन के पहिले भी इस दुनियाँ में प्रायोगिक थी अथवा घटित हो रही थी। न्यूटन के समय से वस्तुओं को जमीन खींचने लगी थी पहले ऐसा नहीं था? यह भी गलत है अतः न्यूटन एक विचारक थे सिद्धांतज्ञ नहीं।

जैन दर्शन किसी व्यक्ति विशेष या तीर्थंकर विशेष द्वारा उत्पादित नहीं यह दर्शन प्रकृति का प्रतिपादक है। प्रकृति से जो निर्मित है, प्रकृति की जो व्यवस्था है, प्रकृति की जो अवस्था है उसमें जो परिवर्तन है उसको दर्शाने वाला जैन दर्शन है। प्राकृतिक सिद्धान्त कोई भी अमान्य नहीं कर सकता है, यद्यपि यह प्राकृतिक सिद्धांत भगवान महावीर के ज्ञान में स्पष्ट नजर आया

उन्होंने अपने उपदेशों में दिव्य ध्वनि के माध्यम से करुणावश लोगों को अभिव्यक्त कर दिया, महावीर भगवान को जिन कहने के कारण वह प्रकृति का दर्शन जैन दर्शन कहलाने लगा। अतः हम सभी को बहुमुखी होना चाहिए यदि हम बहुमुखी होंगे तो हमारे अंदर सत्य की उपलब्धि होगी। सत्य की उपलब्धि से सिद्धांत का प्रतिपादन हो सकेगा तभी हम सभी प्रकृति के सिद्धान्तों को जानकर अपने जीवन के सत्य को प्राप्त कर कर सकेंगे।

धर्म मंजिल दिखाता है विज्ञान रास्ता।

Religion shows the goal and science show the path.

हम प्रभावना में नहीं सद्‌भावना में जियें।

We should live in good will not in reputation.

प्रतीक्षा प्रेम की परीक्षा है व परीक्षा प्रेम का फल।

Waiting is the exam of love and the exam is the result of love

बिना लक्ष्य के मंजिल नहीं मरघट मिलता है।

लक्ष्य विहीन मानव कोल्हू के बैल के समान है।

We without goal is like on of an ox extracting mechanism.

धर्म सीधा-साधा और अधर्म टेढ़ा-मेढ़ा मार्ग है।

Religion is simple and non religion is a crooked path.

सच्चाई अँधेरे में नहीं उजाले में ही दिखेगी

दुनियाँ में एक छोटे से छोटा दरिद्री और हीन व्यक्ति भी सच्चाई से परिचित होना चाहता है, फिर बड़े और बुद्धिमानों का कहना ही क्या। सच्चाई वह सुंदर हीरा है जिसे पाने के लिए आदमी कुछ भी कर सकता है एक संत सच्चाई पाने के लिए सब कुछ दाँव पर लगा देता है और अपना चिराग जलाने का भरसक प्रयास करता है। वह सच्चाई बाहर की वस्तुओं में नहीं बल्कि अपने अंदर के अस्तित्व में खोजता है। संत की दशा दुनियाँ में रहते हुए भी न रहने जैसी होती है वह परमात्मा के खयाल में खोया – खोया सा रहता है, परमात्मा ही परम् सत्य है। यदि परमात्मा अपने अनुभव में आ जावे तो सत्य को पाना बहुत ही सरल हो जावे लेकिन परमात्मा का अनुभव सच्चाई को आचरण के रूप में प्रकाशित करना है सत्य का आचरण अज्ञान के अँधेरे में नहीं ज्ञान के उजाले में उद्घटित होगा और जब तक हमें ज्ञान नहीं होगा तब तक सच्चाई के अस्तित्व का पता करना भी नामुमकिन है अज्ञान के अँधेरे में असत्य भी सत्य भासित होता है।

यदि किसी कमरे में वर्षों से अँधेरा है और उसमें अँधेरा भरना चाहें तो क्या किया जा सकता है। उसमें अँधेरा भरोगे कैसे? वहाँ तो पहले से ही भरा हुआ है। यदि उजाले की कहते हो तो हमारी हर क्रिया उजाले को भरने की होनी चाहिए अँधेरों के मैदान में एक दीप जलाना पुरुषार्थ का काम है और दीप जलाकर हमेशा हमेशा जलाए रखना, हमेशा जागृत रहकर जीने के समान है। पुरुषार्थ की तीली दीप जला ही सकती है बुझा नहीं सकती। एक आलस ही तो है जो इंसान का शत्रु भी है और अँधेरे का हेतु भी, यदि आलस हमारे जीवन में न होता तो उजाला ही उजाला होता, आलस अँधेरे का मित्र है और पुरुषार्थ है सच्चाई को उद्घटित करने वाला आइना।

हमारी सारी आराधना का लक्ष्य उजाले की किरण को पाना है, हमारी पूरी ज़िंदगी की यात्रा उजाले की खोज में है, हमारा अंतिम पड़ाव आनंद, शांति, सुख में विलीन होने का है, लेकिन तब हम हताश हो जाते हैं, जब हमें ये नसीब नहीं होते। उजाला पाने के लिए हमें अँधेरे को समझना जरूरी है, यदि अँधेरे की तह तक हम न पहुँच पायेंगे तो उजाला नसीब कैसे होगा, सत्य का भान असत्य को पूर्णत: से समझ लेने पर ही होता है। क्योंकि सत्य को असत्य कहने वाला या तो अज्ञान है या अधकचरा ज्ञान है। धर्म के फूल उजाले के वृक्ष पर फलते हैं, धर्म के फल सत्यता के बीज से पनपते हैं। ज्ञान की ज्योति में हमें अपना अस्तित्व भी दिखाई देता है और दूसरों का भी। लेकिन यह अकाट्य सत्य है कि अपना चिराग जब अपने ही बोध से जलेगा, अपने ही बोध से भरेगा तभी हम सच्चाई को लख सकेंगे और अपने अदृश्य रूप को लख सकेंगे, और यह हमारा यह तुच्छ जीवन सफल हो सकता है।

साधना के बिना आराधना नहीं होती

परमात्मा की आराधना कोई करे या न करे लेकिन परमात्मा की आराधना को खराब बताने की हिम्मत शायद दुनियाँ के किसी भी आदमी में न होगी प्रभु की आराधना वह चाबी है जो हर उलझे हुए ताले को सहजता से खोल सकती है। मतलब यह है कि आराधना से सभी कार्य सिद्ध हो सकते हैं। यहाँ कोई कह सकता है कि हमें आराधना करते-करते वर्षों हो गए लेकिन हमारी परेशानियाँ दूर न हुई और जो लोग आराधना नहीं करते वो लोग सुखी हैं। यदि आप आराधना कर रहे हैं और उसका फल आप महसूस नहीं कर रहे हैं तो समझना आपकी आराधना कमजोर है, अनुभव हीन है और दूसरी बात है आपकी आराधना जीवन के नियमों का उल्लंघन करती हुई है या आपकी आराधना प्रभु की बातों का उल्लंघन करते हुए है। ऐसी आराधना आपको समुचित फल देने में असमर्थ होगी और आप आराधना की शक्ति को कमजोर कर देंगे। लेकिन आप अपनी कमजोरी न देख पायेंगे। बिना साधना के आराधना ही क्या कुछ भी कार्य नहीं होता। यदि आप संगीत सीखें तो साधना की जरूरत, यदि आप सर्कस में कोई कला सीखें तो साधना की जरूरत, यदि आप गाना सीखें तो साधना की जरूरत, यदि आप शरीर को बलिष्ठ बनाने की सोचें तो साधना की जरूरत हर कार्य में साधना की आवश्यकता है तो क्या परमात्मा को पाने के लिए साधना नहीं करनी पड़ेगी? मैं तो ये कहूँ कि यहाँ पर परमात्मा को पाने के लिए जितनी कठिन साधना करनी पड़ती है उतनी कठिन अन्य कलायें पाने में नहीं करनी पड़ती है। प्रभु को पाने में एक नहीं हजारों जिन्दगी लग जाती हैं। ये छोटी कलाएँ तो चंद दिनों में मिल जातीं हैं। परमात्मा को पाने का तरीका आराधना ही है और आराधना साधनापूर्वक हो।

हम आराधना कर रहे हैं और रात्रि में भोजन भी कर रहे हैं, अभक्ष (न खाने योग्य वस्तुएँ) भक्षण कर रहे हैं, शराब अंडे भी खा रहे हैं और परमात्मा की जय-जयकार भी कर रहे हैं। हम चिलम, गांजा, तम्बाकू, हुक्का आदि से नशा भी कर रहे हैं और बाबा पुजारी बनने का ढोंग भी रचा रहे हैं हम न करने योग्य हिंसा भी कर रहे हैं और आराधना भी कर रहे है। हम बेइमानी भी कर रहे हैं और पूजा भी कर रहे हैं ऐसी आराधना साधनाहीन है। समुचित फलदायी नहीं है। ऐसी स्थिति में कोई आराधक परमात्मा को दोषी ठहराये या आराधना को शक्तिहीन बताये तो यह उसकी अज्ञानतापूर्ण मूर्खता है। क्योंकि इच्छाएँ और साधना एक दूसरे के विरोधी है इच्छाएँ ही साधना का खून-खच्चर कर डालतीं हैं। आदमी में गर इच्छाएँ न होतीं तो आदमी अपनी शक्ति से सारी दुनियाँ को अपने वश में कर

लेता। आदमी की वास्तविक शक्ति के सामने दुनियाँ की सभी शक्तियाँ फीकी पड़ जाती हैं। साधना सिद्धियों की जननी है। मंत्र जपने से नहीं तपने से सिद्ध होता है। साधना में सभी मंत्र निहित हैं। आदमी इतना बेईमान है कि साधना करना नहीं चाहता और सब कुछ पाना चाहता है।

कभी – कभी मनोकामना पूर्ण न होने पर धैर्य टूट जाता है और स्वयं की गलती को स्वीकार न करते हुए ऐसे लोग साधना के विरोधी हो जाते हैं ध्यान रहे ऐसे लोग भोगी ही थे। आराधना तो अपने मतलब की सिद्धि के लिए थी ऐसे ही लोगों को बगुलाभगत कहा जाता है। यदि आप साधना का विरोध करेंगे तो आराधना की जगह विराधना होगी अब परमात्मा तुम्हारे लिए अभिशाप बन सकता है। वही परमात्मा आराधना करने पर वरदान सिद्ध था अब वही अभिशाप हो जायेगा और अभिशाप को हटाने के लिए फिर तुम्हें आराधना का ही सहारा लेना पड़ेगा आज जितने भी लोग सम्पन्न और सुखी नजर आ रहे हैं ये सब आराधना का फल ही हैं भगवान राम, हनुमान, महावीर आराधना करके आराधना के फल को प्राप्त हुए इसलिए आज सभी के आराध्य है। जहाँ भी कोई कार्य किया जाता है तो परमात्मा का नाम लिया जाता है। यह नाम नहीं उसकी आराधना ही है तभी कार्य सफल होते हैं। आराधना में उत्साह, उमंग और उपयोग होना जरूरी है तभी आराधना फलदायी होगी। आराधना का फल तत्काल मिलता है, आराधना करते हुए अपना जीवन सात्विक और सुसंस्कारित होना चाहिए। तभी हम आराध्य के सच्चे आराधक हो सकते हैं तथा समुचित फल पाकर अपना जीवन उज्ज्वल बना सकते हैं एवं आराधना को अभिशाप न बनाकर वरदान भी बना सकते है।

मौत का साक्षात्कार जीवन में उपकार है।

Assimilation with death is an obligation in life.

रात तभी तक है जब तक आँखें बंद हैं।

Night lasts till we keep our eyes closed.

बिन्दु को सिंधु बनाओ

जीवन पानी की बूँद है, जीवन एक महासागर भी है। जीवन एक सरिता है, जीवन एक गागर भी है। जीवन डबरा भी है और जीवन नाली का कचरा भी है, जीवन पानी की बूँद है इसे कैसे समझा जाये, कहा जाता है कि ''चुल्लू भर पानी में डूब मरो'' मरते तो सभी हैं जो व्यक्ति संसार को रचते-रचते, घर में फँसते-फँसते ही मर जाता है वह चुल्लू भर पानी में डूबकर मर जाता है।

अनन्त के सागर को छोड़कर अनन्त की सम्पदा को छोड़कर जरा से धन के लिए जीवन गुजार देना चुल्लू भर पानी में डूब मरना है। एक प्रश्न आता है कि बड़ा त्यागी कौन है? जो थोड़े से धन के लिए अनन्त की सम्पदा छोड़ देता है या अनन्त सम्पदा के लिए थोड़ा सा नश्वर धन छोड़ देता है। आज का मनुष्य थोड़े से धन ऐशोआराम के लिए अनन्त की सम्पदा को पाने के लिए इस नाशवान पुद्गल रूपी संपदा को छोड़ते हैं और लोगों को भी छोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे हम इस बहुमूल्य जीवन को पानी की बूँद की तरह न मिटा देते हैं।

हम अनन्त सागर की खोज में हैं या नदी के साथ हैं या नाले में हैं, यह खोज हमें स्वयं ही करनी होगी। किसी के कहने से हम बूँद या सागर नहीं हो जायेंगे। पानी की बूँद इसलिए हैं कि बूँद कहीं भी जाने के लिए स्वतंत्र है। बूँद चाहे तो सागर में जा सकती है, बूँद चाहे तो नदी में विलीन हो सकती है, बूँद चाहे तो नाले में मिल सकती है और बूँद चाहे तो जमीन पर पड़कर ओस की बूँद की तरह अपना अस्तित्व खो सकती है। इसी प्रकार मानव भी स्वतंत्र है, मानव के हाथ में मास्टर की (चाबी) है। लेकिन मानव कैद है कितनी विचारणीय बात है। जरा सा अपने जीवन को समझकर तो देखें चाबी अपने हाथ में है एक समय में मानव स्वतंत्र हो सकता है। मानव चाबी हाथ में लेकर ईश्वर की परीक्षा कर रहा है, लेकिन ईश्वर मानव के हाथ चाबी देकर उसकी परीक्षा कर रहा है।

हर व्यक्ति स्वतंत्र है, किसी ने किसी को नहीं बाँधा है यदि वह अपने को परमात्मा को सौंप दे तो उसका जीवन सफल हो जाता है। जिस तरह बूँद अकेली होती है तो सूरज उसे सुखाना चाहता है,

लोग उसे पैरों से रौंदना चाहते हैं, लेकिन जब वह बूँद अपने आपको सागर के लिए सौंप देती है तब वह निष्फिक्र हो जाती है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। सागर कोई और नहीं वह परम् पिता परमात्मा ही है, बूँद और कोई नहीं यह मानव ही बूँद है। यदि यह अपने को उस परमात्मा से मिला दें तो अपने अस्तित्व को पा जायें भगवान राम ने अपने को परमात्मा से मिलाया था आज भी वह पुरुषोत्तम राम के नाम से जाने जाते हैं यदि हम भी उस परमात्मा को अपना सर्वस्व सौंप दें तो हम भी परमात्म रूप होकर उस शाश्वत अनन्त संपदा को प्राप्त कर इस बूँद के जीवन को महान् सागर का रूप दे सकते हैं जिसे न सूरज सुखा सकता है और न हवा उड़ा सकती है।

गर्भ त्यागे बिना संसार में जन्म नहीं हो सकता है।

Without leaving the womb birth can not be in the world.

मनुष्य के चेतन बनते ही धर्म शुरू हो जाता है।

Religion begins when internal wake devolops.

धर्म, स्वतंत्रता व स्वावलंबन से होता है
परतंत्रता से नहीं।

Religion is in freedom and self-efforts not is slavery.

चेहरा अंतरंग भाव का प्रदर्शन है।

Face is the display of internal feelings Mood depicts on face.

ओम आभामण्डल को बदलने की श्रेष्ठ प्रक्रिया है।

"OHM" is the best process to change the halo.

फूल और काँटे संयोग हैं ज़िन्दगी नहीं

हर दृश्य बदलकर पैदा होता है और बदल कर मिट जाता है हर दृश्य बदलता हुआ है। समय अपनी गति से बदल रहा है तो वस्तु और दृश्य अपनी गति से बदलते हुए हैं कभी – कभी हमें वहीं पर फूल ही फूल दिखते हैं और कभी – कभी हमें वहीं पर फूल नजर ही नहीं आते केवल काँटे ही दिखते हैं। जब हम फूल पर नजर डालें तो फूल, काँटों पर नजर डालें तो काँटे नजर आते है लेकिन मेरी आँख फूल और काँटों को देखने के लिये नहीं हैं फूल में मूलभूत क्या है उसे देखने को है यदि हम काँटे भी देखते हैं तो फूल के लिये और यदि हम फूल देखते हैं तो सारभूत के लिये चाहे फूल देखें चाहे काँटा दृष्टि तो सारभूत ही देखती है। इसीलिये जो लोग सारभूत नहीं देखते केवल फूल और काँटे देखने में ही अपना समय निकाल देते हैं। वे जिन्दगी को छू भी नहीं पाते उसका उन्हें आभास भी नहीं हो पाता यदि काँटे नहीं होते तो फूल की कोई कीमत नहीं होती अच्छा सुगंधित फूल काँटों की सुरक्षा में ही जन्मता है जिन्दगी भी वहीं जन्मती है जहाँ चारों ओर दुःख खड़ा हो और हम फूलों से खिलखिलाते रहें हौसलों में बुलन्दी जितनी काँटों में आती है उतनी फूलों में नहीं फूलों का संयोग केवल पुण्य का उदय या अच्छा समय ही नहीं तुम्हारी परीक्षा का वक्त है कि फूलों का संयोग होने पर तूने सार (रस) निकाला या नहीं यदि नहीं निकाल पाया तो भविष्य में दुबारा परमात्मा के द्वारा तुम्हें फूलों का संयोग नहीं मिल सकेगा। सुख साधनों को पाना सरल है लेकिन इनका सदुपयोग कर पाना बहुत कठिन है। धन मिलना तो सरल है लेकिन उसका सदुपयोग कर लेना थोड़ा नहीं बहुत कठिन है जब हमारी नजर फूलों से भी प्यार करेगी और काँटों से भी प्यार करेगी जब हमारी नजर फूल और काँटों का भेद समाप्त कर देगी तो हमारी नजर को जिन्दगी की पहली रोशनमयी किरण नजर आ जायेगी। फिर परमात्मा भी नजर आ जायेगा।

मौत को मौत के घाट उतारने का यही तरीका है कि हम न फूलों से प्रेम करें न काँटों से यदि इनमें हर्ष और दुख होगा तो मौत का साया हम अपने ऊपर से नहीं हटा सकते फूल और काँटों में जीने का मतलब है स्वर्ग व नर्क का यहीं पर अनुभव करना। ये स्वर्ग व नर्क मरने पर ही नसीब होंगे और मरना मौत के कारण ही होगा। दुनियाँ में मरना कोई बड़ी बात नहीं जीना बड़ी बात है। यदि जीना है तो जीते हुए का सहारा लो यदि मरना है तो मरते हुए को अपना बनाओ। परमात्मा ही है जो पूर्ण रूपेण जी रहा है इसलिये जीता हुआ है उसने फूल और काँटों को नहीं देखा सारभूत वस्तु, जिन्दगी को देखा है उसी को अनुभव है

इसलिये आज वह परमात्मा है जो सारभूत वस्तु देखते हैं वो जिन्दगी के उपासक हैं।

चाहे फूल हों या काँटे दोनों मेरे ही कृत्य का प्रतीक हैं यदि मेरे ऊपर फूल गिरे तो मेरा ही कृत्य मेरे ऊपर गिरा है। यदि कांटे बरसे तो मेरा ही कृत्य मेरे ऊपर गिर रहा है अच्छे और बुरे कृत्य की पहचान फूल और काँटों से हो जाती है। परमात्मा की याद जितने फूलों में भूलते हैं उतनी काँटों में नहीं भूलते काँटे तो हमेशा परमात्मा की याद दिलाते रहते हैं यदि काँटे न चुभें तो कोई परमात्मा को याद न करे काँटों की कोई कीमत नहीं और फूलों की कीमत चंद क्षणों की है लेकिन फूलों में जो सारभूत इत्र है यदि वह निकाल लिया जाये तो उसकी कीमत बहुत है और कई दिनों तक है। ऐसे ही संयोग की कीमत कुछ क्षण है शरीर किसी भाव में भी न बिकेगा इसे जलाने में प्राप्त हुई ज्ञान की ये अनुभव और ज्ञान ही जिन्दगी है जो शरीर और संयोग से परे है। अच्छे और बुरे से परे हैं जिन्दगी वह इत्र है जो फूल और काँटों से अलग है इत्र तभी मिल सकेगा जब फूल नष्ट होगा यदि हम फूल पकड़े रहे तो इत्र हाथ न लगेगा यदि हम धन सम्पदा को पकड़े रहे तो जिन्दगी कभी भी नसीब न होगी अत: हमें भी अपना जीवन सारभूत बनाने के लिए फूल और काँटों में अच्छा और बुरे में तटस्थ हो जाएँ तभी जिन्दगी का सार मिल सकेगा।

मोह स्वयं के प्रयास से जीता जा सकता है
अन्य के प्रयास से नहीं।

None others but one's own efforts can win delusion.

कानून से बचना सरल है कर्मों से बचना सरल नहीं।

It is easy to escape law, but not ones own deeds.

धर्म खाने वाली दवा है पीने की दवा नहीं।

Religion is a drug not to drink but to chew (taste)

शक्ति ज्ञान के लिए वरदान है, अभिशाप नहीं

ज्ञान की चाह का, ज्ञान की प्यास का कोई अंत नहीं है यदि किसी से कौतूहलवश यह पूछ लें कि यदि तुम्हें कभी ब्रह्मा ज्ञान का वरदान देने के लिए आ जावें और कहें कि माँग ले तुझे कितना ज्ञान चाहिए और साथ में यह कह दें कि अच्छी तरह सोच लो फिर बाद में मत कहना कि हमने कम माँग पाया या हम भूल गये तो शायद वह रात भर जागता रहे फिर भी सबेरे वह यही कहेगा कि हम सोच नहीं पाये और अंत में यदि माँगेगा तो उतना ही माँग सकोगे जितनी चादर है उतनी ही फैला सकोगे और जितनी शक्ति होगी ज्ञान उतना ही होगा उतनी ही चादर बिछाई जा सकेगी ऐसा तो हो सकता है कि हमारे पास शक्ति हो और ज्ञान शक्ति से कम हो लेकिन यह नहीं हो सकता कि शक्ति कम हो और ज्ञान ज्यादा हो। शक्ति से कम ज्ञान होना तो हमारे आलस्य और अरुचि का प्रतीक है और कहीं कहीं अज्ञानता का प्रतीक है। अरहंत भगवान को अनंत ज्ञान है यह तभी हुआ जब अनंत शक्ति प्राप्त हुई अनंत शक्ति के बिना अनंत ज्ञान असंभव है। कम शक्ति में भी अनंत ज्ञान असंभव है। अतः ज्ञान पाने के लिये शक्ति होना जरूरी है। शक्ति ज्ञान के लिए वरदान है।

ज्ञान की धारा पर मानव का पूरा जीवन आधारित होता है क्योंकि ज्ञान ही अंतरंग व्यवहार को पैदा करता है और ज्ञान ही अंतरंग व बहिरंग चारित्र को उत्पन्न करता है। ज्ञान ही एक ऐसा विशेष गुण है जो सभी गुणों व अवगुणों को जानता है यदि ज्ञान गुण नहीं होता तो सभी गुणों - दुर्गुणों को कौन जानता। जब ज्ञान गुण प्रकट नहीं होता तब शक्ति का बहाव अपनी ऊर्जा का बहाव गलत दिशा की ओर बहने लगता जैसे ही ऊर्जा सही दिशा की ओर बहती है तो एक विशेष घटना घटती है कि ऊर्जा बहती तो कम है और एकत्रित ज्यादा होती है इससे धीरे - धीरे ऊर्जा संचय होने लगती है यही ऊर्जा अधिक होने पर ज्ञान बढ़ने लगता है और एक समय आता है कि जब ज्ञान की पूर्णता हो जाती है और शक्ति अनंत हो जाती है। शक्ति ज्ञानवृद्धि का आधार है और शक्ति की आधारशिला निस्पृहता है और निस्पृहता-निर्मोहता की आधारशिला भेद विज्ञान है।

यदि कोई भी श्रावक या श्रमण अपने छः कर्तव्यों को करता है कोई पूजन करता है, कोई सामायिक करता है, कोई त्याग करता है, कोई दान देता है, कोई तीर्थक्षेत्र की वंदना करता है, कोई संयम धारण करता है, कोई संयमियों की सेवा करता है, कोई भगवान की सेवा करता है ये सब ऊर्जा भरने

के ही आयाम हैं। ऊर्जा पाने के लिए व्यक्ति दिन-रात बे-हताशा दौड़ रहा है कि मुझमें इतनी ऊर्जा भर जाये कि मुझसे ज्यादा ऊर्जावान् कोई न हो। लेकिन आज के भौतिक वादी व्यक्ति को शायद ये पता नहीं कि ऊर्जा अपने अन्दर ठहरने से भरती है और बाहर में दौड़ लगाने से घटती है। अतः ज्ञान न शास्त्रों में है, न और कहीं, ज्ञान तो हमारे अंदर है और प्रकट उतना ही होगा जितने हम ऊर्जा से भर जायेंगे। ऊर्जा हमारे अंदर ही भरी है और आवरण की एक पर्त चढ़ी है उस आवरण का नाम है मोह। इस मोह के कारण ही ज्ञान का भण्डार, शक्ति का पिण्ड समाप्त होता है। मोह के कारण ही व्यक्ति दर-दर की ठोकरें खाता फिरता है। इसलिए निर्मोहता ज्ञान बढ़ाने के लिए वरदान है वही निर्मोहता हमें जीवन में लाना चाहिए। जिससे हमारी शक्तियों का विकास हो और हम शक्तिवान् हों तभी हमारा जीवन सफल हो सकता है।

रात को सोना, मृत्यु का पूर्वाभ्यास है।

Sleeping at night is just a rehersal of death

प्रमादी कभी जीता नहीं अप्रमादी कभी मरता नहीं।

Lazyness never live while alert never dies.

जीवन सत्यं शिव सुंदर है।

Life is truth, salvation and beautiful.

चिंता है सुलगती हुई चिता

आज किसी भी प्राणी को देखकर या उससे बात करके उसके चेहरे से चिंताओं के बिंदुओं को स्पष्टतः देखा जा सकता है चिंता से रहित प्राणी दुनियाँ में देखना बहुत मुश्किल दिखाई देता है। चिंता कुछ और नहीं मन की वासनिक आग है जो न केवल मन को ही कमजोर करती है इतना भारी तन भी वह कमजोर करती है। चिंताशील व्यक्ति घी पीकर भी कमजोर रहता है, मस्त व्यक्ति सूखी रोटी खाकर भी तंदुरुस्त, मस्त रहता है। चिंताशील व्यक्ति को कितने रोग हो सकते हैं यह गिनना बहुत मुश्किल है। वह तो रोगी ही है क्योंकि शरीर में 90 प्रतिशत रोग तो मानसिक चिंता से ही होते हैं। चिंता एक तरह की लकड़ी में लगने वाली घुन जैसी है, चिंता जीवन के लिए मिट्टी के तेल की तरह है जो पीने में जहर है और उगलने में आग है। चिंताशील व्यक्ति की याददाश्त निरंतर क्षीण होती चली जाती है, पूर्ण स्मरण शक्ति भी नष्ट होती चली जाती है, चिंताशील व्यक्ति का किसी भी काम में चित्त नहीं लगता है, चिंता ही चित्त को जलाकर राख कर देती है। कहा भी है ''चिंता चिता समान है, बिन्दु मात्र का भेद। चिता दहे निर्जीव को, चिंता जीव समेत।'' चिंता के द्वारा ही परमात्मा चित्त से उठकर भाग जाता है, चिंता इतने बुरे इंसान में होती है जिसके पास परमात्मा नहीं बैठ सकता। चिंता ही व्यक्ति की नींद को हराम कर देती है। यदि किसी इंसां के पास चिंता न हो तो उसके चित्त में परमात्मा खुद आकर के बैठ जाये, परमात्मा ऐसे चित्त की तलाश में रहता है और कभी - कभी ऐसा चित्त संतों के पास मिलने पर परमात्मा वहाँ बैठ जाता है और उनके मुख से परमात्मा की वाणी कभी - कभी निकल पड़ती है।

परमात्मा से यदि इंसान को जुदा करने वाला कोई है तो वासनाओं की चिंता ही है। हर आदमी के घर में किसी न किसी चिंता की त्रासदी है ही। घर में चिंता होना स्वाभाविक है, या यों कहें घर की चिंता की मूल जड़ वासना है। इच्छाओं वासनाओं की जड़ों पर चिंता का वृक्ष फलता - फूलता है और चिंतन वह तेजाब है जो चिंता को भस्म करके सुखाकर नष्ट कर देता है। आज देखा जाये तो चिंता के बल पर डाक्टरों के क्लीनिक फलते-फूलते नजर आ रहे हैं लेकिन ध्यान देने योग्य बात यह है कि चिंता को सभी लोग धन आदि वैभव से मिटाना चाहते हैं जबकि चिंता की दवा धार्मिक - आत्मिक चिंतन है और कुछ नहीं। चिंता कोई एक तरह की नहीं चिंता कई तरह की हो सकती है लेकिन यह सही है कि चिंता करने वाला मन एक ही हो सकता है। एक मन अनेक चिंताओं को करने की क्षमता रखता है और एक वही मन अनेक चिंताओं की

चिंतन के द्वारा चिता बनाने की भी क्षमता रखता है।

जीवन में हर आदमी के एक भी क्षण ऐसा नहीं है जिसमें उसकी मृत्यु नहीं हो रही है। प्रतिक्षण हर इंसान मौत के नजदीक होता जा रहा है। यह भी सही है कि किसी भी इंसान के पास अभी तक ऐसा यंत्र निर्मित नहीं हो सका जो मृत्यु से बचा सके अथवा मृत्यु के बाद का कोई परिणाम घटित कर सके। आप जीवन चिंताशील बनाकर जिओ या चिंतामुक्त (चिंतनयुक्त) होकर जिओ जीवन का गुजरना अवश्यम्भावी है यदि हम मर-मरके जिये तो भी मरना पड़ेगा यदि हम हँस - हँसकर जिये तो भी मरना पड़ेगा। अमर कोई भी नहीं रह सकेगा। घुट - घुटके मरने से अच्छा है जीवन में हँस-हँसके मरें। यदि हँसके मरते हैं तो चिंताएँ चिंतन बनती हैं। यदि रो - रोकर मरते हैं तो चिंतन चिंता बन जाता है। चिंता हमेशा पर वस्तु के प्रति होती है चिंता हमेशा उसी वस्तु में होगी जो मरने के बाद हमारे साथ नहीं जाती है और चिंतन हमें अपनी चिंता में होता है। चिंता हमें पराई वस्तु में होती है। ज़िंदगी में जिस विचार से शांति - सुख - सद्व्यवहार - प्रेम - मित्रता - उदारता उत्पन्न हो वह सभी चिंतन है। इसके विपरीत होने वाले विचार को चिंता कहते हैं। चिंताशील व्यक्ति को कोई भी पसंद नहीं करता कोई भी ऐसे व्यक्ति के पास बैठना पसंद नहीं करता लेकिन चिंतनशील के पास बैठने के लिए सभी लोग लालायित रहते हैं। अतः चिंता वह आग है जो जीते जी जलाती है। ऐसी चिंता को धार्मिक विचारों से चिंतन बनाकर हम सभी को प्रसन्नता से जीना चाहिए तभी हम मानव जीवन को सफल करने में कामयाबी हासिल कर सकते हैं और दुख को सुख में बदल सकते हैं।

बदलने वाली वस्तु से सुख नहीं हो सकता है।

Happiness can't be achieved from the changing things.

मन मन्दिर का निर्माण परमात्मा के
सम्मुख होता है।

Erection of soul's temple happens before almighty.

सत्य के बीज में से ज्ञान के फूल खिलेंगे

कौन नहीं चाहता कि मेरे जीवन में ज्ञान के फूल न खिलें ? कौन नहीं चाहता कि मेरे जीवन में ज्ञान के फूलों की महक न महके ? दुनियाँ में हर आदमी की ललक यही है कि मेरे जीवन की बगिया हरी भरी दिखाई दे सभी लोग मेरे बाग में आकर बैठा करें और महक से आनंदित हुआ करें लेकिन ऐसा सोचने से स्वप्न के महल तो खड़े हो जाते हैं लेकिन स्वप्न साकार नहीं हो पाते। यदि हम सोचने के बाद सत्य को स्वीकार कर लें और अपने जीवन में उतार लें तो हमारे अंदर ज्ञान के महकते हुए फूल खिलने लगेंगे। हम सोचते तो हैं 90 प्रतिशत लेकिन करते नहीं है 5 प्रतिशत भी। सत्य को स्वीकारे बिना किसी का भी जीवन गुलशन नहीं बन सका। सत्य का बीज सभी के पास मौजूद है लेकिन बीज अंकुरित उन्हीं का होता है जो बीज में उचित खाद पानी डालते हैं जिनकी प्रज्ञा तीर की तरह नुकीली तलवार की धार की तरह तेज है वे ही सत्यता को अपने जीवन में पैदा कर सकते हैं। ऐसे लोगों ने ही अपने बीज को अंकुरित कर एक वृक्ष का रूप दिया है। आज उन वृक्षों के फलों की आकांक्षा हर कोई करता है ऐसे वृक्ष भगवान राम हैं, भगवान महावीर हैं, भगवान हनुमान हैं।

इन्होंने अपने बीज को वृक्ष बनाकर कई ज्ञान के फूलों से अपने जीवन को महकाया और ऐसी सुवास पैदा कर ली जो अहेतुक है, अकारण है ऐसी सुवास कभी मिटने वाली नहीं है। सत्य के बीज को सर्वप्रथम उस संत को दिखाना जो सत्य से परिचित हो फिर उसके कहे अनुसार चलो जिससे आपका उजड़ा हुआ वीरान खण्डहर गुलशन का रूप ले सके। आज दुनियाँ में ऐसा आदमी न मिलेगा जो सत्य को स्वीकार करे यदि कोई गलत बात कहता है या गलत कार्य करता है तो वह खुद जानता है कि यह गलत है अब करना उसकी मजबूरी भी हो सकती है और गलत को जानकर भी न मानना ऐसा भी हो सकता है। लेकिन आचरण में वही उतारता है जो सत्य पाने के लिए सब कुछ करने को तैयार है क्योंकि सत्य पाने की प्रथम शर्त है सारे असत्य को तिलांजलि देना। सत्य किताबों या उपदेशों में नहीं मिलता, सत्य अनुभव में मिलता है, सत्य जवान से कहने की वस्तु नहीं, सत्य ज़िंदगी जीने की कला है।

सत्य कभी दिखाई नहीं देता जो दिखाई देता है वह वास्तविक सत्य नहीं है। लोक में व्यवहारिक दृष्टि से सत्य कहा जाता है। सत्य सत्ता का पक्षधर नहीं सत्य साकी का पक्षधर है। सत्य पक्षधर नहीं सत्य का साकी है इसलिए साकी का पक्षधर कहा जाता है। सत्य को पाने वाले को बहुमुखी होना

नितान्त आवश्यक है सत्य दिखाने की वस्तु नहीं दिखने वाली वस्तु है। सत्य की महक असत्य की चादर से दाबी नहीं जा सकती। एक बार असत्य भी सत्य की लहर से महक उठता है। एक बार असत्य में भी सत्य का भ्रम हो सकता है लेकिन सत्य में असत्य का भ्रम भी होना कोई बड़ी बात नहीं है, यदि हम अपनी दृष्टि को सत्यता के परिवेश में ले जायें तो क्षितिज पर दूर - दूर तक सत्य ही दिखाई देगा। यदि हम असत्यता के परिवेश में जी रहे हैं तो हमें असत्य भी सत्य नजर आयेगा इससे यह सिद्ध है कि सत्य और असत्य अभी यहीं हमारे सामने हैं लेकिन हमारी दृष्टि जैसी होती है वह सामने वाली वस्तु को वैसी ही बना लेती है। दृष्टि से सत्य - असत्य का निर्धारण है, वस्तु से या व्यवस्था से नहीं अतः हम सभी की दृष्टि ऐसी होनी चाहिए जिसमें सत्य का बीज फलीभूत हो सत्य का बीज ऐसा है कि एक बार फूटा तो वह परमात्मा के अस्तित्व में समावेश करके ही अंतिम रूप लेता है। सत्य पानी की वह बूँद है जो आकाश से गिरने के बाद नदियों में बहती हुई जाती है और अंत में समंदर में समा जाती है। सत्य को जीवन में लाकर अपने जीवन को महकाएँ तभी जीवन सुवासित हो सकता है।

एक नदी के उसी जल में दुबारा उतरना
असम्भव है।

It is impossible to dive in the same water a river twice.

स्वयं की लाश देख लेना मृत्यु का परिचय है।

To see the dead body of self, is the introduction with death.

सफलता साहस की गुलाम है आलस की नहीं।

Success is Slave to courage not to laziness.

मूल से ही ज़िंदगी की भूल मिट सकती है

पैदा होने से आज तक की ज़िंदगी तक हम वस्तुओं के बाह्य स्वरूप से परिचित हुए हैं। बाहर के रूप में असार ही असार है जब कभी हम भीतर झाँककर देखते हैं तो मूल दिखाई देने लगता है हम हमेशा आकार पर ही दृष्टिपात करते हैं इस कारण जीवन का मूल जो अनाकार रूप है नजर नहीं आता है। वास्तविक ज्ञान हुए बिना हमारी दृष्टि में दिव्यता पैदा नहीं हो सकती। परमात्मा में और पामर में पवित्र - अपवित्र दृष्टि से ही अंतर होता है। जब तक हम बाहर की ओर दौड़ते हैं तब तक भटकन और भूल ही हाथ लगती है। बाहर की भूल को बाहर से मिटाना असंभव है क्योंकि किरणें सूरज से ही प्रकट होती हैं। बाहर की भूल अंतरंग के मूल से ही प्रकट होती है जो अंतरंग से स्वयं को अथवा अपने परमात्मा को भूल बैठता है उसके अंदर भूलों का जखीरा एकत्रित हो जाता है। लेकिन जो अंतरंग से भोला होता है वह सारी भूलों का पता लगने पर हृदय से हटाता चला जाता है। मूल के बिना भूल को मिटाना नामुमकिन ही नहीं पूर्णतः असंभव है।

जीवन बादलों में चमकने वाली बिजली के समान क्षणिक है और इन्द्रियों के विषय इन्द्रधनुष के समान हैं अभी हैं और अभी नहीं। यदि हम विषयों की सुरक्षा के लिए पूरा जीवन व्यतीत कर दें तो कोई लाभ नहीं जीवन ही नष्ट हो जायेगा। शाश्वत वही है जो केवल अनुभव रूप है और इन दो आँखों से दिखाई नहीं देता है।

दिव्य दृष्टि में ध्रुव ही दिखाई देता है सत्य ही दिखाई देता है लेकिन ध्रुव पाना है तो शाश्वत पर निरंतर नजर रखना जरूरी है। असत्य से हम बहुत परिचित हो चुके हैं और भूल में कई बार मर चुके हैं अब हमें सत्य से परिचित होकर तथ्य को पाकर शाश्वत होना चाहिए तभी हम सभी का जीवन सफल हो सकता है। ऐसा ही क्षमाशील व्यक्ति होता है। क्षमाशील व्यक्ति वही हो सकता है जो किसी से भी किसी भी प्रकार की आकांक्षा न रखे अपेक्षा की उपेक्षा में ही क्रोध जनमता है। हम किसी से सम्मान की अपेक्षा रखें और वह सम्मान हमें न मिल पाये तो क्रोध जरूर आता है। क्रोध से हृदय कंपन तीव्र हो जाता है। जिससे रक्त गति तीव्र हो जाती है, आँखें खूनी लाल हो जाती हैं। इन्द्रियाँ उच्छृंखल हो जाती हैं जो फिर किसी का भी भला बुरा नहीं देखतीं। क्रोध के आवेश में व्यक्ति आपस में कत्ल कर देते हैं, क्रोध के वेग में लोग अन्य लोगों की ज़िंदगी को खिलौना बना देते हैं।

वस्तु को ही नहीं उसकी वास्तविकता भी जानो

दुनियाँ में दो तरह के ज्ञान प्रचलित हैं एक सच्चा एक झूठा। संसार में दो तरह की मान्यताएँ हैं एक ऊपर उठाने वाली एक नीचे गिराने वाली, जहान में दो तरह की आँखें हैं एक वह जिसमें वस्तु दिखती है। एक वह जिसमें वास्तविकता दिखती है। पत्थर को, मिट्टी को, स्कंध या स्थूल रूप में ये पथरीली आँखें देख लेती हैं लेकिन मिट्टी के मूल तत्त्व को देखने के लिए पत्थर की आँख नहीं परमात्मा की दिव्य आँख चाहिए। परमात्मा की अनुमति के बिना हम किसी भी वस्तु की वास्तविकता को नहीं जान सकते हैं वास्तव में वस्तु की वास्तविकता का ज्ञान ही जीवन को उन्नतिशील बनाता है। वस्तु को पाकर हम पामर भी बन जाते हैं लेकिन वस्तु के परम तत्त्व को पाकर हम परमेश्वर की ओर उठने लगते हैं। अन्तर्दृष्टि से हमें सूक्ष्म ही दिखाई नहीं देता बल्कि अमूर्तिक तत्त्व भी स्पष्ट दिखाई देता है। ज्ञान की आँख कलात्मक है वस्तु की आँख कथनात्मक है, वस्तु को देखने में एकान्त है जबकि वस्तु की वास्तविकता में अनेकांत झलकता है। परमाणु वास्तविक है यदि हम उसे देखें तो हर वस्तु में वह दिखाई पड़ेगा। यदि वस्तु देखें तो दूध में रस नहीं दिखेगा ठीक वैसे ही यदि हम आत्मा देखें तो सभी जीवों में दिखेगी। लेकिन जब मनुष्य देखें तो अन्य में नहीं दिखाई देगा। वास्तविकता जानना बहुत ही जरूरी है।

तथ्य के तत्त्व को बताने के लिए हमें सारभूत अवस्था को जानना बहुत आवश्यक है वस्तु में यदि कीमत होती है तो वास्तविकता की ही होती है। दूध में कीमत घी की ही है, संतरे में कीमत उसके रस की ही है छिलके की नहीं। आदमी में कीमत आत्मा की है शरीर उससे मिला हुआ है इसलिए बाह्य दृष्टि में हमें शारीरिक कीमत लगती है हम किसी को अच्छा बुरा कहते हैं यह जीव के ही राग द्वेष परिणाम हैं। सत्यता को पाने के लिए हमें उन संतों के चरणों में जाकर अनुनय विनय करनी पड़ेगी जिन संतो ने उस सत्य को अनुभूत करके आत्मसात् कर लिया है। मंदिर में परमात्मा को देखने के लिए उसकी आराधना करने के लिए हम इसलिए जाते हैं कि वह सत्य हमें भी अभिभूत हो सके जिसे परमात्मा ने परम साधना के बल पर प्राप्त किया है। अतः हम सभी ऐसा ज्ञान पैदा करें जिसमें सच्चा स्वरूप जल में चंद्रमा की भाँति स्पष्ट दिखाई दे तभी इस मानव जीवन की सफलता को प्राप्त कर अपना जीवन धन्य बना सकते हैं।

नज़रिया से नज़ारा अच्छा बुरा बनता है

दुनियाँ में नज़ारे ही नज़ारे हैं। हम सुख के नज़ारों में से दुख ढूँढ़ लेते हैं लेकिन दुख के नज़ारों में से सुख छू नहीं पाते बल्कि अपना सुख ही गँवा देते हैं। सुख के नजारों से सुख ढूँढ़ना कोई होशियारी या बहादुरी नहीं लेकिन दुख के नजारों में से सुख ढूँढ़ना बहादुरी ही नहीं महानता है। हमारे अंतस् के नजरिये से बाहर का नजारा निर्मित होता है नजारे की नज़ाकत हमारे दृष्टिकोण से ही बनती है। हमारा नजरिया यदि गुणों को देखने का है तो सामने वाले व्यक्ति के 50 अवगुण हमें दिखाई नहीं देंगे पर 20 गुण बहुत अच्छी तरह दिखाई देंगे यदि किसी में अवगुण देखने का नज़रिया है तो हमें 90 गुण नहीं दिख पायेंगे 10 अवगुण अधिक दिखाई देंगे। यदि एक ब्लेकबोर्ड पर एक बिंदु रखा है तो बिंदु देखने पर हमें बोर्ड दिखाई नहीं देगा और बोर्ड देखने पर हमें बिन्दु नहीं दिखता है। देखने का नजरिया हमें स्वयं ही पैदा करना पड़ता है, वस्तु प्रकट होती है नजरिया बनाने के लिये अंतस् और बाहर की नजर काम की होती है यदि नजरिया में अच्छे – बुरे का विकल्प न हो तो वह व्यक्ति कोई महानता को प्रकट करने वाला होता। अतः नजरिया से ही अच्छा बुरा भाव निर्मित होता है।

व्यक्ति का विकास और ह्रास उसके नजरिये पर निर्भर करता है समदृष्टि बनाना तो बहुत कठिन है लेकिन अच्छी दृष्टि बनाना कठिन नहीं है। अच्छी नजर के लिए अच्छे व्यक्तियों की संगति करना आवश्यक है अच्छी संगति और अच्छे साहित्य से ही हमारा नजरिया निर्णय करने में सक्षम हो जाता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में कार्यों के प्रति निर्णय करने में योग्यता हासिल कर लेते हैं वे शीघ्र ही योग्य होकर विकास करते हुए सफलता हासिल करते हैं।

मंदिर में जाकर पाषाण की प्रतिमा में परमात्मा के स्वरूप को लखना नजरिया का ही खेल है। कोई ज़िन्दगी भर परमात्मा की मूर्ति को रगड़ता रहता है फिर नजरिया ठीक न होने के कारण परमात्मा को समझ ही नहीं पाता, नजरिया ठीक है तो हर प्राणी में परमात्मा नजर आएगा। कबीर और महावीर राम और कृष्ण जैसी नजर में तासीर हो जाये तो सारा शहर खुद ब खुद भगवान हो जाये। हम परमात्मा की मूरत में तभी भगवान देख सकेंगे जब हर प्राणी में ही हमें भगवान दिखाई देने लगे। अतः हमारा नजरिया ही नजारे को अच्छा और बुरा बनाता है। हम सभी नजरिये से खुदा की नजर जैसा नज़ारा बनायें तभी ये जीवन सफल हो सकता है।

इच्छाओं से गर्त, दीक्षा से स्वर्ग निश्चित्

दुनियाँ किसी भी व्यक्ति को न गर्त में पटकती है और न ही स्वर्ग में उछालती है। प्राणी स्वयं ही गर्त और स्वर्ग अपने भावों से निर्मित करता है दुनियाँ में इच्छा एक इतनी वजनदार वस्तु है कि जिसके भार से व्यक्ति सबसे नीचे गर्त तक पहुँच जाता है और आश्चर्य यह है कि हम सभी उन इच्छाओं के भूत से अतिग्रस्त हैं। इच्छाएँ भले ही अदृश्य हैं लेकिन उनका बोझ इतना है कि कभी - कभी ज़िन्दगी भी बोझिल महसूस होने लगती है और इच्छापूर्ति न होने पर मानव आत्महत्या और हत्या तक के विचार बना लेता है। ऐसा 30 वर्ष का व्यक्ति ढूँढ़ना मुश्किल है जिसके मन में बोझ न हो और उसने स्वयं आत्महत्या का विचार न किया हो। इच्छायें ही संसार को अन्तिम रूप नहीं देने देतीं इच्छायें मानवता का खून खच्चर करके रख देती हैं लेकिन दीक्षा मानव को दिव्यता प्राप्त करा कर देव बना देती है। दीक्षा वहीं है जहाँ इच्छायें नष्ट हो जायें दीक्षा के बिना इच्छाओं का अन्त करना पूर्णत असम्भव है।

इच्छाओं का बीज है अज्ञान दशा और अज्ञान दशा की मूल जड़ है अनुभव हीन ज़िन्दगी। दीक्षा का बीज है ज्ञान दशा होना ज्ञान दशा की मूल जड़ है अनुभवी ज़िन्दगी। अनुभव के बिना त्याग करना भविष्य में इच्छाओं की उपज का कारण है। ज्ञान का अनुभव से ठीक वैसा ही संबंध है जैसा अग्नि से उष्णता का है जिसे कभी अलग-अलग नहीं किया जा सकता अनुभवी ही धर्म के पुजारी बनते हैं और पुजारी ही पूज्य बनकर परमात्मा बनते हैं। यदि अनुभवी न होंगे तो भगवान न होंगे एक शेर में लिखा है -

''जहन्नुम है खुला ज़न्नत के दर खुलवाये जाते हैं
कि जन्नत में पुजारी मज़हबी बुलबाये जाते हैं।।''

गुणात्मक विचारों को भावना और गर्तात्मक विचारों को इच्छायें कहा जाता है। गुणात्मक विचारों में ऐसा रसायन उत्पन्न होता है जिससे आत्मा में शुद्धता होती चली जाती है। गुणात्मक विचार फिटकरी की तरह हैं जो गन्दे जल को साफ कर देती है इच्छायें ऐसा कीचड़ है जिसमें आदमी अपने आपको कमजोर और मलीन महसूस करता है। इच्छाओं के कारण ज़िन्दगी घुटन बन जाती है। जितनी इच्छायें हैं उतना ही संसार निर्मित होता है अतः हम सभी इच्छाओं से निकलकर दीक्षा में प्रवेश करें तभी हम सभी का जीवन मंगलमय होता हुआ सफलता को प्राप्त कर सकता है।

सच्चे ज्ञान से ही जीवन महकेगा

जीवन में बाहर से शब्दों का ज्ञान एकत्रित करके अपने आपको एक अच्छे व सच्चे ज्ञानी समझना सरल है लेकिन शब्दों की जानकारी पाकर उसे आत्मसात् करके वास्तविक अनुभूतियों से गुजरना बहुत ही कठिन है। अनुभवी व्यक्ति का जीवन बहुत ही प्रशस्त होता है। अनुभव की खाद से ही जीवन के पेड़ पर खुश्बू भरे फूल लगते हैं और महक बिखेरते हैं। शब्दों के जाल से फूल नहीं लगते शब्दों के जाल मात्र जीवन की जमीन को उपजाऊ बनाने में सहायता प्रदान करते हैं। जीवन में सच्चा ज्ञान तभी हो सकता है जब सच्चे शब्द मिलें सच्चे ज्ञानी के अनुभव मिलें विलक्षण प्रतिभा महानता के सामने ही उद्घटित होती है सच्चे ज्ञान के बिना जीवन महकना असंभव है।

सत्य ज्ञान की उपलब्धि होने पर हमारे अन्दर कई परिवर्तन हो जाते हैं। हमेशा प्रसन्न रहना हमारी प्रवृत्ति हो जाती है। संसार एक नाटक चक्र की तरह प्रतीत होता है। सांसारिक सुखों की चाह में लोगों का दौड़ना पागलपन सा लगने लगता है। ऐसे दुखी लोगों को देखकर प्रकृति का चक्र गतिमान दिखाई देता है वह अपने और दूसरों को दृष्टा की भाँति देखने लगता है वस्तुओं में वह राग द्वेष नहीं करता है अपना पराया क्या है वह जानने लगता है। अतः हम सभी को अपने जीवन को महकाने के लिये सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। और सत्य ज्ञान को समझ कर प्राप्त कर जीवन को सुन्दर बनाकर, सफल बनाना चाहिए।

अनुभव वस्तु का निचोड़ नहीं तर्कों का अन्तिम पड़ाव है। अनुभव की धरा पर ही विकल्प शांत हो पाते हैं। अनुभव के पूर्व ज्ञान में कल्लोलता उठती ही रहती है। जीवन का सार ही अनुभव है। अनुभवी को शब्द जाल फँसा नहीं सकते। शब्दों की जानकारी बाहर का आलम्बन है लेकिन सत्यता की उद्घोषणा अन्तस् से ही प्रस्फुटित होगी। कई शास्त्रों का पढ़ने का अन्तिम महत्त्व यही है कि उसे आत्मसात् करके अपना बना लिया जाये। किसी भी शब्द पर मालकियत करना है तो अनुभव से ही होगी। शब्द की साकार अवस्था सत्यज्ञान से ही है और सत्य ज्ञान से ही जीवन महकता है।

हमारा हृदय बाँटने वाली वस्तु से भरता है

हर आदमी इस दौड़ती दुनियाँ में अपने अन्दर सबकुछ भरने के लिये तैयार बैठा है उसकी सुबह से शाम तक की दौड़ खुद को भरने की ही है पूर्णतः प्राप्त करने की है। लेकिन हताश तब दिखता है जब ज़िन्दगी भर की दौड़ में हृदय का भराव एक इंच भी नहीं हो पाता खाली का खाली ही रह जाता है। वास्तविकता में इंसान जब तक भरेगा नहीं तब तक भगवान की ओर कदम बढ़ने की कोई गुंजाइश नहीं है परमात्मा पूर्णतः को उपलब्ध है यदि हम उसकी ओर दृष्टि करके कोई कार्य करें तो निश्चित ही हमारे हृदय का भराव होता है। जिसको बाँटने पर परमात्मा प्रसन्न होता है उससे हमारा हृदय भरता है। हृदय भरेगा ज्ञान से, शक्ति से, सुख से और शांति से यदि हमने दूसरों को जो बाँटा उससे परमात्मा नाराज हुआ तो हमारा हृदय फूलों से नहीं काँटों से भरेगा और दुख, अशांति, कमजोरी, अज्ञान इस जीवन के दस्तूर बन जायेंगे। हृदय उसी से भरता है जो हम बाँटते हैं।

दुनियाँ में हमारी सच्ची वस्तु वही है जो देने पर बढ़ती हो जो देने पर घटने लगे वह हमारी वस्तु नहीं बल्कि हमारे द्वारा उपार्जित कर्म का उपहार है। ज्ञान हम किसी को बाँटते हैं तो हमारा ज्ञान बढ़ता है, सुख किसी को देते हैं तो हमारा सुख बढ़ता है यदि हम दुख देते हैं तो हमें दुख बढ़ता है किसी को पीड़ा देते हैं तो मेरी पीड़ायें स्वतः ही बढ़ जातीं हैं। हम सभी अपना-अपना हृदय अपना-अपना सोच जान सकते हैं अपने हृदय में जो भराव है उससे पता लग जायेगा कि हमने अपने पूर्व जीवन में क्या क्या बाँटा है। इसी तरह हम दूसरों को भी बहुत ही अच्छी तरह बहुत ही सरलता से समझ सकते हैं। अतः हम सभी दूसरों को हमेशा अच्छा-अच्छा ही बाँटें जिससे हमारा हृदय फूलों से भरकर एक महकता हुआ बाग बन सके। यही समय और जीवन की चाहत है। इसी से हमारा भविष्य उज्ज्वल और जीवन सफल हो सकता है।

मंगलमयी प्रभात की प्रथम किरण गुरु समर्पण से प्रारम्भ होती है।

The First ray of auspicious morning starts with the assignment to preceptor.

पीड़ा देने पर तुम्हें पेड़ा नहीं मिलेंगे

हम दुनियाँ में सभी के प्रति प्रेम करें तो सारे लोग हमें स्वतः ही प्रेम कर उठेगें यदि हम सबसे घृणा कर उठें तो सारे लोग हमसे ही घृणा करने लगेंगे। ये दुनियाँ आइने की तरह है यहाँ हम जैसा चेहरा अपना अभिव्यक्त करते हैं आइना हमें प्रतिफल में वैसा ही चेहरा लौटा देता है। दुनियाँ और आइना जैसा सत्य दर्पण ढूँढ़ना बहुत ही मुश्किल है। एक गेंद को जितनी तेजी से दीवाल की ओर हम फेंकते हैं गेंद उतनी ही तेजी से हमारी ओर वापिस लौटकर आती है। ठीक इसी तरह हम दूसरों की ओर जो कुछ भी प्रेषण करते हैं वह ही हमारी ओर आकर गिरता है। हमने किसी को पीड़ा दी है तो उससे अर्जित कर्म हमें ही पीड़ादायी बन जाता है। यदि हमने किसी रोते को हँसाया है उसे सुख शांति प्रदान की है तो हमें भी भविष्य में ये सब मिलेगा पीड़ा देने पर हमें पेड़ा मिल जायें यह नामुमकिन ही नहीं पूर्णत असंभव है।

पुरुष और प्रकृति में कोई अन्तर नहीं है कभी पुरुष प्रकृति पर आक्रमण कर देता है तो कभी प्रकृति भी पुरुष पर संहार करके अपना बदला चुका देती है। यदि पुरुष प्रकृति के अनुसार ही चले तो प्रकृति उसकी राहों में फूल ही फूल बिछा देती है। प्रकृति चाहती है कि पुरुष मेरा सम्मान करे लेकिन पुरुष अतिक्रमण पर उतर आता है तब भी प्रकृति हमेशा न्यायशील ही रहती है। न्यायशील पुरुष को प्रकृति परमात्मा बनने से नहीं रोकती है। प्रकृति और परमात्मा भी समकक्ष हैं। अतः हम सभी प्रेम बाँटे, मित्रता बाँटे, एकता बाँटें, सुख बाँटे तभी हमें ये सभी मिल सकता है। पीड़ा देंगे तो पीड़ा और पेड़ा देंगें तो पेड़ा ही मिलेंगें अन्य कुछ नहीं।

गुरु शरण अंधों की आँखों का आपरेशन
थियेटर है।

The Shelter of preceptor is an operation theatre of eyes for blinds.

कल्याण भाव से रहित परिश्रम ऊधम है।

Uproar without welfore feeling is mischief.

खाक में मिलने वाले चिराग–जलते नहीं, धधकते हैं

मिट्टी के दिये खुदा ने सभी को दिये मगर कोई उन दियों में अँधेरा लिये तो कोई उजाला किये। चिराग सब ले करके आये हैं कोई चिराग में राग का अँधेरा भर रहा है, कोई चिराग में विराग का उजाला भर रहा है। अँधेरा और उजाला दोनों ही इस धरती पर चिरकाल से विद्यमान हैं। राग और विराग दोनों ही इस जमीं पर चिरकाल से हैं। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम राग से चिराग भरें या विराग से। अँधेरों से भरें या उजालों से। हम भरने के लिये पूर्णतः स्वतंत्र हैं न समाज की हमारे ऊपर कोई बंदिश है, न सरकार की, न हमारे परिवार वालों की ही कोई बंदिश है। लेकिन यह बात पूर्णतः सत्य है कि जो चिराग परमात्मा की शमां से रौशन होता है उस चिराग को दुनियाँ की कोई भी आँधी तूफाँ उसे बुझा नहीं सकती। लेकिन जो चिराग खुदा की शमां से न जल सका उससे कह दो कि वह चिराग जहान की भट्टी में धधकेगा और दुनियाँ की खाक में मिल जायेगा।

मानव के दिव्य रूप को दुनियाँ की खाक में मिलाना नपुंसकों का काम है और कमजोर स्त्रियों के लक्षण हैं लेकिन मानव की खाक में से रूह को प्राप्त कर लेना हिम्मतवान् इंसानों के काम हैं। हिम्मतवान् इंसान खुद जमीं पर रौशन होते हैं और कई लोगों को रौशन करते हैं। हिम्मतवान् इंसानों पर खुदा का प्यार बरसता रहता है और नपुंसकों से परमात्मा कुपित रहता है। जलते हुए चिराग को सारी दुनियाँ पसंद करती है यहाँ तक कि एक छोटा बालक भी ज्योति को अपने हाथ में कैद करना चाहता है, उसे पकड़ने दौड़ता है लेकिन बुझे चिराग को कचड़े में फेंक दिया जाता है या राह में राहगीरों की ठोकर खाने के लिए गलियों में फेंक दिया जाता है।

परमात्मा के चिराग की रौशनी में हमें सारी दुनियाँ दिखाई दे सकती है क्योंकि परमात्मा को अपनी रौशनी में सब कुछ नजर आता है। एक परमात्मा के अलावा सारी दुनियाँ को कोई भी नहीं देख सकता है। यहाँ जो भी खाक में मिलता है उसे प्रकृति फिर खाक में मिलाने के लिए बुझा चिराग देती है। यदि उसे फिर नहीं जला पाते तो प्रकृति फिर खाक में मिला देती है। इंसान को खाक में मिलाकर ध्वस्त करने का क्रम प्रकृति का तब तक चलता रहेगा जब तक कि कोई इंसान अपना चिराग परमात्मा की रौशनी से रोशन न कर लेगा। अतः हम सभी अपने चिराग को नापाक बनाकर खाक में न मिलाएँ, चिराग को पाक बनाकर खुदा से मिलाएँ तभी मानव जीवन सफल होता हुआ उज्ज्वल हो सकता है।

संत के चरण से घर और आचरण से जीवन पवित्रा

हर आदमी की चाहत होती है कि हमारा घर पवित्र हो जाए घर की पवित्रता न पुत्र से है, न पुत्री से, न दामाद से है, न दाम से, घर की पवित्रता तो संतों के चरण पड़ने से है। संत वही होता है जिसने अपना जीवन परमात्मा के चरणों में अर्पित कर दिया है और सांसारिक समस्त इच्छाएँ ज्ञान की भट्टी में झोंक दी हैं। संत वही है जिसका कोई घर द्वार नहीं है लेकिन जिसके लिए सभी घरों के द्वार खुले हुए हैं। संत वही है जो पेट भरने के लिए नहीं जीता है बल्कि जिसे वह मिल जाए तो घर मालिक अपने आपको बहुत ही अहोभाग्य मानता है। लेकिन संतों को बुलाने के लिए हमें खुद ही थोड़ा संत बनना पड़ता है विनम्रता और विनय के द्वारा ही हम संत को भोजन के लिए घर पर बुला सकते हैं संत केवल अपने स्वार्थ के कारण ही दूसरों के घर पर जाते हैं जिससे संतों के चरण घर पर पड़ जाते हैं और घर पवित्र हो जाते हैं। और जीवन उन संतों के आचरण को जीवन में धारण करने से पवित्र होता है।

संतों के चरण घरों में पड़ने से संतों के संस्कारों से श्रावकों का जीवन पावन होता है सभी घरों में संत नहीं जाते लेकिन ये बात सत्य है कि जो व्यक्ति संतों को निर्मल परिणामों से आहार दे लेता है वह कभी भी दुर्गति का पात्र नहीं होता। आहारदान देते समय श्रावक में अहंकार आदि न होकर बहुत ही प्रेम और निर्मल भावना होती है जिससे वह बहुत ही पुण्यार्जन करता है पूजन करने से केवल स्वर्ग मिलता है संयम धारण करने से मोक्ष मिलता है असंयम से दुर्गति आदि मिलती है लेकिन आहारदान से भोग भूमि और स्वर्ग दोनों मिलते हैं यह विशेषता संत चरण की है।

सन्त कहते हैं कि तुम भविष्य में वही पाओगे जो संत के हाथ में दोगे। यदि तुमने एक ग्रास भी संत को दिया तो तुमने लाखों ग्रास पर अपना नाम अंकित कर लिया है कहा भी है –

"दाने – दाने पर लिखा है खाने वाले ने नाम" देने में आनन्द है लेने में नहीं। देना दिव्यता है और देने वाला देवता है। देना अपने द्रव्य को दूना करना है। लेने से अपना धन कभी नहीं बढ़ता, देना स्वर्ग निर्मित करना है लेना नरक का उपार्जन है। अतः हम सभी अपना घर पवित्र करने के लिए संतों से प्रेम करें और जीवन को आचरित करें तभी हमारा जीवन सफल होकर आचरणवान हो सकता है।

वेदन और वेदना संवेदनशील बनाती है

मानव की मानवता संवेदना से अभिव्यक्त होती है संवेदन शून्य मानव को मानव कहना मानव के मान को लज्जित करना है। संवेदना सभी के दिल में हुआ करती है लेकिन लोग केवल अपनी पीड़ा को वास्तविकता से समझने वाले ही संवेदनशील हो सकते हैं। ये संवेदना मानव के अंदर धर्म का अस्तित्व समझने से पैदा होती है। धर्म का बीज इसलिए हर मानव में अंकुरित होना जरुरी है। संवेदनशील होने पर मानव केवल मानव की पीड़ा को संवेदित नहीं करता बल्कि प्राणी मात्र की पीड़ा को हृदय में संवेदन करने की क्षमता रखने वाला हो जाता है। वेदन वह है जो सुख रूप है, वेदना वह है जो दुख रूप है। संवेदना वह है जो वेदन और वेदना का सही रूप है। संवेदनशील ही धार्मिक होता है उसी पर परमात्मा का शुभाशीष बरसता है संवेदनशील से सभी प्राणी खुश रहते हैं।

वेदना वेदन को जन्माती है वेदन ही संवेदन में बदल जाता है, संवेदन समानुभूति में बदल जाता है, समानुभूति ही सहानुभूति ला देती है। सहानुभूति से सुखानुभूति मिलने लगती है संवेदन ही कमजोर लोगो में करुणा के भाव उत्पन्न करा देता है। सच्चा धर्म और सच्ची मानवीयता संवदेना के बिना अनुभव में आना असंभव है। सच्ची वेदना से परिचित होना सरल है लेकिन सच्चे वेदन से वेदित होना कठिन है। वेदन शास्त्र पढ़ने का सार है तो संवेदन, समानुभूति वेदन के परिणाम हैं। वेदन और वास्तविक ज्ञान में कोई अन्तर नहीं है।

हमारी प्रवृत्ति की दौड़ बाहर - बाहर ही रहेगी तो हम कभी वेदन को छू भी नहीं सकते। संवेदन आत्म अनुभवी सूक्ष्म तत्त्व वेत्ता को ही हो सकता है। संवेदन स्वयं में अनुभूत करने के लिए हमारी दृष्टि अदृश्य को भी देख सके ऐसी बनानी पड़ेगी। अदृश्य को देखने वाला ही भविष्य का छिपा दृश्य देख सकता है संवेदनशील परमात्मा को देखने की क्षमता रखता है। इसलिए परमात्मा के दृष्टा समानुभूति से ओत प्रोत सत्यानुभूति में विज्ञ और सहानुभूति में तत्पर रहते हैं। अतः हम सभी को संवेदन की तह पर पहुँचकर वास्तविकता को प्रकट करने का निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिये तभी हमारा जीवन सार्थक हो सकता है।

प्रतिभा की सुन्दरता भक्त के हृदय की स्वच्छता है।

Beauty of idal is Cleanliness of heart of devotee.

सीखना है तो जीना सीखो, मरना नहीं

गहरे समुद्र के पानी में डूबना सरल है लेकिन पानी की सतह को चीरकर उसके ऊपर से जिंदा होकर गुजरना कठिन है। वस्तु को पहाड़ की चोटी से फैंकना सरल है लेकिन एक पचास किलो का पत्थर पर्वत की चोटी पर ले जाना बहुत कठिन है। ऊपर से कुए में पानी फैंकना सरल है लेकिन कुए में से ऊपर पानी खींचने में पसीना बहाना पड़ता है। ठीक इसी तरह दुनियाँ में आकर मरना जितना सरल कुछ भी नहीं- जैसे परीक्षा में भाग लेकर फेल होना बहुत सरल है। मरने के लिए कुछ भी न करो अपने आप ही मर जाओगे। मरना न सीखना पड़ता है न सिखाया जाता है। जीना कला है इसके लिए शिक्षण प्रशिक्षण है, प्रयत्न किया जाता है। जीना सीखने के लिए सभी उत्सुक हैं मरने के लिए कोई नहीं, जीना ही ज़िंदगी है, मरना नहीं।

परमात्मा वही है जो हमेशा जीता रहे। जीने वाला ही ज़िंदगी जीने की कला दिखाकर सिखा सकता है। जीने में आनंद की लहर है मरने में गमों का मातम। मरना तो एक कुत्ता और गधा भी जानता है लेकिन जीना एक इंसान ही जानता है, जीने वाला ही मौत को मार सकता है। मरने वाला खुद मर सकता है लेकिन मौत को नहीं मार सकता है। मौत को मारना सरल भी है कठिन भी है। यदि हम अपने आपमें भूले रहे तो मौत बहुत ही शक्तिवान है और यदि हम वैभव को पाकर उसी में फूले रहे तो मौत हमारा आभूषण बन जाती है।

मानव में बहत्तर कलाएँ और स्त्री में चौंसठ कलाएँ होतीं हैं लेकिन बहत्तर कलाओं में से मुश्किल से आठ दस कलाएँ पूरे जीवन में प्रयोग कर पाता है कई मनुष्य दो-चार ही कर पाते हैं। हम निरंतर प्रयत्नशील रहें और अनुभव के आधार पर हम जीवन को बनायें तो यह सुनिश्चित है कि जीने की कला हमारे अन्दर उद्घटित होगी और हम जीना सीख सकेंगे। यही जीवन का सफलतम् कदम है।

अपना आभामंडल हृदय की परछाईं है मन की नहीं।

Our halo is the shadow of heart not of mind.

क्रोध का जामा नौकर की तरह हो, मालिक सा नहीं

शायद ही कोई आदमी ऐसा हो जिसके ऊपर क्रोध का भूत सवार नहीं हुआ हो और ऐसा भी आदमी ढूँढ़ना मुश्किल होगा जिसने स्वयं ही आत्महत्या के विचार न किये हों ये जीवन उतार-चढ़ाव से भरा हुआ है। क्रोध कर्म की आज्ञा से और हमारी अज्ञानता से होता है हमारी अज्ञानता ही हमें कमजोर बना देती है कभी - कभी व्यक्ति स्वयं को भूलकर क्रोध करने का स्वभाव वाला स्वयं को बताने लग जाता है। जब स्वाभाविक अवस्था क्रोध ले लेता है फिर क्रोध मालिक हो जाता है और हम कर्म की कठपुतली बन जाते हैं और एक दिन ऐसा भी आ जाता है कि क्रोध का नाग हमें डसकर हमारी ही जान ले लेता है। क्रोध में दम नहीं कि वह मुझे दबा सके कर्म में दम नहीं कि वह हमें मूर्च्छित कर सके यदि हमारे अंदर शेर जैसी दहाड़ है तो क्रोध जंगल में आ ही नहीं सकता यदि आ भी गया तो मौत का शिकार अवश्य हो जाएगा क्रोध को हमेशा नौकर की तरह ही समझा जाये जब बुलाया तब आ जाये और जब भगाया तब भाग जाये हमारे अनुसार क्रोध हो, हम क्रोध के अनुसार न हो जाएँ।

व्यापार में मालिक लोग नौकरों को रखते हैं ऐसे ही कई शुभकार्योंमें शक्ति प्रकट करने के लिए स्वाभिमान भी जरूरी है उसमें कभी - कभी क्रोध भी आ सकता है वह सुरक्षात्मक क्रोध सभी के लिए जरूरी है लेकिन जैसे नौकरों को रखकर भी मालिक उन पर कड़ी निगाह भी रखते हैं, और नौकरों को दबाव में रखकर डाँटते भी रहते हैं, यदि मालिक ऐसी शक्ति का प्रयोग करे तो नौकर उन्हें तबाह भी कर देते हैं जिस मालिक ने नौकर को रखा था नौकर उन्हें ही कत्ल करके मार देते हैं ऐसा ही क्रोध है। यदि हम उस पर निगाह न रखें उसे डाँटते न रहें तो यही क्रोध बड़ा रूप लेकर एक दो व्यक्ति की ही जान नहीं लेता खानदान तक तबाह कर देता है।

क्रोध तो नाली का कीचड़ है इसे सिर्फ सुअर ही पसंद कर सकते हैं और कोई नहीं, क्रोधियों का साथ सुअर ही दे सकते हैं शेर नहीं। क्रोध तो सेल्फॉस की गोली है इसे वे ही खरीद सकते हैं और वे ही खा सकते हैं जिन्हें जीने का उल्लास नहीं हैं और मरने को तैयार हैं। सेल्फॉस की गोली तीखी व कड़वी होती है और सत्य भी तीखा व कड़वा होता है असत्य भरी ज़िन्दगी को सत्य ही सुधार सकता है और कड़वा जहर मार सकता है। अतः क्रोध हमारे नौकर की तरह हो और हम मालिक की तरह जियें तभी हम क्रोध पर क्रोध करके उसे नष्ट कर सकते हैं और अपना मालिकपना बता सकते हैं।

मानव वही है जो मानवीयता की कीमत समझे

दुनियाँ में आदमी के चोले को पाकर कोई अपने आपको आदमी कहे तो यह औपचारिकता तो हो सकती है लेकिन वास्तविकता नहीं। धर्म तो वही है जो वास्तविकता को वास्तविकता में कहे। किसी मानव के अंदर खाने के संस्कार हैं, धन संपदा एकत्रित करने के संस्कार हैं, शादी करके बच्चे पैदा करने के विचार व संस्कार हैं, मकान बनाकर उसमें गुजारा करने के संस्कार हैं और स्वयं का तथा अपने बीबी बच्चों का पालन पोषण करने का संस्कार हैं, तो यह संस्कार तो एक जानवर में भी पाये जाते हैं। प्रत्येक जानवरों में यह संस्कार हैं तो इन्हें देखकर मानव की पहिचान नहीं होती। जानवरों में एक ऐसा संस्कार भी है जो मानव में नहीं पाया जाता वह बच्चों से अपने बुढ़ापे के गुजारे की कामना न करना। मानव बच्चों को स्वार्थवश ही पालता है, जानवर प्रकृतिवश, यह दोनों में अन्तर है। मानव व पशु में भेद करने के लिए मानव में मानवीयता का होना नितांत आवश्यक है। मानवता धर्म है मानव पर्याय है, पर्याय की पहिचान उसके गुण धर्म के कारण ही होती है पशु में केवल खाना, पीना, रहना, भोगना ही है। अपना कल्याण स्वयं करने का विचार करना, सत्यता की खोज करना, संयम धारण करना ये पशुओं के लक्षण नहीं मानवता की पहिचान है। यदि किसी मानव में मानवता के लक्षण न हों पशुओं के ही हों तो धर्मग्रन्थ ऐसे मानवों को पशु का दर्जा ही देते हैं। इंसान वही है जो इंसानियत की कीमत को समझे।

यदि संसार में सभी प्रणियों पर दृष्टिपात किया जावे तो यह पायेंगे कि मानव सभी जन्तुओं में सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि मानव की खोपड़ी में वह दिव्यशक्ति को प्राप्त करने का सैल्स विद्यमान है जो परमात्मा के पास दिव्यशक्ति है। इसलिए मानव वह है जो परमात्मा को पाने का प्रयास कर सके एवं भविष्य में कभी परमात्मा बनकर अपनी छिपी हुई दिव्यशक्ति को प्रकट कर सके। ईश्वरीय दिव्यसुख को केवल मानव ही पहिचानने में समर्थ है मानव यदि अपनी मानवीयता को समझकर उसे पाने में जुट जाये तो देवता भी उसके जीवन के द्वार पर आकर अपनी दस्तक देते हैं मानव से सभी प्राणी हारे हैं मानव वही है जो सभी को अपने वश में करने की ताकत रखता हो। मानव अपने आपको भी वश में रख सकता है और दूसरों को भी। दूसरों से वही प्यार कर सकता है जो पहले स्वयं अपने आप से प्रेम कर सकता हो। दूसरों का दर्द वही समझ सकता है जिसे खुद दर्द हुआ हो। जिसने गर्भ धारण न किया हो वह विधवा स्त्री या अविवाहित कन्या प्रसव की पीड़ा व गर्भ का अनुभव कभी नहीं कर सकती है।

आज मानव स्वयं इतना गिर चुका है कि उसे मानव भी कहना शर्मनाक है अपनी मानवीयता भूलकर मानव ने स्वयं ही अपनी प्रजाति पर आक्षेपात्मकङ्ह्रास किया है। इसका कारण है कि भौतिकता की होड़ में ख्याति और मन की दौड़ में आदमी अपनी आदमियत खो बैठा है। तीन पुत्र अपने माता पिता को उनके बुढ़ापे का सहारा नहीं बन सकते जबकि एक पिता ने खून पसीना बहाकर अपने तीनों पुत्रों को पढ़ा लिखाकर इतना योग्य बना दिया था कि समाज में तीनों बेटे सभी के सामने सर उठाकर और इज्जत से जी सकें। तथा वो अपना परिवार सुख शांति से चला सकें। देखा जाये तो यह मानवीयता के पतन का ज्वलंत उदाहरण है। मानव के अदंर जितनी मात्रा में दया प्रेम सौहार्दता सहानुभूति समानुभूति होगी मानव उतना ही अधिक इज्जत शौहरत शांति-सुख को प्राप्त करेगा ऐसा इंसान परमात्मा का प्यारा होगा। और धन सम्पन्न होगा। इन्हीं बातों से मानव की कीमत होती है। इन्हीं में धर्म समाहित है। हम सभी इन गुणों को प्राप्त करें और मानवीयता का मूल्य समझते हुए जीवन को अमूल्य बनाने का प्रयास करें तभी हमारा जीवन सफल होकर दिव्यतम हो सकता है।

विचारों का क्रिया कलाप व्यक्तित्व का
परिचायक नहीं।

Activities of thoughts are not the introduction of personality.

अहम् अहम ही नहीं केन्सर का बीज भी है।

Pride is not only pride but the seed of cancer also.

विषय लोलुपी वासना युक्त प्राणी सत्य
नहीं पा सकते।

The life man of lust full creatways can not get the truth.

शरण उसकी लो जो स्वतंत्रा करा दे

हर आदमी इस दुनियाँ में आकर किसी न किसी के आश्रित जरूर रहता है। कोई पत्नि पति के आश्रय से रहती है। बच्चे माता पिता के आश्रय से रहते हैं। नौकर मालिक के आश्रय से रहते हैं। बिना आश्रय के कोई भी प्राणी हो ऐसा व्यक्ति ढूँढ़ना बहुत ही मुश्किल है। यदि कोई साधु भी बन जाता है तो भी वह अपने गुरु के आश्रित रहता हैं। आज गुरु भी हैं वो प्रकृति के आश्रित हैं, भगवान के आश्रित हैं। यहाँ सभी अशरण हैं अशरण की शरण में जाने पर हमें परतंत्रता ही हासिल होगी। परतंत्रता एक तरह की गुलामी को स्वीकार करना है। गुलामियत वे ही स्वीकार करते हैं जो आलसी हैं, प्रमादी हैं जो कुछ करना नहीं चाहते जिनके अन्दर स्वतंत्रता की दहाड़ लगाने की हिम्मत नहीं है। किसी ने कहा है – ''चेहरे पे लिखा है यहाँ हर एक आम के हम गुलाम हैं वो भी गुलाम के'' अतः हमें शरण उसी की लेनी चाहिए जो स्वतंत्र हो और हमें भी स्वतंत्र कर दे।

हमें असत्य से इतनी प्रीति है कि हम से कोई नाथ कह देता है तो हम अनाथ होते हुए अपने आपको नाथ स्वीकार करके प्रसन्न होते हैं और अपनी ज़िन्दगी उस नाथ कहने वाले के दांव पर लगा देते हैं। स्त्रियाँ भी अपना काम सिद्ध करने के लिए पति को परमात्मा भी सिद्ध कर देती हैं। इतना होते भी आदमी अपनी अंतस् की आँख बंद किये रहता है और पत्नि भी अपनी आँख बन्द किये हुए है। पति भी अशरण को शरण मान लेता है। पत्नि भी अशरण को शरण मान लेती है और दोनों मोह के पर्दे में आँख बन्द किये अपनी पूरी ज़िन्दगी गुजार लेते हैं। मरने के बाद दोनों फिर वहीं भटकने लगते हैं। फिर वही मौतें फिर वही अशरण हाथ लगती है। सत्यता का अनुभव किये बिना स्वतंत्र रूप से शरण पाना बहुत कठिन ही नहीं नामुमकिन है।

स्वतंत्रता में जीने वाले निर्ग्रंथ दिगम्बर मुनि मिलना कठिन है, संसार के माँ बाप मिलना सरल है, वे तो मिलते ही रहेंगे यदि मुनि मिल भी जाये तो उनकी शरण मिलना कठिन है, शरण भी मिल जाये लेकिन समर्पण होना और कठिन है, और समर्पण के साथ संकल्प करना और कठिन है, संकल्प के बिना स्वतंत्र होना असंभव है। अतः हम सभी को परमात्मा की शरण में ही जाना चाहिये परमात्मा को देखकर ही अपने अन्दर संकल्प और स्वतंत्रता का भाव जाग्रत हो सकता है क्योंकि परमात्मा जितना स्वतंत्र और शक्तिमान कोई नहीं।

कर्म ही भविष्य का निर्माता है

हर व्यक्ति अपना भविष्य बनाने के लिए पूर्व खोटे कर्मवशात् परतंत्र भी है ओर यदि आदमी अपने विवेक पर उतर आये तो वह स्वतंत्र भी है। पुरुषार्थ के बल पर इंसान सर्वदाता ईश्वर को भी अपने हृदय में बुला लेता है, भक्ति के बल पर अपनी पुरानी गलत कर्मों की संतति को छिन्न - भिन्न कर देता है। लेकिन यदि पुरुषार्थ हीन होता हुआ कोई आलसी हो जाये तो तुलसीदास भी रामायण में यही कहते हैं कि "कर्महीन मानव कुछ भी नहीं कर सकता है" गीता भी यही कहती है कि "मानव को कर्म निरन्तर करते रहना चाहिए। आलस और कर्म हीनता मानव की शत्रु है" कर्म भी दो तरह का होता है एक अच्छा एक बुरा। यदि हम बुरे कर्म से अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं तो हमारा भविष्य अंधकार से भरा हुआ है वर्तमान के आधार पर हमारा भविष्य का महल निर्मित होता है। यदि वर्तमान न होता तो भविष्य हो ही नहीं सकता था।

कर्म ही मानव की कृति है कर्म के द्वारा ही हर मानव अपने विवेक - अनुभव - अध्ययन - चिंतन को अपने कर्तव्य के द्वारा ही अभिव्यक्त कर सकता है। हर कार्य में व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को उद्घटित करता है फिर चाहे वह कार्य खाने-पीने का हो, चाहे रहन-सहन का हो, चाहे भाषा बोलने का हो, चाहे किसी का भी क्यों न हो कर्म में संस्कार छुपा रुस्तम की तरह होता है और अनुभव से नवीन संस्कार की संतति निर्मित होती है। कर्म एक लोहे के हथियार की तरह भी है और कर्म मिट्टी के ढेले की तरह भी है जब कर्म हथियार की धार की तरह होता है तो गलत धारणाओं के संस्कार को जड़मूल से नष्ट करता है। लेकिन अज्ञान मिट्टी के ढेले जैसा होता है तो वही कर्म कर्म सन्तति को बढ़ाता जाता है।

अग्नि सोने को गलाती भी है और निखारती भी है यदि हम हमेशा भगवान के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए उनका सम्मान करते हैं तो यह बात भी सत्य है कि जो उसका सम्मान बहुमान के साथ करता है उसका सम्मान सारी दुनियाँ करती है। जो संतों का सम्मान करता है संतों का वरद आशीष उसे प्राप्त होता है जिससे उसके पास सभी तरह का वैभव व सभी तरह की सुख समृद्धि उसे उपलब्ध हो जाती है। जो हीन प्राणियों पर अनुकंपा करता है हमेशा दया का भाव रखता है। वह जल्द ही भगवान राम के, महावीर के, हनुमान के सभी गुणों को पाने में समर्थ हो जाता है। महापुरुष उत्तम कर्म के प्रतीक हैं महापुरुषों को सम्मान देना, भगवान की पूजन करने का मतलब इतना ही है कि मेरा कर्म सत्कर्म बने जिससे मुझे अभी-अभी शांति अनुभूत हो और मेरा भविष्य भी सुख समृद्ध हो। अतः हम सभी सत्कर्म पर हमेशा ध्यान देते हुए अपना भविष्य उज्ज्वल बनाएँ जिससे हम पूर्णता को उपलब्ध हो सकें। सत्य की उपलब्धता ही जीवन की चमक है। सत्कर्म ही जीवन को स्वच्छ निर्मित करके निर्मलता की ओर ले जाता है। और जीवन सफल हो जाता है।

दिल में प्रेम हो तो घर ही स्वर्ग है

प्रेम में भगवान का अस्तित्व छिपा बैठा है और भगवान में प्रेम ही प्रेम भरा पड़ा है। यदि ईश्वर में प्रेम नहीं होता तो उसे ईश्वर बनने का अधिकार भी नहीं होता क्योंकि परमात्मा को तो सभी जीवों को देखना है और सभी के प्रेम भरे दिल में निवास भी करना है। परमात्मा का सभी के लिये परम संदेश है कि ''जो इंसान सभी लोगों को दिल से प्रेम न कर सके उसे हमारे पास आने की कोई जरूरत नहीं'' परमात्मा का दर केवल उन्ही लोगों के लिए खुला है जिन्हें पराया दर्द अपना ही महसूस होता है''जिसका दिल नहीं समझता पराई पीर, उसे दिखाई न देंगे कभी महावीर'' महावीर हो या राम - हनुमान हो या कृष्ण इन सभी में प्रेम का दिल था इसलिए ये घर में रहे तो घर स्वर्ग सा रहा घर में देवों का आगमन बना रहा और जंगलों में गये तो जंगलों में मंगल करके स्वर्ग सा बना दिया। जिसके दिल में परमात्मा प्रकट हो रहा है, उसका प्रेम ही स्वास्थ्यवर्धक भोजन है, प्रेम उसका परम धन है, वह सभी को प्रेम बाँटता फिर रहा है, प्रेम का परिणाम भी प्रेम ही है, दिल में प्रेम है तो वह घर स्वर्ग से भी सुन्दर है, घर में ही स्वर्ग है और जहाँ प्रेम नहीं वह घर नरकों जैसा है घर को स्वर्ग या नर्क बनाने में सबसे अहं भूमिका हमारी ही है।

भगवान राम जंगल में व घर पर कदम-कदम पर प्रेम ही बाँटते गये प्रेम का दिल होने के कारण जटायु पक्षी को घायल देखकर अपनी खोई हुए सीता का दुःख तो भूल गये और जटायु पक्षी को उठाकर उसका दर्द समझकर उपचार करने लगे यही कारण था कि इतनी बड़ी लंका और शक्तिवान त्रिखण्डेश रावण पर विजय प्राप्त की जबकि रामचंद्र जी के पास घर से चलते वक्त कुछ भी नहीं था यह उनके प्रेम बाँटने के परिणाम के कारण हुआ। इसीलिए आज भी जब हमारे अन्दर एक दूसरे के प्रति प्रेम होता है तो हम स्वतः ही राम-राम कहकर आपस के प्रेम को प्रकट करते हैं। भगवान राम के रोएँ-रोएँ में प्रेम होने के कारण आज भी सारा विश्व उनका नाम बहुत ही प्रेम से लेता है। सभी धर्म की बातें ढाई अक्षर के निस्वार्थ प्रेम में समाहित हैं और प्रेम नहीं तो धर्म का अंश भी नहीं हैं प्रेम पृथ्वी पर स्वर्ग का दूसरा रूप ही है।

आज मानव को केवल प्रेम से रहना ही सीखना चाहिए कहा भी है''पोथी पत्रा को पढ़े कोउ न पण्डित होय। ढाई आखर प्रेम को पढ़े सो पण्डित होय।।''यह वात्सल्य भरा प्रेम धर्म के बीजों में से प्रस्फुटित होता है धर्म यही सिखाता है कि सबसे मिलजुल कर रहो दुनियाँ में कोई तुम्हारा शत्रु न रह पाये शत्रु को भी मित्र बनाकर जिओ गाँधी जी ने कहा था ''यदि तेरे सौ मित्र

असार में सार खोजना ही विवेक है

धर्म में अधर्म खोजना, दृश्य में वस्तु को खोजना सरल है लेकिन असार में सार खोजना बहुत ही कठिन है। आज लोग सार में भी असार ढूँढ़ लेते हैं, मन्दिर में आकर भी कषाय कर लेते हैं, पूजन करते समय व्यापार कर लेते हैं लेकिन व्यापार में पूजा बहुत कम कर पाते हैं। यदि हम दुनियाँ में सार देखने के लिए चलें तो कहीं भी नजर नहीं आएगा क्योंकि असार ही चारों ओर फैला हुआ है लेकिन हम अपने अंदर दिव्य दृष्टि ईजाद कर लें फिर यदि असार भी देखेंगे तो भी सार दिखेगा। सार देखने वाला असार भी देख लेता है और सार भी देख लेता है। लेकिन असार में कभी सार दिखाई नहीं देता है। संसार ही असार है और संत वही है जो सार देख ले विवेक उसी के पास है जो सत्य देखने की हिम्मत रखता हो।

जो जन्मा है वह मरेगा जिसकी उत्पत्ति हुई है वह मिटेगी जो मिटेगी फिर उसे पाकर हम क्यों गरूर करें? संसार में मिट्टी का ही विकास है चारों ओर हमें मिट्टी ही मिट्टी दिखाई देती है इस मिट्टी में परमात्मा जैसी मेरी आत्मा इस तरह एकमेक हो रही है जैसे दूध में पानी एकमेक हो जाता है। शरीर भी मिट्टी का निर्माण है जिसके दिमाग में मिट्टी भरी हुई है उसे मिट्टी बहुत अच्छी प्रतीत होती है लेकिन जिसके दिमाग में विवेक की किरण जाग उठती है उसको मिट्टी पराई प्रतीत होती है।

धन - मकान - महल ये सभी बादल की तरह चंचलता को लिए हुए हैं जैसे बादल क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं ऐसी ही अपनी ज़िन्दगी है। हम चाहें तो विवेक की आँख से असार में से सार खोज सकते हैं और हम आलसी हो जाएँ तो सार को छोड़कर असार में ही ज़िन्दगी गुजार सकते हैं। असार में जीवन गुजारना कोई मानवीय लक्षण नहीं हैं मनुष्यों ने वो काम करके दिखाए हैं जो आज तक कोई फरिश्ते नहीं कर पाये हैं। अतः हमें बिजली जैसी चमक जैसे अस्थिर पदार्थों में संतुष्ट होकर नहीं जीना है बल्कि स्थिर तत्त्व में अपना चित्त स्थिर करना है तभी हमारा जीवन विवेकमय होकर सफल हो सकता हैं।

आगम भक्ति मन को संभालती है, तो
अध्यात्म भक्ति मन को मिटाती है।

If scripture devotion controls the mind it
and agam devotion destructs it.

टेंशन का उपचार मेडीसिन नहीं मेडीटेशन है

वर्तमान युग में जितने ज्यादा साधन सुविधाएँ उपलब्ध हुइ उतना जीवन स्तर का विकास तो हुआ लेकिन आदमी आलसी और कमजोर होता गया इस कमजोरी का एक लक्षण टेंशन भी है साहसी और धैर्यवान प्राणी मुसीबतों में घबराते नहीं हैं उनसे डटकर मुकाबला करते हैं और कमजोर आदमी टेंशन कर बैठता है जिससे बी.पी. हाई और हार्ट अटैक जैसी घटनाएँ जीवन में घटित हो जाती हैं। कई लोग इसका उपचार कराते हुए कई प्रकार की दवाईयाँ खाते हैं लेकिन वे दवाइयाँ मन को बेहोश करने की होती हैं, मन को विस्तृत करने की नहीं होती। टेंशन का उपचार तभी होगा जब मन विशाल होगा, मन की विशालता धर्म के माहौल में होगी। खोज करें तो पाएँगे कि सबसे बड़ा, विशाल मन कोई धर्मी का ही हुआ है और भविष्य में भी एक पक्षपात रहित धर्मी का ही होगा। मन में यदि सीमित वस्तुएँ समाती हैं तो मन विशाल नहीं होता और जब मन असीमित के लिए दौड़ लगाता है तो मन चेतन के साथ मिलकर अनंत के महल को छूने लगता है। टेंशन तभी होता है जब असीमित की चाह में सीमित हाथ लगे अथवा हम ज्यादा की आकांक्षा रखें और उपलब्ध कम हो सके, टेंशन की मूल जड़ है हम जैसा चाहते हैं वैसा न होना अथवा अपेक्षा की उपेक्षा होना। इसे केवल आत्मध्यान के बल से ही मिटाया जा सकता है, कोई दवाइयों से नहीं।

आज तक जितने भी प्राणियों को टेंशन हुआ है वो हमेशा बाहरी वस्तुओं के कारण ही हुआ हैं, परिग्रह के कारण हुआ हैं और जब भी आदमी टेंशन फ्री हुआ है तो आत्म ध्यान के बल से ही हुआ है पाश्चात्य देशों में और विदेशों में भोगों को अधिक महत्व दिया जाता हैं। वे हमेशा आत्मध्यान की तलाश में रहते हैं धर्म का सही तथ्य न समझ पाने के कारण थोड़ा सा योग लगाने पर शांति को ही वो ध्यान समझने लगते हैं। आत्मध्यान परमात्मा के नजदीक ले जाते हैं पर पदार्थ पराधीनता उत्पन्न करते हुए टेंशन बढ़ाते हैं। परम ध्यानादि से स्वाधीनता पैदा होती हैं। टेंशन के उपचार हेतु हम दवाएँ लेते हैं उन दवाओं का पदार्थ हमारी जागृत अवस्था को मारता है और हमारी सोचने की शक्ति को कमजोर करता है जबकि ध्यान जागृत भी करता है और ज्ञान भी बढ़ाता है।

टेंशन से हमारी धड़कन बढ़ जाती है और धड़कन के बढ़ने पर हमारी आयु कम हो जाती है। भय के कारण क्रोध, मान के कारण बीमारी और भोग के कारण हमारी धड़कनें दुगनी तेज हो जाती हैं ऐसी अवस्था में हमारी उम्र की धड़कनें कम होने के कारण हमारी उम्र कम हो जाती हैं। टेंशन हमें कभी -

कभी अकाल मौत की ओर भी ले जाता है और अकाल मौत हमें दुर्गति की ओर ले जाती है। टेंशन से बचने के लिए धर्म ही एक अचूक दवा है लेकिन धर्म सर्व प्रथम यह कहता है कि आप धर्मी बनिये, पहले आप अपने जीवन को सदाचार और सज्जनता से भरपूर करिये उसके बाद धर्म का अनुभव हो सकेगा। जब तक हमारे मन की लगाम बाहर की वस्तुओं से जुड़ी रहेगी तब तक टेंशन फ्री होना नामुमकिन है। इसलिए धर्म का उपचार आयुर्वेदिक है जिसमें रोग जड़मूल से नष्ट किया जाता है आयुर्वेदिक में पथ्य भी होता है और उपचार भी होता है और मेडीसिन में पथ्य नहीं उपचार होता है जो भविष्य में फिर हो जाता है। अतः ध्यान के द्वारा ही हम सभी टेंशनों से मुक्त होकर स्वाभाविक अनुभव कर सकते हैं यही जीवन का उपचार है।

धन की वृत्ति भोजन से नहीं, धन के गहन
अनुभव से है।

Use can't satiate money but throught knowledge of it can.

प्रेम की उत्पत्ति छल–कपट के द्वार के बाहर होती है।

Love springs out door to fraud and cheating.

बुद्धिमानों के संकल्पों के फल को मापा नहीं
जा सकता है।

The Result of decision of intelligents can't be measured.

धर्म बिना जीवन, सुबकती मौत के समान है।

Life without religion is a sobbing death.

हैं तो कम हैं लेकिन तेरा एक शत्रु है तो ज्यादा है।'' दुनियाँ में भी कम्प्यूटर का सिद्धान्त लागू होता है जैसा डालोगे वैसा ही निकलेगा अतः तुम प्रेम बाँटोगे तो तुम्हें सभी से प्रेम ही लौटकर मिलेगा यदि घृणा बाँटोगे तो घृणा ही सबसे पाओगे। हम सभी प्रेम पाने के लिए प्यासे बैठे हैं प्रेम जितना भी मिले वो ज्यादा नहीं हो सकता कम ही रहेगा इसी तरह आप गैरों को कितना भी प्रेम दें वह ज्यादा नहीं हो सकता हमेशा कम ही रहेगा। प्रेम पाने के पूर्व हम प्रेम देना सीखें तभी हमारा जीवन एक प्रेम का सागर बन सकता है और तभी जीवन को पाना सार्थक हो सकता है।

मनुष्य एक कलाकार है जो परमात्मा भी
बन सकता है।

A man is an artist who may become the God

सन्यास सत्य के लिए हो, सत्ता के लिए नहीं।

Man is an artist who can make himself on onset.

मानव स्वयं को देखने में नहीं, दिखाने में ज्यादा
उत्सुक है।

Human is more interested to show himself but not in ownself.

प्रतिष्ठा व धन झूठे प्रचार व चोरी से मिलता है।

Status and wealth can only be acheived by false publicity and theft.

ज्ञान की जड़ें कड़वी हैं लेकिन फल मीठे हैं

हर वस्तु पाने के लिए हर प्राणी को पसीना बहाना पड़ता है यदि हम धन संपदा के ऊपर दृष्टिपात करें तो आदमी धन के लिए क्या-क्या नहीं करता मुझे लगता है जितने भी अपराध और अनैतिक कार्य हैं वे सभी धन के लिए ही किये जाते हैं कड़े परिश्रम से ही वस्तु की प्राप्ति संभव हो सकती है। जब हम प्रयत्न करते हैं मेहनत करते हैं तब अच्छा प्रतीत नहीं होता, जब हम परीक्षा में पास होने के लिए रात-रात भर जागकर पढ़ते हैं तब बहुत ही कड़वा सा प्रतीत होता है परन्तु जब हम पास होकर प्रथम श्रेणी में आते हैं तो हमारी खुशी की सीमा नहीं रह पाती है। जब हम आत्मज्ञान पाने के लिए तत्पर होते हैं तब हमें सभी वस्तुएँ त्याग करनी पड़ती हैं यहाँ तक कि शरीर से भी ममत्व छोड़ना पड़ता है। शरीर के कष्ट से अपना मन हटाकर अपने में ही विलीन करना होता है। ऐसी साधना से ही परमात्मा का ज्ञान हमारे अंदर उद्घटित होता है। इसे पाने में कठिन से कठिन परिषह को, कठिनाई को सहना पड़ता है। लेकिन जब इसका फल प्राप्त होता है तब आनन्द ही आनन्द, शांति ही शांति, ज्ञान ही ज्ञान प्राप्त होता है जिससे हम पूर्णतः तृप्त हो जाते हैं।

मीठे फल उन्हें ही प्राप्त होते हैं जिन्होंने परिश्रम और लगन में किसी भी प्रकार का आलस प्रकट नहीं होने दिया था। आलस मनुष्यों का शत्रु है। आज जितने भी लोग हीनबुद्धि के दिखाई देते हैं ये सब आलसी जीवन का ही परिणाम है। हर वस्तु का प्रणाम केवल मेहनती के लिए है। आलस से हमारे जीवन के आँगन में उगने वाला सूर्य अंधकारमयी राहू केतू से व्याप्त हो जाता है। हमारे अन्दर का सूरज तभी प्रकट होता है जब हम पुरुषार्थ करके अंधकार की पर्तों को छाँट सकें। अंधकार की पर्तें हटाना और बढ़ाना हमारे हाथ में है आलस अँधेरों की पर्त है तो पुरुषार्थ अँधेरों की पर्तों पर प्रहार है।

जो व्यक्ति कार्य करने के पूर्व ही हारकर बैठ जाते हैं सफलता उन्हें अपना मुँह कभी स्वप्न में भी नहीं दिखाती। हिमालय की चोटी को वे ही छू पाते हैं जिन्होंने पर्वत की हर जगह पर अपना कदम जमाना सीख लिया हैं, जिन्होंने फौलादी दिल को बनाकर कभी नीचे गिरना नहीं सीखा हैं। ज्ञान और शिक्षा की जड़ें कड़वी मेहनत से भरी हुई जरूर हैं लेकिन उनके फल अत्यन्त मीठे हैं। वस्तु को पाना सरल है लेकिन वस्तु के सार को पाना उतना ही कठिन है जितना भैंस के थन में से घी निकालना कठिन है। अतः हम सभी वास्तविक ज्ञान पाने का साहस करें तो निश्चित है एक दिन हमें वैसा ही ज्ञान उपलब्ध हो सकेगा जैसा ज्ञान भगवान महावीर, राम, हनुमान प्रभु ने प्राप्त किया था तभी हम सभी का जीवन सफल हो सकता है।

ज़माना उसका है, जो ज़माने को न चाहे

कहते हैं कि दुनियाँ में चाहने से कुछ भी नहीं मिलता है यदि चाहने से कुछ भी मिलता तो सबकुछ मिल गया होता क्योंकि सब कुछ चाहने की चाह करने में सैकेण्ड मात्र लगता है। मिलना तो किस्मत के आधीन है चाह के अधीन नहीं जमाने की उल्टी रीत नहीं है आज जमाने में उल्टी रीत है जमाना ये कहता है मैं उसका गुलाम हूँ जो मेरी चाह न करे। ध्यान रहे जो चाह नहीं करेगा वह कोई अनुभवी होगा और जमाना अनुभवी के पीछे चलता है जमाने के लोग भी अनुभवी का अनुकरण करते हैं। जमाने भर की दौलत एकत्रित करके भी जमाने का शहंशाह बन करके सिकन्दर सम्राट भी जमाने के एक संत से ही हार गया और जमाने को अपना नहीं कर सका लेकिन दूसरी तरफ भगवान राम, महावीर हुए जिन्होंने जमाने का जमाने को देकर सारा जमाना अपना बना लिया। जमाने को अपना बनाने के लिए चाह का त्याग करना जरूरी है दुनियाँ उसी को झुकती है जो दुनियाँ के लिए कभी नहीं झुकता।

दुनियाँ हर इंसान के लिए एक संयोग है संयोग हमारे ही द्वारा अच्छी बुरी प्रवृत्ति का परिणाम है संयोग हमारे पूर्वकृत कर्म की सजा हैं। संयोग हमारी अभिव्यक्ति नहीं अभिव्यक्ति के लिए निमित्त जरूर है। संयोगों से सम्यक् योग भी बनाया जा सकता है और संयोगों को भोग भी बनाया जा सकता है। संयोग को भोग बनाने पर हमारे अन्दर विषाक्त द्रव्य उत्पन्न होता है इससे हमारा शरीर भी जहरीला हो जाता है एक साँप हिंसक विचार करने के कारण अपने शरीर में जहर पैदा कर लेता है संयोग प्राप्त करके हमें सार पर ध्यान देना जरूरी है संयोग जमाना है तो सार है जमाने को न चाहना।

यदि हम वस्तु दृष्टि बनाते हैं तो हमारे चारों और संसार व दुखों का एक वर्तुल तैयार होने लगता है उसके आचरण में आते ही हम दुखी होने लगते हैं यदि वही दृष्टि वास्तविक दृष्टि हो जाये तो आनन्द सुख ज्ञान व शांति का वर्तुल बनने लगता है। यही दृष्टि जब आचरण में आधारित होती है तो हम सुख शांति महसूस करते हैं। हमारा परिणाम ही वर्तुल का मूल कारण है। हम परमात्मा को दृष्टि में लेते हैं तो परमात्मा की सम्पदा हमारे चारों और वर्तुल बना लेती है। यदि हम पाप पर आमादा हो जाते हैं तो पाप का कीचड़ मेरे चारों ओर लिपट जाता है। अतः हम सभी का जमाने में रहकर जमाने से दूर रहना है तभी हम जीवन का सार पा सकेंगे और अपना जीवन सफल कर सकेंगे।

अच्छे विचारों से स्वस्थ शरीर निर्मित होगा

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास कर सकता है और स्वस्थ मन ही अपने विचारों के आधार पर अपना अनुभव परमात्मा के विचारों से मिल सकता है। जीवन को निर्मित करने के लिए हमें स्वस्थता नियामक जरूरी है किसी ने कहा कि ''दुख में सुमिरन सब करें सुख में करें न कोय। जो सुख में सुमिरन करे तो दुख काहे को होय।।'' लेकिन यह ध्यान देने योग्य बात है कि भगवान का सुमिरन हमेशा स्वस्थता में ही होता है अस्वस्थता में नहीं। अस्वस्थता में व्यक्ति पहले डॉक्टर के पास भागता है अस्पताल भागता है भगवान की आराधना की ओर नहीं भागता। भगवान के गुणगान या ध्यान की ओर नहीं भागता जब भी भगवान का सुमिरन होता है तब स्वस्थता में ही होता है किसी ने कहा भी है शरीर स्वस्थ होने पर ही हम धर्म के साधन को अपने जीवन में अपना सकते हैं यदि कोई बीमार है तो वह साधु नहीं बन सकता साधुओं को हमेशा स्वस्थ रहना चाहिए विचारों से भी और शरीर से भी। यह साधु का लक्षण भी है संत सभी को स्वस्थता प्रदान करता है, अस्वस्थता नहीं, वह सभी को अच्छे विचारों का आदर्श प्रस्तुत करता है। संत की कोई भी क्रिया अप्रिय नहीं होती जो अप्रिय होती है उसमें संतपना नहीं होता। अतः हमें अच्छे विचारों को अपनाकर स्वस्थ रहना चाहिए।

दुनियाँ में अच्छे परमाणु भी ठसाठस भरे हैं और बुरे भी भरे हुए हैं ये दोनों परमाणुओं के स्कंधों से हम सभी के शरीरों की संरचना होती है कई लोग ऐसे शरीर को प्राप्त करते हैं जिसमें दुख ही दुख बीमारी ही बीमारी होती है सारी ज़िन्दगी गमों में ही गुजर जाती है। वे लोग सुख को जानते ही नहीं हैं लेकिन कई लोग ऐसे भी दिख जाते हैं जिन्हें बीमारियाँ बहुत कम होती हैं। कई बीमार लोग बाजार से दवाएँ खरीद लाते हैं और खाते पीते हैं मात्र स्वस्थ होने के लिए लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि यदि अच्छे विचार मेरे दिल में नहीं होंगे तब तक हमारे शरीर में अस्वस्थता का जहर निर्मित होता ही रहेगा हम चाहे कितनी अच्छी वस्तुएँ खा पी लें। मीरा ने गिरधर को याद करते हुए जहर का प्याला पी लिया लेकिन परिणाम स्वस्थ होने कारण वह जहर का प्याला अमृत का प्याला बन गया। निकृष्ट परिणाम वाला व्यक्ति यदि अमृत भी पीये तो वह शरीर में जाकर जहर बन जायेगा। वस्तु को जहर या अमृत बनाना हमारे विचारों पर निर्भर करता है और ये विचार ही स्वस्थता व अस्वस्थता के कारण हैं।

हम बाजार से ठीक होने की दवाएँ लाते हैं उनमें वे ही

परमाणुओं को एकत्रित किया जाता है जिन परमाणुओं को हम अच्छे और उत्कृष्ट विचारों से खींच लेते हैं अच्छे विचार स्वस्थ मन व शरीर के लिए सोना चांदी टॉनिक च्यवनप्रास का काम करता है और बुरे विचार ही हमारे जीवन के लिए सैल्फॉस का कारण बन जाते हैं। अच्छी वाणी ही हमारे लिए ग्लुकोस की बॉटल बन जाती है जो शरीर की प्यास को तृप्त करती है लेकिन जो व्यक्ति कटु असत्य और भण्ड वचन बोलते हैं उनको प्यास भी बहुत सताती है। अच्छे विचारों से हमारे शरीर का आभामण्डल सुन्दर और प्रभावशाली बन जाता है बुरे विचारों से हमारे तन का आभामण्डल काला नीला बन जाता है ऐसा आभामण्डल स्वयं में कषायें उत्पन्न करता है और उसके पास जो भी बैठ जाता है उसमें भी कषायावेश पैदा करता है। अतः हम सभी अपने जीवन को अच्छे विचारों से विभूषित करें तो जीवन भी निर्मित होगा, मानवता का प्रकटीकरण भी होगा और शरीर भी स्वस्थ होगा एवं पतन भी नहीं होगा तभी हम सभी का जीवन सफल होकर उज्ज्वल हो सकेगा।

आत्मनिन्दा दुःखों को गिराने के लिए बुल्डोजर है।

Self accusation is buldozer for woes.

यदि साधारण फोन आगम भक्ति है तो एस.टी.डी.
है अध्यात्म भक्ति।

If ordinary phone is agam devotion Then S.T.D. is spiritual devotion.

निर्माल्य देवता के चरणों में चढ़ने की मुहर है।

Purity is a stamp to climb in the feet of god.

दिशा ही जीवन की दशा बदल देती है

आदत जीवन में वह अवस्था है जो कई दिनों की चर्या में बन जाती है आदत ही धीरे-धीरे स्वभाव लगने लगती है। यद्यपि स्वभाव आदत नहीं होता आदत पर संस्कार के बीज डाले जाते हैं जब वे बीज फलीभूत हो जाते हैं तब वे ही सुसंस्कारित जीवन को स्वभाव की ओर गतिशील कर देते हैं। कई बार लोग कहने लगते हैं कि अमुक आदमी का स्वभाव बहुत क्रोध करने का है या चिड़चिड़ा स्वभाव है ये स्वभाव नहीं आदतें हैं। हर जीव का स्वभाव जानना देखना है इसके अलावा जितने भी स्वभाव कहे जाते हैं वे सभी गलत हैं। आजकल आदमी की दशा यह है कि वह अपने पड़ौस में रहने वाले व्यक्ति को भी नहीं पहिचानता कभी - कभी तो यह होता है कि कोई व्यक्ति अपने बच्चे को भी नहीं समझ पाते कि वह कितना बड़ा हो गया होगा। आदमी धन कमाने में, धन एकत्रित करके अपना अहंकार बढ़ाने में, अहंकार बढ़ाकर अपने आपको श्रेष्ठ बताने की दौड़ में लगा हुआ है आज का व्यक्ति धार्मिक गुणों से नहीं धन से श्रेष्ठता समझता है। दशा यह है कि धन ही प्राण है इसलिए सारे प्राण धन एकत्रित करने में तन्मयता से लगे हुए हैं इससे यह बात स्पष्ट है कि दिशा ही जीवन की दशा बदल कर रख देती है।

आदमी का सारा आचरण व्यक्तित्व की नींव पर आधारित है व्यक्तित्व आधारशिला है और आचरण मकान है। आचरण व्यक्तित्व का दर्पण है आचरण से व्यक्ति की भाव - भंगिमा स्पष्ट दिखाई देती है। व्यक्तित्व वह रौशनी है जो आचरण के बल्ब से उद्घटित होती है बाहर की लाइट को कहीं और से कनेक्शन लेकर जलाया जा सकता है लेकिन अंदर की लाइट को कनेक्शन लेकर नहीं अपने अंदर ऊर्जत्व का भाव लेकर स्वयं ही जलाया जा सकता है। गुरु भी शिष्य के चिराग को रोशन नहीं कर सकते हैं गुरु केवल शिक्षक की भाँति मार्गदर्शक बन सकते हैं एक शिक्षक भी एक विद्यार्थी को योग्य नहीं बना सकता यदि विद्यार्थी बुद्धु हो तो, विद्यार्थी का मेधावीपना ही शिक्षक के सिर को ऊँचा उठा देता है। बेटे या बेटी का मेधावीपना ही माता-पिता को सम्मानित करा देता है। अतः मेधा ही दिल को दिशा की ओर इंगित करती है और दिशा से ही जीवन में मोड़ पैदा करती है। तथा जीवन सुसंस्कारित होने लगता है।

दिशा को सही रास्ते पर लाने के लिए हमें कई अनुभवों से गुजरना पड़ता है यदि हम अनुभवहीन होंगे तो हमें सही दिशा गुरुओं से दिखाई देती है, शास्त्रों से दिखाई देती है लेकिन ध्यान रहे शास्त्र दिशा दिखा सकते हैं लेकिन दिशा को ज्ञान चक्षुओं से देखे बिना हम दशा नहीं बदल सकते। यदि हम शास्त्रों को पढ़कर जीवन की दशा नहीं बदल पाते तो शास्त्र

जो गाओगे वही पाओगे – अन्य नहीं

चाहे गीत हो या परमात्मा का संगीत जो भी गाया जाता है उसके पीछे कोई न कोई उद्देश्य छिपा रहता है। बिना उद्देश्य के कोई भी कार्य नहीं होता यदि हम नहाते हैं, खाते हैं, बोलते हैं या चुप रहते हैं, पढ़ते हैं, कमाते हैं, नौकरी करते हैं आदि हर कार्य में कोई न कोई कारण छिपा बैठा है। कारण के अभाव में कार्य हो ही नहीं सकता इसलिये हम फिल्मी गीत गाते हैं तो इसका हेतु हमारे अन्दर बैठी हुई कामवासनाएँ हैं और यदि हम परमात्मा का संगीत गाते हैं तो हमारे अन्दर परमात्मा को पाने की धुन है। हम गायेंगे नहीं तो पायेंगे नहीं। हम गायेंगे तो जरूर पाएँ ऐसा नहीं है हम पायेंगे तब गाया जरूर होगा। गाना गीत में खोने का और जिसको गाया जा रहा है उसमें तन्मय होने का बहाना है। एक संगीत के द्वारा ही हम वासनाओं से दूर हटकर अपने अस्तित्व में पहुँचने का प्रयास करते हैं हमारे द्वारा जितने भी परमात्मा के गीत गाये जाते हैं वो सब अपने अस्तित्व के करीब पहुँचने के लिए गाये जाते हैं यह अकाट्य सत्य है जिसको पाना है उसे दिलोजान से गाना भी पड़ेगा जब दिल पाने को आतुर हो जाता है तो मुख से गीत नैसर्गिक पैदा हो जाता है।

जब हम परमात्मा के गुण उसकी आराधना में गाते हैं तब हम धीरे – धीरे परमात्मा की ओर बढ़ते जाते हैं और एक दिन वह होता है कि जब हम परमात्मा के अस्तित्व जैसे होकर अपने अस्तित्व में विलीन हो जाते हैं। द्रव्य का विचारों पर बहुत कुछ असर पड़ता है यदि कोई अपने कमरे में फिल्मी एक्टरों के पोस्टर लगा लेते हैं तो विचार एक्टर बनने के होने लगते हैं। यदि कोई पहलवानों के चित्र कमरें में लगा लें तो उसकी बाहों में फड़कन पैदा हो जाती है यदि हमें अपने अस्तित्व को पाना हैं तो अपने अस्तित्व में जो लीन हैं उनकी तरफ देखने से हम अपना अस्तित्व समझ सकेंगे और उसे एक दिन पा सकेंगे। परमात्मा की प्रतिमा वास्तविक परमात्मा नहीं है लेकिन उसकी प्रतिमा हमारे अंदर की प्रतिभा को उभार देती है।

परमात्मा वे ही बन सके जिन्होंने परमात्मा को गाया उसको ध्याया और धारण भी कर लिया परमात्मा को हम पा नहीं सकते उसे मात्र जी सकते हैं। जीना ही पाना है और पाना ही जीना है परमात्मा को पाने के लिए बाहर में बहुत श्रम की जरूरत नहीं परमात्मा बाहर से अन्दर की ओर नहीं अंदर से बाहर की ओर प्रकट होता है। परमात्मा हमारे पास आने को तैयार है वह हमारी जागृत अवस्था को देख रहा है और हम उससे बे फिकर हैं परमात्मा हमें सब कुछ देने के लिए तैयार है लेकिन हम वह कार्य करने को तैयार नहीं हैं जिसकी ओर उसका इशारा है। अतः हम सभी को परमात्मा के गुणों को प्रतिदिन ही नहीं हमेशा गाना चाहिए। परमात्मा हमें मिल जाएगा क्योंकि परमात्मा का ही सब कुछ बनाया हुआ है तभी हम सभी का जीवन सफल हो सकता है।

जीवन निर्माण से निर्वाण की ओर प्रयाण

हर इंसान को परमात्मा की ओर से एक ऐसी वस्तु गिफ्ट में मिली है जिसको क्रियान्वयन करना जरूरी है यदि हम उसे क्रियान्वयन नहीं कर पाये तो वह दी गई गिफ्ट परमात्मा वापिस ले लेगा। यह बात सत्य है कि उसकी गिफ्ट के सदुपयोग से आदमी का क्षयोपशम बनता है उसके उपयोग से आदमी पशुता के परिणामों से ऊपर उठ जाता है वह परमात्मा का गिफ्ट है मन। मन में चेतन का बहाव होता है, चेतन का बहाव ही मन को अच्छी व बुरी दिशा में ले जाता है। मन को सही दिशा में लगाना ही जीवन को निर्माण की ओर ले जाना है जीवन निर्माण का मतलब है कि सत्य हमारे जीवन में घटने लगे सत्य का हमें अनुभव हो जाये हमारे हृदय में और सत्य में कोई अंतर न रह जाये। सत्य का अनुभव न जुबान कर सकती है, न आँखें करेंगी, न शरीर करेगा सत्यता का अनुभव मात्र हृदय करेगा। शरीर में हृदय वह स्थान है जिसे परमात्मा का स्थान कहा जाता है जब भी कभी परमात्मा को याद किया जायेगा तो हृदय पर ही आकर बैठेगा जीवन का निर्माण हृदय की बात योगों में क्रियान्वय होने से ही होगा।

हृदय का उद्गम पवित्र भावनाओं से संबंधित है हृदय की आवाज जब भी उठेगी तब वही उठेगी जो परमात्मा की होगी। लेकिन मन इतना भोगी और दुष्ट है कि परमात्मा की बात की हमेशा उपेक्षा ही करता है। आज तक मन ने हृदय की बात को स्वीकार नहीं होने दिया इसीलिए ये मन जीवन का निर्माण न कर सका, मन हमेशा हृदय को गलत राह पर ले जाता रहा है लेकिन हृदय हमेशा मन को राह पर लाने की हर संभव कोशिश करता है। मन हृदय से ज्यादा शक्तिशाली कभी भी नहीं है लेकिन कमजोर हृदय वालों के लिए मन शक्तिशाली है यद्यपि जीवन का निर्माण हृदय के आधार पर ही होता है मन तो जीवन निर्माण में सहायता करने वाला एक सक्रिय कार्यकर्ता है।

अनुभवों के आधार पर टिका हुआ है सारा जीवन। यदि हमारा अनुभव गलत राह की ओर मुड़कर क्षणिक इन्द्रियों के विकारों में संतुष्ट हो जाता है जिसे लोग इन्द्रियों का सुख कहते हैं। वे भूल में हैं वो इन्द्रियों की विकलता है इन्द्रियों की विकलता सभी के अंदर होती है लेकिन कुछ लोग ध्यान व ज्ञान के माध्यम से उसे काबू में लेकर शांति के वेदन का अनुभव करते हैं। कुछ लोग विकलता को ही आनंद मानते हुए अपनी ज़िंदगी व्यतीत करते हैं लेकिन विकल लोग अनुभवों में विफल होते हुए अपनी ज़िन्दगी का निर्माण नहीं कर पाते हैं न निर्वाण की ओर उनका प्रयाण होता है। जब हृदय से सारे वाण (कषायें) निकलें तब जीवन निर्वाण की अवस्थाओं में गतिमान हो सके। मंज़िल की ओर प्रयाण करने के लिए महात्मा का होना जरूरी है, महात्मा होने पर परमात्मा से मिलन जरूरी और परमात्मा से मिलन हो गया तो जीवन का निर्वाण होना अवश्यंभावी है।

पढ़ने से हमारा जीवन न धन्य ही होगा न सार्थक एवं ऐसे व्यक्ति का शास्त्र पढ़ना उपन्यास या मैग्जीन की तरह होगा। परमात्मा की प्रतिमा और परमात्मा कथित ग्रंथ ज़िन्दगी के दर्पण हैं परमात्मा शास्त्र को पढ़कर नहीं बने, परमात्मा ने जो कहा वो शास्त्र बन गये यही कारण है कि राम – हनुमान – महावीर – बुद्ध इन्होंने शास्त्रों को नहीं पढ़ा अपने जीवन को पढ़ा जिससे दिशा भी सही दिखाई दी और जीवन आदर्शमय बन गया। अतः हम सभी अपनी दिशा (लक्ष्य) को बनाकर अपनी दशा सुधारें तभी हम सभी का जीवन सफल हो सकता है।

पवित्र विचार दूसरे की दिशा को भी मोड़
सकता है।

Pious Sacred thoughts can change the direction of others also.

धनवान सुखी नजर आते हैं लेकिन हैं नहीं।
(दूर के ढोल सुहावने)

The Rich seem happy though they are not.

वास्तविक आनन्द त्याग और सन्यास में है। संग्रह व
विलासिता में नहीं।

Real pleasure is in sacrifice and qusterity and not in accunulation and lust.

हम स्वतंत्रा होने के लिए जियें गुलाम होने को नहीं

हर इंसान का स्वतंत्रता जन्मसिद्ध मौलिक अधिकार है परमात्मा भी आदमी की स्वतंत्रता में दखलदांजी नहीं कर सकता है लेकिन आदमी अपनी स्वतंत्रता को स्वच्छंदता में बदलकर खुश रहना चाहता है ऐसा संभव नहीं है स्वच्छंदता का मतलब है कि अपनी स्वतंत्रता को पतन की ओर ले जाने के लिए स्वयं ही हमारा राजी हो जाना और इस अपराध के लिए हम खुद जिम्मेदार हैं। जब हम स्वयं ही ऊपर की ओर उठने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं तो आकाश की ऊँचाइयों को छूने का हमें स्वयं ही अधिकार प्राप्त होता है परमात्मा इस जहां में सबसे अधिक ऊँचाई पर है अत: वह ऊपर उठाने में तो सहायक बन जाता है लेकिन गिराने में उसका हाथ नहीं रहता है गिरने में आदमी स्वयं जिम्मेदार होता है। यह बात जगत प्रसिद्ध है कि जब आदमी धर्म न करते हुए भी यदि धन-पुत्र व भौतिक सुखों से सम्पन्न हो ऐसे समय में कोई उससे हाल-चाल पूछे तो वह यही कहता है ईश्वर की कृपा से ठीक है जब बहुत पीड़ा में मानसिक दुख में हो तो तब कोई हाल चाल पूछे तब यह नहीं कहता कि ईश्वर की कृपा से दुखी हूँ बल्कि यह कहता है कि क्या करें बहुत दुखी हूँ। जब आदमी परमात्मा को जीवन यात्रा में शामिल कर लेते हैं तो हम भी स्वतंत्र होने लगते हैं लेकिन परमात्मा का हाथ छूटते ही हम गुलाम होने को मजबूर हो जाते हैं गुलामियत परमात्मा को मंजूर नहीं।

परमात्मा परम स्वतंत्र है इसलिए उसे किसी का भी डर नहीं है डर हमेशा परतंत्रता में है। परमात्मा अन्यायी भी नहीं है कोई चाहे हम गुलामियत की ज़िन्दगी जियें और स्वतंत्रता का प्रमाण पत्र मिले। यदि हम सांसारिक भौतिकवाद में फँसकर परमात्मा को भूलते हैं तो यह आपका कृत अपराध है और इसका दण्ड अभी और भविष्य में दोनों तरफ मिलेगा अभी का तात्कालिक दण्ड यह है कि तुम प्रसन्न न रहोगे चिंता भय क्लेश टेंशन आदि में जीना पड़ेगा और भविष्य यह है कि परमात्मा की कृपा तुम्हारे ऊपर न रहेगी जिससे तुम दरिद्री होकर दुखी रहोगे। हमें स्वतंत्र होने के लिए आज भी खुशहाली में जीना पड़ेगा जो आज खुशहाली में जी सकते हैं उनका भविष्य स्वतंत्रता पाने के लिए स्वतंत्र है जो आज चिंता - भय - टेंशन में हैं वो आज भी गुलाम हैं और उनका भविष्य भी अँधेरे में होता हुआ गुलामियत से संयुक्त है।

स्वतंत्रता पाने के लिए हमें संयमित जीवन बनाना परमावश्यक है परमात्मा और प्रकृति में कोई अंतर नहीं है क्योंकि परमात्मा के कथन में प्रकृति का विस्तार है प्रकृति के अनुसार यदि हम चलेंगे तो

प्रभु के द्वार पर पहुँच सकेंगे लेकिन यदि प्रकृति के विरूद्ध चलेंगे तो प्रकृति भी तुम्हें गुलाम बनाकर रखेगी। प्रकृति का नियम है जो मेरे अनुसार चले वो प्रभु हो जायेगा और मेरे विरुद्ध चला वो पापात्मा हो जायेगा प्रकृति का नियम है कि मानव माँस भक्षी नहीं है मानव परमात्मा की वह कृति है कि जिसमें सम्पूर्ण ज्ञान का फव्वारा फूट सकता है परमात्मा ने धरती पर मानव से अच्छी कृति आज तक नहीं बना पाई है। यदि मानव प्रकृति रूप जैसा आया था वैसा ही ज़िन्दगी भर रहे तो परमात्मा उसे अपने में मिला लेगा वही स्वतंत्र हो सकेगा। अतः हम सभी यहाँ पर जितने दिन जियें स्वतंत्रता के लिए संयम से जियें गुलामियत पाने के लिये असंयमित होकर नहीं जियें तभी हमारा जीवन सफल होता हुआ सार्थक हो सकता है।

संसार में रहना बुरा नहीं संसार बसाना बुरा है।

Anchoring the world not staying in it is underirable.

जीवन वासना में नहीं साधना में है।

Life is not in sex but in spiritual

धर्म चौराहे का नारा नहीं जीवन धारा है।

Religion is not a slogan to shout but a stream to swim.

सुसंस्कार ही जीवन की आधारशिला है

कहते हैं पूत के पाँव पालने में दिखाई देते हैं इसका मतलब पालने में पूत को देखना नहीं उसके, पावों से कुछ भी नजर नहीं आएगा इसका मतलब यह है कि हमारे अंदर जो बचपन में संस्कार डल जाते हैं वे ही स्वभाव लगने लगते है वे संस्कार हम पूरी ज़िन्दगी में भूल नही पाते हैं अथवा यूँ कहें कि पूरी ज़िन्दगी हम उन्हीं संस्कारों के आधार पर चलाते हैं किसी मनौवैज्ञानिक ने कहा है कि सात साल के बच्चे के संस्कार सत्तर वर्ष तक कायम रहते है अभिमन्यु के संस्कार गर्भ में पैदा हुए और सोलह वर्ष बाद प्रकट हो गये। हिटलर बहुत ही पापी और खतरनाक व्यक्ति था उसने हजारों व्यक्तियों को जान से मार दिया लेकिन जब मरा तो लड़ाई में बिल्लियों से डर के भागने पर मरा उसके जीवन पर खोज की गई बाद में पता चला कि हिटलर इतना क्रूर व्यक्ति होते हुए भी बिल्ली से इसीलिए डर गया था कि बचपन में उसकी छाती पर एक बार बिल्ली चढ़ गई थी जिससे इतनी जोर से डर गया था कि कई वर्षों तक नहीं भूल पाया ये उसके संस्कार ही हैं। भगवान राम पूर्व में रात्रि आहार जल त्याग करते चले आ रहे थे तो कई भवों के संस्कारों ने बलभद्र पद प्राप्त कराया और उन्हीं संस्कारों ने जीवन में मर्यादा पैदा की। अतः हमें कुसंस्कारों से निरंतर बचते हुए सुसंस्कारों को अपनाना चाहिए यही जीवन की नींव है।

संस्कार देने में माँ और पिता को पूर्णतः सजग रहना चाहिए। एक बालक जब गर्भ में प्रवेश करता है तब से ही माता-पिता के विचारों से परिचित होने लगता है। नौ माह में वह पूर्णतः परिचित हो जाता है। यदि उसमें गर्भ के समय प्रतिरोध करने की शक्ति होती तो वह वहीं कर देता और यदि कोई अच्छी बात ग्रहण करने की क्षमता होती तो वह वहीं आचरण में उतारकर बता देता। इस प्रभाव के कारण वह जन्म लेने के बाद ये अभिव्यक्त करके बता देता है। बच्चों का दिल बिल्कुल साफ और सुन्दर निष्कषाय रहता है उनके अंदर विकार नहीं होते इसलिये वे बच्चे सभी लोगों को बहुत ही प्यारे लगते हैं। यदि बच्चों जैसा सुसंस्कारित जीवन हम बड़ी उम्र तक जियें तो जीवन ऐसा आदर्श बन जायेगा कि उसे देखकर स्वयं अपने आप में भी आनन्द होगा और दूसरों में भी आनन्द को पैदा करवाएगा एक पत्थर शिल्पकार की चोटों को सहता है और सहते - सहते जब वह परमात्मा में परिवर्तित हो जाता है तब उसे उस संस्कार का फल मिलता है।

यदि आपके परिवार में सम्पन्नता और संस्कार हैं तो आपका परिवार देवों के घर से कम नहीं है। लक्ष्मी भी वहीं ठहरती है जहाँ घर में प्रेम वात्सल्य और धर्म का माहौल होता है। यदि घर में प्रेम से न रहें तो मरके भी कहीं प्रेम न मिलेगा और घर में प्रेम है तो मरके भी प्रेम मिलेगा। जिसने जीते जी

जिन्दगी देवताओं सी न बना पाई वो देवता कभी न बन सकेगा। नरक में वो ही जाते हैं जो जीवन नरक सा जी जाते हैं। अतः हम सभी के अंदर संस्कारों में देवत्वपना होना जरूरी है अन्यथा हम अपने जीवन में कोई भी आत्मिक खूश्बू वाले फूल नहीं खिला पायेंगे। परमात्मा गीत से नहीं, गहनों से नहीं, गहन तर्क से नही, गहन अनुभव से खुश होता है। परमात्मा पवित्र गीतों को नहीं पवित्र आचरण को चाहता वे सुसंस्कार ही जीवन को मंज़िल तक ले जा सकते हैं अन्य कोई नहीं ले जा सकता है।

धर्म अभिनय नहीं अनुभूति है।

Religion is essence of life not a burden on life.

धर्म के अभाव में आदमी अधूरा है।

A man is imperfect without Religion.

धर्म साध्य है साधन और साधना नहीं।

Religion is aim but not cause and Conduct.

परमाात्मा का रिश्ता पवित्राता से है

दुनियाँ में परमात्मा पूजन से खुश नहीं होता है लोग ये सोचते हैं कि हम परमात्मा की बहुत पूजन करेंगे, उसके गीत गायेंगे, उसके दर पे सर को झुकायेंगे, उसके लिए उपवास करेंगे, हवन करेंगे तो परमात्मा हमसे प्रसन्न हो जायेगा। लोग ये सोचते हैं कि हम परमात्मा का बैठने का स्थान बनवाएँगे हम मंदिरों में दान देंगे, हम पंचकल्याणक कराएँगे, हम बड़े - बड़े विधान कराएँगे, अनुष्ठान कराएँगे तो परमात्मा हमसे प्रसन्न हो जायेगा। हम समझते है कि हम परमात्मा की प्रतिमा बनवाएँगे तो वह हमसे प्रसन्न हो जायेगा, परमात्मा की प्रसन्नता इन बाहरी दिखावे की क्रियाओं में नहीं, परमात्मा की न मंदिर बनवाने में रुचि है, परमात्मा की न पूजन चिल्लाने में रुचि है, परमात्मा की न भोग लगाने में रुचि है न संगीत बजाने में रुचि है। ये सब प्रक्रियाएँ तो हृदय को पवित्र करने में साधन मात्र हैं। जब तक हृदय की पवित्रता नहीं होती तब तक हृदय और मन में विषय-वासना-विकार-कामना की योजना चलती ही रहती है लेकिन जैसे ही आत्मशुद्धि का भाव जागृत होता है वैसे ही हृदय पवित्र हो जाता है और एक परमात्मा के रिश्ते की नई नींव तैयार होती है। हृदय को पवित्र बनाने के लिए कुछ नहीं करना है जो पराई चीजें हमने अपनी मानकर पकड़ रखी हैं उन्हें छोड़ना है। पराया यदि हृदय से हट जाये तो हृदय पवित्र होकर परमात्मा से मिल जाये। जो हृदय परमात्मा से एक बार भी मिल जाता है तो परमात्मा उसे एक दिन अपना जरूर बना लेता है।

हमारे अंदर जितनी अधिक निर्मलता आती जाती है परमात्मा अपने कदम हमारी ओर बढ़ाता जाता है । हमारे अंदर जितनी मलिनता का कचरा बढ़ता जाता है, परमात्मा हमसे दूर हटता जाता है। परमात्मा की दुश्मनी है तो मलिनता से है मलिन हृदय वाले को परमात्मा दण्डनीय धारा के तहत सजा और दण्ड भी देता है। परमात्मा की अदालत में कभी अन्याय नहीं हो सकता। धोखाधड़ी का वहाँ रंचमात्र भी काम नहीं है। हृदय की पवित्रता तभी हो सकती है जब हम सभी लोगों के प्रति हार्दिक प्रेम भावनाएँ करते हुए हर प्राणी से प्रेम रखें। दूसरे के छोटे से छोटे दर्द को संत ज्ञानेश्वर की तरह अपना ही दर्द समझें, हृदय की पवित्रता तभी हो सकती है जब हम भगवान राम के, भगवान हनुमान के, भगवान महावीर के आचरण को अपने जीवन में उतारेंगे। परमात्मा शरीर को शुद्ध कर लेने पर खुश नहीं होता, परमात्मा अच्छे कपड़े पहिनने वालों से खुश नहीं होता, अच्छा खाने वालों से खुश नहीं होता परमात्मा की खुशी अच्छी सोचने वालों में है, अच्छा व्यवहार करने वालों में हैं। इसलिए हमें अपना चिंतन उच्च

कोटि का बनाते हुए सद्व्यवहार बनाना चाहिए।

चाहे स्वर्ग हो चाहे बैकुण्ठ, चाहे जन्नत हो, चाहे मोक्ष ये सब उन्हीं सज्जन पुरुषों के लिए हैं जो परमात्मा के परम् भक्त हैं। मोक्ष और स्वर्ग बड़े ही स्वच्छ स्थान हैं जहाँ मित्रता, एकता, नैतकता हमेशा रहती है ऐसे स्थान पर परमात्मा ने अपवित्र लोगों को जाने के लिए मना कर दिया है। क्योंकि अपवित्र लोग वहाँ आकर अपनी गंदगी फैलायेंगे जिससे स्वर्ग, मोक्ष भी नरकों की तरह गंदे हो जायेंगे। बाहर शरीर स्थान भोजन शुद्धि तो दूसरे नम्बर की है प्रथम नम्बर की शुद्धि हृदय की पवित्रता है यदि हृदय पवित्र होगा तो हृदय से प्रकट होने वाली जितनी भी क्रियाएँ हैं वे सब पवित्र ही होंगी। जितने-जितने अंश में हमारे अंदर लोभ नहीं उपजता उतने - उतने अंश में हमोर अंदर शुद्धता बनती है। कषायों के अभाव में हमारे अंदर निर्मलता बनती है मेरी आत्मा तो परम् पवित्र है लेकिन गंदी दिखाई दे रही है ये गंदी वस्तु के साथ लिपटने का परिणाम है। यदि कीचड़ में पैर रखा तो यह नामुमकिन है कि हमारा पैसा गंदा न हो। आश ही, इच्छा ही वह कीचड़ है। हमें यह मानव जीवन पाकर तपस्या करना चाहिए। सोना जितना अग्नि में तपेगा उतना ही चमकेगा उसी प्रकार ये मानव जितना तपेगा उतना शुद्ध, पवित्र होकर परमात्मा से मिलेगा और परमात्मा से मिलकर वह परमात्मा ही बन जायेगा।

जीवन संघर्ष एवं आदर्श भी है।

Life is Struggle as well as an ideal too.

दरिद्र दिल नहीं हमें दरिया दिल बनाना चाहिए।

Enrich and enlarge the heart, do not empoverish and encircle.

आनन्द बटोरने में नहीं, बाँटने में है।

Pleasure lies in distribution. not in accumulation.

प्रभु भक्ति के बिना शक्ति मिलना असंभव

दुनियाँ में आकर शुद्ध ज्ञान को प्राप्त करने में सक्षम हो जायें और शुद्ध चर्या भी अपने जीवन में पैदा कर लें और महीनों उपवास करके घोर तप करें इतना होने पर हम निर्जरा के पात्र तो बन सकते हैं लेकिन मोक्ष के पात्र तो तभी बन सकेंगे जब हमारे अंदर भक्ति के बीज अंकुरित हो जायेंगे। भक्ति के बिना जप-तप-ज्ञान मंज़िल प्राप्त नहीं करा सकते भक्ति की नाव ही भव पार लगाती है, भक्ति मोक्ष महल का ताला खोलने की चाबी है, भक्ति के बल पर हम सब कुछ अपने अधीन कर सकते हैं, जब हनुमान ने उत्कृष्ट भक्ति के बल पर भगवान राम को अपने हृदय में प्रकट करके दिखा दिया, गौतम स्वामी ने भगवान महावीर को भक्ति के बल पर ही पा लिया परमात्मा की भक्ति के द्वारा ही हमें सबसे मजबूत संहनन (हड्डी) प्राप्त होता है जो लाख दवाईयाँ खाने पर भी नहीं हो सकता है, करोड़ों रुपये खर्च करने पर भी नहीं मिलता हैं। संसार में किसी का शरीर निरोग है और शक्तिशाली हैं लेकिन किसी का शरीर रोगी है और कमजोर हैं ये भेदभाव परमात्मा ने तब किया है जब आदमी ने भक्ति नहीं की हैं। भक्त पुरुष को कई शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं भक्त ही संत की दुआ और आशीष ही शक्ति बन जाता है। सारी शक्तियों में भक्ति का ही खेल हैं।

यदि प्रभु भक्ति हमारे अंदर हो तो काँटें भी फूल नजर आते हैं, मौत भी ज़िन्दगी बन जाती है, जहर का प्याला भी अमृत बन जाता है, दुश्मन भी दोस्त बन जाते हैं हमारा हृदय कमल भक्ति की ऊर्जा पाकर खिल उठता है और भक्ति का संयोग पाकर संकुचित हो जाता है। भुक्ति की भक्ति से हम गर्त में पटक दिये जाते हैं लेकिन भगवान की भक्ति से हम ऊपर की ओर उठते हैं भक्ति की ऊर्जा हीलियम गैस बन जाती है जिसके भरने पर हम परमात्मा की ओर ऊपर उठने लगते है और भुक्ति की ऊर्जा कार्बन डाई ऑक्साइड है जो हमें नीचे की ओर ले जाती है। भक्ति के द्वारा मानसिक कोशिकाएँ चार्ज होने लगती हैं जिससे हमारा ज्ञान उत्तरोत्तर बढ़ता चला जाता है भक्ति के अलावा अन्य किसी वस्तु से परमात्मा को मनाना असंभव है।

हमें अपनी शक्ति के अनुसार प्रतिदिन परमात्मा की आराधना करना चाहिए। आज कम शक्ति होने पर हम प्रभु के गुणगान करेंगे तो कल वही प्रभु हमें और अधिक शक्ति देगा। आज हम प्रमाद करेंगे तो शक्ति को गंवा बैठेंगे। परमात्मा सर्व शक्तिमान है उसके पास अनंत शक्तियाँ हैं उसकी अनुमति के बिना कोई भी शक्ति से नहीं भर सकता वह अनुमति भी उसे ही देता है जो प्रभु पर दिलो जान अर्पित कर देता है उसी पर श्रद्धा करता है। अतः परमात्मा पदार्थ से नहीं पवित्रता से खुश होता है उसे खुश रखने में ही हमारे जीवन की सफलता है।

कलाएँ वेदों से नहीं विज्ञता से उपजेंगीं

हम सभी ने बहुत पढ़ा है, पढ़ने को बहुत महत्त्व देते हैं पढ़ने के महत्त्व में तर्क बुद्धि लुप्त हो जाती है। जिसके लिए पढ़ा गया था उस प्रज्ञा का नामोनिशान मिटने लगता है। विवेक में सोचने की स्थिति मंद होती चली जाती है। कलाओं का वर्णन शास्त्रों में है लेकिन कलाएँ हमारे जीवन में उद्‌घटित होंगी ऐसा तभी होगा जब हम वेदों की बातों को अनुभव में ला देंगे। वेद का जब अनुभव करते हैं तो प्रज्ञा के बल पर ही करते हैं यदि हमारी आँखों में रोशनी नहीं है देखने की क्षमता नहीं है और सूरज का प्रकाश सारे संसार की सभी वस्तुओं को हमारे लिए दिखाए तो कोई फायदा नहीं है ठीक वैसे ही वेदों में लिखा होने से हमें तब तक फायदा नहीं होगा जब तक हमारी प्रज्ञा स्वयं प्रज्ञावान नहीं होगी।

कलाएँ वे होतीं हैं जो भीतर से बाहर की ओर उद्‌घटित होतीं हैं बाहर से अन्दर की ओर जो बातें प्रवेश करती हैं वे कला नहीं कला की जानकारी हैं। मनुष्य में 72 कलाएँ होतीं हैं तो स्त्री में 64 कलाएँ होतीं हैं। कुछ कलाएँ ऐसी होतीं हैं जो पुरुष स्त्री में एक जैसी होतीं हैं लेकिन कुछ कलाएँ ऐसी होती हैं जैसे–मुनि बनकर शुक्ल ध्यान में स्थिर होने की कला पुरुषों में ही होती है। संकल्प की तीव्र शक्ति, निडरता, आदि कलाएँ स्त्रियों में नहीं होतीं कुछ कार्य ऐसे भी हैं जो स्त्रियाँ ही कर सकती हैं, कुछ ऐसे हैं जो पुरुष ही कर सकते हैं। स्त्री के अन्दर समर्पण गुण विशेष देखा जाता है यदि स्त्री का समर्पण गुण पुरुष में समा जाये तो सोने पे सुहागा का काम करता है, क्योंकि संकल्पशक्ति के साथ समर्पण हो तो मोक्ष मार्ग तत्काल निर्मित हो जाता है।

जितनी – जितनी कलाएँ जो आदमी उद्‌घटित कर देता हैं उसकी कीमत उतनी ही अधिक हो जाती है। आज सम्पूर्ण कलाओं से युक्त कोई भी यहाँ नजर नहीं आता दो चार कलाओं से युक्त व्यक्ति की ही बहुत कीमत नजर आती है।

अतः हम सभी अनुभवों से गुजरेंगे तभी सारा ज्ञान प्रज्ञा की तह पर आ सकेगा। जानकारी की कोई ज्यादा कीमत नहीं है, जानकारी पर विश्वास तो किया जा सकता है लेकिन श्रद्धान नहीं किया जा सकता। जानकारी पराए से मिल सकती है पर श्रद्धान पैदा करने के लिए हमें अपना पसीना बहाना पड़ेगा। श्रद्धान कभी पराया नहीं होता, श्रद्धान ही विज्ञता की जड़ है और विज्ञता से ही कलाओं का समूह उमड़ पड़ेगा। विज्ञता से ही जीवन सफल हो सकता है।

मौज का चयन करो अन्यथा मौत का करना पड़ेगा

जीवन का निर्माण करना इस धरा पर जरुरी है फिर चाहे कैसे किसी भी विधि से किया जाये चाहे वह गलत हो, चाहे वह सही हो, चाहे वह मौत बुलाने की हो, चाहे मौजें पैदा करने की हो, जीवन का चयन ही करना पड़ेगा फिर चाहे वह कष्टमय जीवन हो चाहे वह कर्ममय जीवन हो और यह कार्य करने के लिए हम उसी तरह स्वतंत्र हैं जैसे आकाश में चलने के लिए सूर्य, बहने के लिए हवा पूर्णतः स्वतंत्र है। इतनी स्वतंत्रता के बाद भी हमारा चयन जब गलत हो जाता है तब ये समझ में आता है कि हम कहीं न कहीं गलत हैं यह गलती हमारी प्रज्ञा से ही हुई है। अतः मौज के लिए सत्यज्ञान होना निहायत जरुरी है और मौतों को बढ़ाने के लिए अज्ञान जरुरी है। अज्ञान वह अँधेरा है जिसमें अँधेरा भी नहीं दिखता और अन्य वस्तुएँ भी नहीं दिखती जबकि ज्ञान वह उजाला है जिसमें अपनी भी ज्योति नजर आती है और उस ज्योति के प्रकाश में अन्य सभी वस्तुएँ भी नजर आने लगतीं हैं। ज्ञान की परम ज्योति अनंत काल तक मौज का जीवन बनाती है अज्ञान की कालिमा मौतों का जखीरा जीवन में पैदा कर देती हैं।

मौत और मौज के चयन हेतु हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं। मौत के चयन में हम परतंत्र – पराधीन हो जाते हैं मौज के चयन मे हम स्वाधीनता का अनुभव करते हैं। पराधीनता हमेशा दुखदायी है मौत के जीवन में वासनाएँ हैं, भोग हैं परन्तु मौज के जीवन में ज्ञान है, सुख है। मेरी मौत ही मर जाये इसके लिए एक ही रास्ता है कि मौज को चुनूँ, मौत कई बार असमय में भी मरने को विवश करती है लेकिन मौज शांति, वेदन, अनुभवन् को मजबूर कर देती है। मौत केवल ज्ञान से ही हार मानती है और किसी से भी नहीं। आनन्द की मंजिल पाने के लिए यह जरुरी है कि पहले हम स्वयं ही आनन्दित हो जायें। जो यहाँ जीते जी कुछ न कर सकेगा वह मृत्यु को जीतना तो दूर उसे देख तक न सकेगा। मृत्यु देखने के लिए दिव्य आँख और फरिश्ते जैसा दिल व दिमाग चाहिए।

प्रकृति का यह अटल सिद्धान्त है कि भविष्य में जो हमें पाना है उसे वर्तमान में करके दिखाना पड़ेगा जो वर्तमान में दिव्य इंसान नहीं हुआ वो भविष्य में देव भी नहीं बन सकेगा। नारकी वे ही लोग बनते हैं जो वर्तमान में क्रोधी-विषयी-भोगी व कषायी होते हैं हमेशा पाप में जो अनुरक्त रहते हैं यही क्रियायें नरक में होती हैं। यदि कोई देवों की तरह दाता इस धरती पर हो तो आदमी भी उसे देवता कहने लगते हैं। अतः हम सभी को जिसका भी चयन करना है उसके लिये हमें इसी समय यहीं पर तैयारी करनी पड़ती है तभी हम लक्ष्य की प्राप्ति कर पाते हैं। लक्ष्य पाना ही जीवन की सफलता है।

सत्य ज्ञान से है जीवन गुलशन

यदि आठ स्तंभ नहीं होंगे तो ज्ञान आचरणदायी नहीं बन सकता, ज्ञान ही जीवन को नई और सही दिशा प्रदान करता है। दिशा ही जीवन में नई दशा उत्पन्न कर देती है। आज ज्ञान तो खूब हो रहा है लेकिन दिशाहीन हो रहा है। सही बात तो यह है कि जानकारी हो रही है, ज्ञान नहीं। इसलिए इतनी जानकारी होने पर भी ज्ञान दिखाई नहीं दे रहा है। जानकारी व्यक्ति में घमण्ड पैदा कर देती है जबकि ज्ञान व्यक्ति में विनम्रता पैदा कर देता है। ज्ञान ही व्यक्ति के जीवन को फूलों सा खिलाकर गुलशन बना सकता है। ज्ञान की गंध सुगंधमयी व्यवहार पैदा कर देती है।

ज्ञान के आठ स्तंभों में प्रथम स्तंभ शब्द के उच्चारण को शुद्ध बोलना व्यंजन और स्वर को साफ बोलना आज व्यंजन और स्वर की नई परिभाषा में गूँथ दिया है कि जो गाया जाये वह स्वर जो गुनगुनाया जाये वह व्यंजन है अथवा जो व्यंजन मुँह के बाहर जिसकी सहायता से आये वह स्वर है और जो मुँह के अंदर रहे वह व्यंजन है। दूसरा स्तंभ शब्द का सही अर्थ समझना है। सही अर्थ से मतलब अनेकांत है केवल शब्दार्थ ही नहीं। तीसरा स्तंभ शब्द कहते समय उसके भावार्थ में उपयोग लगाना, चौथा स्तंभ सच्चे देव शास्त्र गुरु की तथा अपने बड़ों की यथा योग्य विनय करना। यदि नहीं करता वहाँ एक स्तंभ टूट जाता है।

पाँचवा स्तंभ समय की कीमत करना चाहिए जिस समय पर जो कार्य करना हो उसी समय पर वह काम होना चाहिए आगे-पीछे नहीं। पूजन ब्रह्म मूहुर्त में ही होना चाहिए स्वाध्याय के समय नहीं स्वाध्याय भोजन के वक्त नहीं होना चाहिए। छटवें स्तंभ में कहा कि उपह्नव वहाँ होता है जहाँ जिससे ज्ञान प्राप्त हो वह कितना भी छोटा हो उसका नाम नहीं छिपाना चाहिए। ज्ञान देने वाले गुरु का नाम छिपाने से मायाचारी हो जाती है। अहं आ जाता है और जहाँ अहं आता है वहीं यह स्तंभ टूट जाता है।

सातवें स्तंभ को बताया कि हमें ज्ञान बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए जो आलसी होते हैं, सत्यज्ञान में प्रयत्न नहीं करते वे इस स्तंभ को अपने जीवन में खड़ा नहीं कर पाते हैं और अंतिम स्तंभ को बताते हुए कहा कि यह आठवां स्तंभ ऐसा है कि जिससे तुम्हें ज्ञान प्राप्त हुआ है। उसका अनादर न मन से न कभी भी वचन से प्रकट हो न कभी काम से प्रकट होना चाहिए। क्योंकि ज्ञानदाता गुरु का अनादर ही इस स्तंभ को चूर-चूर कर देता है।

जिसके जीवन में ये स्तंभ होंगे वही व्यक्ति अपनी ज़िंदगी में मजबूत नींव डालकर सुंदर भवन बना सकता है। यदि स्तंभ ही नहीं होंगे तो मकान बनने की कोई संभावना हो ही नहीं सकती। इन स्तंभों से ही जीवन में खुशबू लहराती है तथा ये चमन खुश्बूमय हो जाता है। ज्ञान ही मंज़िल पाने का आधार है। ज्ञान के ये आठ स्तंभ ही मंज़िल पर पहुँचने के लिए सोपान निर्मित करते हैं। अतः हम सभी के जीवन में यह बात हमेशा रहना चाहिए कि ये स्तंभ मेरे जीवन में हैं या नहीं? यदि नहीं हैं तो स्तंभ बनाईये और यदि हैं तो और मजबूत करिये तभी यह जीवन का महल खड़ा हो सकता है।

शक्ति नष्ट करने वाला एक प्रचलित कार्य है, विवाह।

Marriage is popular energry extinguisher.
OR
Valour wames popularity after marriage.

प्रयत्न और युक्ति असंभव को भी संभव बना देती है।

Practice and device makes impossible to possible.
OR
Practice makes a man perfect.

गुण की सुंदरता सुगंध फैलाती है।

The beauty of virtue spreads orama.

सीरत के बिना सूरत फिजूल है

जीवन में यदि खुश्बू नहीं, जीवन में यदि प्रेम नहीं, जीवन में यदि धर्म नहीं तो खूबसूरत होने पर भी हमारा सारा जीवन भार की तरह बोझिल है। जिस फूल में खूश्बू नहीं होती उस फूल को कोई पसंद नहीं करता, खुश्बू से ही गुलाब की कीमत है, खूश्बू से ही चम्पा, चमेली, बेला पुष्पों की कीमत है। जिस प्रकार फूलों के पत्तों और सुन्दर रंगों के फूल की कीमत नहीं होती ठीक वैसे ही धन, शरीर, शृंगार अथवा खूबसूरत होने से व्यक्ति की कीमत नहीं होती। कीमत व्यक्ति के व्यक्तित्व से है, व्यक्ति के गुणों से है, किसी शायर ने कहा है –

''सीरत नहीं अच्छी तो सूरत फिजूल है।
जिस गुल में बू नहीं वो कागज का फूल है।''

परमात्मा ने सभी इंसानों को एक कोरी कॉपी देकर भेजा है और कहा है कि दुनियाँ में जाओ और जाकर देखो, लखो और अनुभव करके इस कॉपी पर लिखो जितना अच्छा लिखोगे उतना अच्छा फल पाओगे, ईश्वर ने लिखने के लिए दो हाथ भी दिये हैं। दुनियाँ में सभी के स्वतंत्र हाथ हैं, स्वतंत्र कापी है। स्वतंत्र लखना है, यही कारण है कि सभी की किताब पर एक सा नहीं लिखा है। सब अलग-अलग लखते हैं और अलग-अलग लिखते हैं, जो लख सकता है या लखता है वही लिख सकता है। लिखने के लिए लखना जरूरी है। लखने के लिए लिखना जरूरी नहीं है। संत पहले लखते हैं फिर लिखते हैं, कवि पहले लखता है फिर कविता लिखता है। कविता कवि के भाव की अभिव्यक्ति है।

भगवान रामचन्द्र जी के चरण आचरण के कारण पूज्य बन गये, आचरण जिसके पास होता है वे चरण मंदिर में रखकर पूजे जाते हैं और आचरण हीन चरण मरघट पर बेरहमी से जला दिये जाते हैं। सीताजी भी पूज्यनीय हो गईं, भगवान रामचन्द्र जी के आचरण का अनुकरण करके। आचरण ही जीवन को महान बनाता है। आचरण ही इंसान को भगवान की ओर ले जाता है, आचरण मोक्ष जाने के लिए पंख है, आज आदमी आचरण करता है तो उसमें भी मायाचारी करता है, उसमें भी भगवान को धोखा देता है, शायद इंसान को यह नहीं मालूम कि ईश्वर को धोखा नहीं दिया जा सकता है, धोखा अपने को दिया जा सकता है। इंसान ही शैतान और भगवान बनते हैं। उन्होंने कहा –

''इंसान न होते तो न होते,

इंसान न होते तो शैतान न होते।''

इंसान की इंसानियत है कीमती जहां में,

इंसान न होते तो भगवान न होते।।''

अपने जीवन की कीमत सूरत से नहीं सीरत (गुणों) से बनाई जाये और ईश्वर ने दिमाग भी दिया, पैर भी दिये, हाथ भी दिये, आँख भी दी सब दिया है, यदि आज हमने इसका सदुपयोग न किया तो अंत में परमात्मा ये सब वापिस ले लेगा। अतः हम सभी जीवन का सदुपयोग अच्छे आचरण को धारण करके करें तभी हमारा जीवन मंगलमय हो सकता है। गुणों से भर सकता है और सफल हो सकता है।

धर्म के अभाव में कई बार मृत्यु है।

There are so many deaths in the absence of the religion.

कर्मक्षय हेतु की गई भक्ति मोक्ष प्रदायी है।

Devation done for the destruction of karms is the way to salvation.

परमात्मा का गुणगान पूजन नहीं, पूज्य बनने का साधन है।

Hymns are not prayers but media for divinity.

मिट्टी के नहीं, मन के घर को जगमगाओ

हर व्यक्ति की ख्वाहिश है कि हमारा घर रौशनी से इस तरह जगमगाए कि उसमें कभी अँधेरा न होने पाये ये बात सही है कि संसार में रहने के लिए दुनियाँ चलाने के लिए अज्ञान और अहं का अँधेरा जरूरी है लेकिन फिर भी इसे कोई पसंद नहीं करता है दिल के मकां में रौशनी का दीपक जगमगाने के लिए सिर्फ सत्यज्ञान की आवश्यकता है इसके अभाव में दीपक भी न जल सकेगा, गौतम स्वामी ने अपने दिल को इस तरह जगमगाया कि सारा ब्रह्माण्ड उनके दिल में झलकने लगा, दिल को इतना साफ किया कि अँधेरे का एक कण भी वहाँ नहीं रह पाया, गौतम स्वामी की यह अवस्था को देखकर हमारे मन में आज विडम्बना यह है कि लोगों ने भी यथाशक्ति अपने दिल को साफ किया है, कर रहे हैं और पटाखे फोड़कर मिष्ठान खाकर एवं नये कपड़े पहिनकर दीपावली मना रहे हैं इससे मन का घर अँधेरों से भर रहा है और मिट्टी का घर साफ नजर आ रहा है। जब बाहर सफई होती है तब भीतर के अंतर्मन में अँधेरा होता है और जब बाहर में सफाई नहीं होती तब अंतर्मन में उजाला होता है।

मिट्टी का घर साफ करते-करते हमें ज़िंदगी हो गई लेकिन कभी आनंद की अनुभूतियाँ न हुईं और मजा यह कि यह सब आनन्द के लिये किया जा रहा है। दीवाली के दिन यदि हम अपने आचरण में बदलाव लायें और भविष्यत विचारों में परिवर्तन लायें तो शायद मेरे वास्तविक घर के एक हिस्से में एक छोटा सा ज्योतिर्मय दीप जल उठे। एक बार भी महावीर, राम, गौतम, हनुमान जैसा दीप मेरा जल गया होता तो मेरे घर में उजाले की किरण वृद्धिंगत होती चली जाती। सत्य की ज्योति से हमारा मिट्टी का दिया कंचन का बन सकता है और अज्ञान - असत्य व अहं के अँधेरे से हमारी कंचन सी काया मिट्टी में मिल जाती है। मिट्टी की काया में मिट्टी का मन ही ज्ञान की तीली से चिराग को रोशनमय करेगा। सदाचार (धर्माचरण) की माचिस न होती तो ज्ञान की तीली नहीं जल सकती थी और मिट्टी का मन रोशन नहीं हो सकता था।

परमात्मा का स्थान न घर है, न मन्दिर, न मस्जिद, न पहाड़, न नदी, न गिरजागर उसका तो एक ही स्थान है वह है हृदय। हृदय को परमात्मा की रोशनी से जगमगाना है तो यह पूर्णतः सत्य है कि परमात्मा से कनेक्शन लेना पड़ेगा, परमात्मा का पॉवर हाऊस ही दिल के मकां को उजाले से भर सकता है। हृदय को भरने वाला केवल परमात्मा ही है अन्य किसी से हृदय को भरना असंभव है। यदि दुनियाँ की सारी वस्तुएँ हृदय में भर दें तब भी हृदय का एक

कौना भी नहीं भर पायेंगे शरीर में हृदय जितना कोमल कोई स्थान नहीं यदि हृदय न होता तो किसी में भी दया न होती, प्रेम न होता हृदय के बिना धरती पर इंसान भी नहीं हो सकता है। इंसान को भगवान के द्वार पर पहुँचने के लिये अपने घर को थोड़ी सी रोशनी से जगमगाना जरूरी है। अँधेरे घरों में भगवान का नहीं, शैतान का अड्डा होता है। भूत प्रेत अँधेरे मकानों में ही अपना निवास बनाते हैं। अतः अन्तर्मन को जगमगाओ जिससे जीवन ज्योतिर्मय हो सके।

संन्यास का फूल कभी भी खिल सकता है।

The flower of asceticism can bloom at any time.

क्षत्रियों के मस्तिष्क की उपज एक क्रांति है।

Fightr's mind breeds a revolution.

संत समागम के बिना मानवता नहीं हो सकती।

Humanity can never be without the company of sants.

धर्म की मांग धर्मी के ही हृदय में होती है।

The demand of religion always remain in the heart of a religious.

धर्म मुक्ति पाने को और अर्थ काम के लिए होता है

दुनियाँ में चाहे महापुरुष हो या कमजोर आदमी ये सभी चार कार्यों को करके अपना जीवन व्यतीत करते हैं कोई लोग अर्थ के लिए अपनी सारी ज़िंदगी गुजार देते हैं, ऐसे लोगों का जीवन प्रायः अर्थ के लिए ही शुरू होता लेकिन अंत में रात काम के लिए होती है। प्रत्येक व्यक्ति अर्थ संचय में लगा हुआ है लेकिन अर्थ संचय के भीतर काम अदृश्य रूप में छिपा बैठा हुआ है। यदि काम का वेग भीतर प्रेरक के रूप में नहीं बैठा होता तो अर्थ व्यवस्था फैल जाती। काम ही संसार के सारे गलत व अच्छे कार्य कराने में प्रेरक है और काम वह ऊर्जा है जो ज़िंदगी को गतिमान बनाती है ऊर्जा के बिना कोई रह नहीं सकता ऊर्जा जीवन का वह अंग है जो निरंतर बहती रहती है। ऊर्जा का बहाव प्रतिपल चौबीस घंटे हो रहा है यह जरूरी नहीं कि काम स्पर्शन इन्द्रिय से ही होता है काम पाँचों इन्द्रियों से होता है वासना सभी इन्द्रियों मे पाई जाती है।

जब मन इन्द्रियों में जुड़ जाता है तो ऊर्जा काम वासनाओं की ओर बहती है और जब मन चेतन से जुड़ जाता है तो ऊर्जा निष्काम होकर परमात्मा की ओर बहती है। ऊर्जा के बहाव में ज्ञान और अज्ञान दोनों ड्राइवर का काम करते हैं अर्थ के कार्यों का सम्बन्ध काम की व्यवस्था के लिए है। धर्म का पूरा सम्बन्ध मुक्ति की व्यवस्था के लिए है, हम धर्म के पथ पर खड़े होंगे या अर्थ के पथ पर खड़े होंगे दोनों में से कोई एक पथ तो चुनना ही पड़ेगा। हमारा सारा भविष्य पथ चयन पर ही निर्धारित होता है। पथ के चयन में सत्य ज्ञान की अहं भूमिका होती है ।

अर्थ का संचय जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए तो होना चाहिए लेकिन अर्थ के लिए धर्म को नीलाम करके ज़िंदगी को बरबाद नहीं कर देना चाहिए, धन से जीवन ज्यादा कीमती है जीवन न हो तो धन व्यर्थ है। धर्म एक वह पवित्रता है जो धन व जीवन में आनंद का कोष बढ़ा देता है। यदि दुनियाँ में धन बहुत होता और जीवन नहीं होता तो ज़िंदगी दो कोड़ी की भी नहीं होती जैसे दूध की कीमत घी से मापी जाती है उसी तरह ज़िंदगी की कीमत धर्म से अथवा जीवन के जीवंत अनुभव से आंकी जाती है। धर्म ही जीवन को ऊर्ध्वगामी उज्ज्वलशाली बनाता है। धर्म के बिना इंसान जानवर के तुल्य है। अर्थ जीवन को चलाने के लिए है। जीवन को आनंदित करने के लिए नहीं जीवन का आनंद केवल धर्म के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है, अन्य के द्वारा नहीं।

भूखे पेट को भरना सरल है भूखी आँखों को भरना कठिन

ऐसा है कौन जिसकी ये तमन्ना न हो कि हम जो वस्तु चाहें वह वस्तु हमें तत्काल न मिले। हर आदमी चाहता है हम जो भी चाहें उसके मिलने में हमें रंच भी देर न लगे आज आदमी को पेट की भूख कम है पेटी की भूख ज्यादा है। भूखे पेट को तो एक बार भरा जा सकता है। लेकिन भूखी आँख को भरना असंभव सा प्रतीत होता है यदि आदमी यहाँ दुखी नजर आ रहा है तो पेटी की भूख के कारण ही आ रहा है पेट की भूख तो आवश्यकता के अन्तर्गत आती है उसको बुझाना जरूरी है। लोग पेट के लिए भी अपराध कर रहे हैं लेकिन ऐसे लोग न के बराबर हैं। अपराधों की अधिकता पेटी को भरने में है जीवन में आवश्यकता तो अविष्कार को जन्म देती है लेकिन इच्छाएँ अपराध को जन्म देतीं हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए धर्म की भी आज्ञा है। प्रकृति भी सहमत है लेकिन इच्छाओं को धर्म में अधर्म कहा गया है इच्छा करने वाले लोगों को सामान्य जनता भी अच्छी दृष्टि से स्वीकार नहीं करती, इच्छाएँ और कुछ नहीं मानवता का खून खच्चर हैं यदि इच्छाओं को हम समाप्त करके जियें तो मानव परमात्मा का प्यारा बन जाता है, परमात्मा भी उसे ही पसंद करता है जो उसके अनुसार जीवन यापन करे उसका अतिक्रमण करने वाले लोग परमात्मा के आशीर्वाद से वंचित रह जाते हैं और दुनियाँ की संपदा पाकर भी दुखी रहते हैं। अपने जीवन में शुद्धता भी तभी आती है जब हम इच्छाओं को तिलांजलि देते हैं।

आवश्यकता को जन्म देनेवाली प्रकृति है लेकिन इच्छाओं को जन्म देने वाली प्रकृति नहीं अंतरंग का मेरे पन का भाव है। यह इसां मेरा - मेरा कहते जीता है, जिंदगी भर यह बोझ लिए अंत में मर जाता है फिर जिसे मेरा कहता है वह साथ में नहीं जाता तो दुख उठाता है। एक भिखारी को देखें यह भोजन के लिए नहीं घूम रहा है यदि भोजन माँगे तो तत्काल उसे घरों में मिल जाये। इच्छाएँ उसे घुमा रही है, एक बड़ा व्यापारी अपनी कारों में देश विदेश व्यापार हेतु घूम रहा है यह भी आवश्यकता हेतु दो बार के भोजन के लिए नहीं भटक रहा है ये अपने आपको धनाढ्य घोषित करना चाहता है। स्वयं को पूँजीपति घोषित करना चाहता है इसलिए घूम रहा है। यदि देखा जाये तो भिखारी और उस सेठ में कोई अंतर नहीं है भिखारी छोटा इच्छुक है जबकि सेठ बड़ा इच्छुक है। इच्छा के गर्त को सिकंदर जैसे वीर योद्धा, चक्रवर्ती जैसे षट्खण्डाधिपति भी न भर सके तो हम लोग उनके सामने कुछ भी नहीं हैं। आज आदमी वस्तु का सदुपयोग कम एकत्रित ज्यादा कर रहा है, वह एकत्रित कर ले तब भी दुखी है जहाँ इच्छाएँ अपना फन उठाये हों वहाँ एक क्षण सुख से बैठना संभव प्रतीत नहीं होता, संतोष रूपी धन को इच्छाएँ ही नष्ट कर डालतीं हैं और आश्चर्य की बात यह है कि 20 वर्ष के बाद आदमी का जीवन 80 प्रतिशत आशाओं के हवाई किले खड़े करने में गुजरता है। अतः हम सभी भूखी आँख वाले न बनें तभी जीवन में आनंद के फूल खिल सकेंगे।

पूजन जीवन के लिए समयसार है

परमात्मा की पूजन ज़िंदगी की धारा को बदलने के लिए एक अचूक रामबाण औषधि है। भगवान की पूजन को जीवन में अपनाए बिना कोई भी इंसान अपने जीवन को सत्य के ढ़ाँचे में नहीं ढाल सकता है। आराधना ही साधना की जननी है। साधना ज़िंदगी की वह हकीकत है जिसमें अंतरंग विचारों को उद्घाटित किया जाता है। साधना के बल पर संत साकी को प्रकट कर देता है। पूजन ही प्राणी को पूज्य बनाकर पूज्यता के लक्षण जीवन में ला देती है। यदि दुनियाँ में परमात्मा की आराधना नहीं होती तो कोई भी अपने जीवन का समय सार पाने में सफलता हासिल नहीं कर पाता। पूजन ही परमात्मा से साक्षात्कार करने का एक सुंदर और सुगम तरीका है। पूजन के माध्यम से ही भक्त और भगवान का फासला कम हो जाता है।

पूजन करने का अंतिम निचोड़ है कि अपनी विचारधारा को निर्मल बनाना निर्मल परिणति न हो पाए तो परमात्मा की पूजा उचित फलदायी नहीं बन सकती है। निर्मल परिणाम हीलियम गैस की तरह है जैसे गुब्बारे में हीलियम गैस भर जाने पर गुब्बारा आकाश की ओर उठकर परमात्मा की ओर उठने लगता है ठीक वैसे ही परमात्मा की पूजन से भक्त आकाश की ऊँचाईयों को छूता हुआ स्वर्ग में इन्द्रादि बनता है फिर एक दिन वही भक्त पूजन के बल से निर्वाण पद को प्राप्त कर लेता है।

शिक्षा की जड़ें कड़वी जरूर हैं, लेकिन फल मीठे हैं।

Thought Yet roots of education are bitter yet its results are sweet.

मृत्यु का भय मोह पैदा करता है, निर्भयता
मोक्ष को।

Dread for death generates infalutation for life,
fearlessness paves the path of redemption.

परमात्मा की सच्ची पूजन पूज्यता अवश्य देती है।

Cardial prayer of god, certainly gives divinity.

रोने के पीछे रोना, हँसने के पीछे हँसना

जीना ही जीवन नहीं बल्कि आनंद की अनुभूति के साथ जीना ही जीवन है। जीवन के लिए आनंदित होकर रहना जरूरी है। अन्यथा जीते तो गधे और कुत्ते आदि जानवर भी हैं। बस वो अपने आनंद से विहीन हैं अपनी अनुभूति भरे आनंद से जो परिचित नहीं हुए हैं उनका जीवन रोता हुआ गुजरता है, शायद रोती हुई ज़िंदगी को दुनियाँ में कोई जीवन नहीं कह सकता। हँसती हुई ज़िंदगी कई रोने वालों को हँसा सकती है, लेकिन रोती हुई ज़िंदगी कई हँसने वालों को चिंतित कर सकती है लेकिन रुला नहीं सकती ''हँस सकता है कोई फकीर या दीवाना। वरना हँसना भी जुर्म है ज़िंदगी में'' हँसना तो सहज है हमें सारी मशक्कत, विवेक के तंतु खोलने की है। सच्चा ज्ञान ही जीवन को खुशहाल ओर असत्य ज्ञान ही जीवन को फटेहाल बना देता। आज हम अपनी ज़िंदगी में रोते है तो भविष्य भी रोता हुआ ही होगा। यदि आज हमनें सच्चा ज्ञान पाकर हर असत्य को ठुकरा दिया है तो हमारा जीवन हँसता हुआ होगा। हँसता हुआ जीवन हँसते हुए भविष्य का प्रतीक है। अत: रोने के पीछे रोना और हंसने के पीछे हँसना है।

हर आदमी की ख्वाहिशें हैं, तमन्ना है कि जीवन की अंतिम साँसों तक खुशहाल रहें एक भी साँस में भी हमें दुख का अनुभव न हो। लेकिन यदि चाह से काम हो जाता तो हमें संसार में कोई भी आदमी दुखी दिखाई नहीं देता। सुख की आश में आदमी दुख को सहन करने के लिए राजी हो जाता है दुख का भविष्य यदि पता चल जाये तो उसका वर्तमान में ही दुखित जीवन हो जाता है। वर्तमान की ज़िंदगी पर ही हमारा भविष्य निर्मित होता है। वर्तमान की नींव पर ही हमारा भविष्य का महल खड़ा होता है। यदि हमारी नींव मजबूत है संयम - ज्ञान - दृढ़ता से भरी हुई है तो हमारा महल बहुत ही सुन्दर और संस्कारित होगा जो भविष्य को उज्ज्वलता की ओर ले जायेगा। यदि हमारा भविष्य पापरत अज्ञान, असंयम व गलत है तो यह बात तर्क सिद्ध है कि हमारा वर्तमान आलस - मूर्खता - अहंकार व गलत बातों की मान्यता से भरा हुआ था।

एक साधक का लक्षण है कि प्रसन्नचित्त रहे यदि साधक एकांत में होगा तो ध्यान की अनुभूतियों का आनंद ले रहा होगा यदि वही साधक लोगों के बीच में होगा तो प्रेम वात्सल्य प्रसन्नता की अनुभूति में खेल रहा होगा वह अकेले में हो या सभी के बीच में वह आज आनंदित है। इसलिए कल भी आनंद के फूल ही खिलेंगे। फूल हमने अगर लगाये हैं तो हमारे बाग में भविष्य में फूल ही खिलेंगे काँटे लगाने पर काँटे ही काँटे हैं अत: आज हम सभी अपनी ज़िंदगी प्रसन्नता, खुशहाल में गुजारें रोकर नहीं तभी हमारा भविष्य व जीवन आनंद के फूलों से भर सकता है।

रूप को नहीं रूह को संवारना है

ऊर्जा भरने का केन्द्र बिन्दु है – विनम्रता। भीतर के निर्मल परिणाम को स्पष्ट तरीके से उद्घाटित करना है मृदुता। अनंतकाल तक सुख के साथ जीने के लिए पहला कदम बढ़ाना है – मार्दवता। निगोद की यात्रा से निकलकर दुबारा निगोद की यात्रा पे जाने के लिए राजी न होना है – मार्दवता। दारुण दुख व हुण्डक संस्थान से बचने का फार्मुला है – मृदुता। मृदुता है नीच गतियों से उभरने की योजना, लघुता ही प्रभुता पाने का परम् पथ है। प्रभुता है ज़िंदगी में जहर भरने का तरीका। नीच गतियों से उभरने की योजना है – विनम्रता। यशकीर्ति व पुण्यफलों पर गर्व न करके कोमल परिणामी रहना है – मार्दवता। अहं जैसे महारोग के बीच खाद पानी न देना है – मार्दवता। मैं के सम्यक बोध का विमोचन मृदुता का उद्घाटित होना है। अधोगामी नहीं उर्ध्वगामी यात्रा का पैगाम है – मार्दवता। मन को समझकर मद को मौत की सजा देना है मृदुता। स्वाभिमान की सुरक्षा व अभिमान को तिरस्कृत करना है मार्दवता। नपुंसकता का नहीं पुरुषत्व का परिचय देना है – मार्दवता। पर वस्तुओं पर अधिकार मिलने पर गुमान को अपने हृदय में फटकने देना है – विनम्रता। अहं तथा पूर्व संचित कर्म को झाड़ना है – विनम्रता। झुकना पात्र भरने व अमीर बनने की अदा है। अपने अस्तित्व को विस्तृत करने का अभियान चलाना है – मार्दवता। प्रभुता, शक्ति, तपादि की वरियता को तिलांजलि देना है – मृदुता। स्वप्न जैसे जगत पर परम् रत्नों को पाने का आयाम है मार्दवता। दुनियाँ की हर वस्तु अपनी ओर खींचने की कला है – मार्दवता। हठ हटाकर हरि हथियाना अथवा हरि को हृदय में पाना है विनम्रता। अंतरंग ज्ञान का बाहर में इजहार होना है – मार्दवता। ज्ञान के फल ही चरित्र के वृक्ष को विनम्रता से झुकना सिखाते है। बोध के बीजों को अंकुरित होने का व्यक्तीकरण ही मार्दवता है। कर्तव्य – अकर्तव्य को जानकर कर्तव्य निष्ठ होना विनम्रता का प्रतीक है। कर्तव्य की गोद में तथा धर्म की उपजाऊ भूमि में मार्दव का बीज वृक्ष का रूप ले लेता है। मार्दवता की शर्त मंजूर होने पर ही गुण मन में अपना स्थान बनाते हैं। गुमान दुनियाँ में गुम हो जाने का सूत्र है। ऊर्ध्व गमन करने का सूत्र है – विनम्रता। आराधना दूसरी सीढ़ी है, मोक्ष की प्रथम सीढ़ी है मार्दवता। अनंतकाल तक निगोद की यात्रा पर जाकर गम का बोझ उठाना है अहं तो असंज्ञियों की सत्ता का पूर्णतः विनाश कर देना है मृदुता।

रोशनी के आँगन में अँधेरा न खिलाओ

यदि अँधेरे जंगल में चारों ओर अँधेरा छाया हो तो कोई आश्चर्य कारी बात नहीं समझी जायेगी, यदि उजाले घर में उजाला न हो तो तब भी कोई आश्चर्य नहीं समझा जायेगा, लेकिन यदि रोशनी के आँगन में अँधेरा अपना कब्जा जमा ले या अँधेरा अटखेली करता हुआ उजाले को भगाने लगे तो आश्चर्य ही नहीं महा आश्चर्य लगेगा। यह अँधेरा हर आदमी के दिल में छाया हुआ है बाहर के अँधेरे में हमें अपने गुण तत्त्व भी दिखाई नहीं देते हमारे जिगर के आँगन में उजाला ही उजाला था लेकिन हमारी भूल के कारण हमारे उजले सूर्य पर अँधेरे ने अपनी पर्त इतनी गाढ़ी और मोटी बनाई कि हम स्वयं ही भूल गये कि हमारे भीतर भी दिव्य प्रकाश की अद्वितीय किरण मौजूद है।

अंधकार को नचाना उजाले का बाँये हाथ का खेल था लेकिन उजाला ही नाच रहा हो तो आठवाँ ही नहीं दसवाँ आश्चर्य पृथ्वी पर है। अँधेरों को उजाला हमेशा धमकाता रहा है, डराता रहा है अँधेरा हमेशा भागता रहा है। लेकिन उजाला डरे, धमके व भागने लगे तो अर्थ साफ है कि उजाला अपना अस्तित्व भूल बैठा है। हर आदमी में परमात्मा की अद्वितीय रौशनी दमक रही है, अविरल चमक रही है लेकिन संसार के विषय भोगों का अँधेरा हमारी अज्ञानता का फायदा उठा कर रौशनी को आँखे दिखाने लगता है और हम डरे डरे से भयभीत होकर संसार में जीते मरते रहते हैं। मौत तभी तक हमारे पास आती है जब तक हम उजाले से परिचित नहीं हैं। मरण और अँधेरा दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं।

आज परमात्मा का परम दीप तो नहीं है लेकिन परमात्मा जैसा या परमात्मा होने वाला चिराग ''संत'' इस दुनियाँ में है। परमात्मा साक्षात् चिराग है तो संत परमात्मा से कम वॉल्टेज वाला चिराग है। आज परमात्मा का चिराग मिलना असंभव है क्योंकि धरती पर आज न राम हैं, न कृष्ण हैं, न महावीर हैं, न हनुमान हैं ये परम ज्योतिर्मय चिराग थे। आज आइने में दिखने वाला सूरज तो है लेकिन सीधा सूरज का प्रकाश धरती पर नहीं है। आज परमात्मा के दिव्य प्रकाश को सहन करने की शक्ति भी नहीं है। परमात्मा सर्व ज्ञाता है यदि इस धरती पर परमात्मा के दिव्य प्रकाश को वहन करने वाला मीरा, हनुमान जैसा गौतम जैसा कोई भक्त होता तो भगवान इस धरती पर जीवित होकर अवश्य विचरण करता परमात्मा की परम भक्ति ही जमीं पर परमात्मा को बुला लेती है। परमात्मा ही किसी के दिल के कोने में रोशनी का चिराग जला सकता है।

जब हम एक दूसरे के प्रति सद्भाव प्रेम रखेंगे, किसी

को कष्ट नहीं देंगे, गैरों के दर्द को अपना दर्द समझेंगे तभी तक हमारे अन्दर दीप सा जलने की संभावना होती है। यदि हमारे अन्दर दूसरों को अपने से नीचा दिखाने की भावना बनती रहती है या हम हमेशा दूसरों का बुरा सोचते रहते हैं ऐसे लोगों का चिराग जलता नहीं बल्कि बहुत शीघ्र ही बुझ जाता है। अतः हमें अपने परम ज्योतिर्मय आँगन में हमेशा उजाले का ही निमंत्रण करना चाहिए अँधेरों को निमंत्रित किये अनन्त काल बीत गया लेकिन अँधेरे का अंत नहीं आया न ही जन्म मरण मिटा। यदि इतना उजाले के लिये श्रम करते तो हम भी आज इस जहां में सर्वज्ञता को पाकर सारी दुनियाँ जानने वाले परम ज्योतिर्मय चिराग हो जाते और हमेशा-2 जीवन में सुखी रहते।

पवित्र हृदय के बिना पवित्रता नहीं आ सकती।

Purity can be granted only in a pious heart.

परमात्मा पुण्य कार्य को नहीं हृदय चाहता है।

God wants no holy deeds but one holy heart.

पवित्र हृदय में परमात्मा का निवास है।

God dwell in a pious heart.

धर्म अच्छे लोगों के लिये है मूर्खों के लिए नहीं।

Religion is for the nobles not for fools.

Or

Religion is for respectable not for unserpectable

समय का सदुपयोग ही जीवन है

सीरत नहीं अच्छी तो सूरत फिजूल है।
जिस गुल में बू नहीं वो कागज का फूल है।

जिन्दगी भी कुछ ऐसी ही है जैसे पानी की बूँद। प्रत्येक प्राणी परमात्मा के दर से कोई न कोई कॉपी लेकर जरूर आता है। ये बात अलग है कि कौन कैसी ला पाता है। और हर प्राणी को लिखने के लिए दो हाथ दिये गये हैं जिनसे तुम्हें यह कॉपी लिखनी है। अच्छी लिखना हो तो भी हाथ स्वतंत्र हैं, खराब लिखना हो तो भी ये हाथ स्वतंत्र हैं। खुद को ही लिखना है, लिखने के साथ दो पैर दिये हैं। देखने के लिए दो नेत्र दिए हैं। चलने को चरण और धारण करने के लिए आचरण दिया है। सब कुछ अपने पास है। यह सब परमात्मा ने एक शर्त पर दिया कि यदि इसका सदुपयोग न किया तो वापस ले लिया जायेगा और सदुपयोग किया तो दुबारा भी मिलेगा। यदि इनका सदुपयोग करना भूल गये तो इसमें गलती परमात्मा की नहीं तुम्हारी या तुम्हारे परिवार वालों की होगी।

आज का आदमी बातें बनाने में बहुत होशियार है। एक उदाहरण है सभी लोग खब्बू चाचा की तरह हैं। रास्ते में खब्बू चाचा मिल गये तो उनसे पूछा कि आप तो बहुत शरीफ आदमी नजर आते हैं आप शराब तो पीते ही नहीं होंगे वे बोले शराब तो हम छूते भी नहीं सोचा खब्बू चाचा तो सुधर गये फिर पूछा कि आप रात में भोजन भी नहीं करते होंगे बोले हम शाम होने से पहले ही भोजन कर लेते हैं। फिर पूछा कि आप तो दर्शन पूजन भी करते होंगे बोले हाँ।अब तो आप में कोई कमी नहीं रह गई तो वे बोले कि और तो सब ठीक बस हमें झूठ बोलने की आदत है। कितना होशियार और चालक है आज का मनुष्य हर जगह पर बेईमानी करता है।

जरा सोचो हम कोरी कॉपी लेकर आये थे और इसमें क्या लिख रहे हैं कैसी राइटिंग लिख रहे हैं आखिर इसमें लिखा क्या है? यह भी हमें ही सोचना पड़ेगा। हम अपने जीवन में कोरी कॉपी जरूर लिखें लेकिन अच्छी तरह से। नहीं तो परमात्मा के दर पर यदि तुम्हारी कॉपी खोली जायेगी तो क्या जवाब दोगे? यदि तुमने इसका सदुपयोग किया तो ये जीवन दुबारा मिल जायेगा और यदि सदुपयोग नहीं किया तो दुबारा न मिल पायेगा। अतः अपने जीवन का सदुपयोग करना परमावश्यक है।

गर चिराग से न जले तो आग से जलना पड़ेगा

हर आदमी को ये दुनियाँ फिजूल में गुजारने के लिए नहीं मिलती, निठल्ले बैठकर कोई आदमी अपनी ज़िन्दगी को गुजार नहीं सकता, जीवन को जलाए बिना कोई रह नहीं सकता, दुनियाँ में एक वे लोग हैं जो अपने मिट्टी के दिये को विषयों की आग की भट्टी में जलाकर राखकर लेते हैं एक वे लोग हैं जो अपने मिट्टी के चिराग में तेल भरकर किसी ज्योतिर्मय चिराग से अपने चिराग को ज्योतिर्मय कर लेते हैं। यहाँ आकर जलना तो सभी को पड़ता है जलने के तरीके अलग- अलग हो सकते हैं बिना आग के प्रकाश नहीं हो सकता। जले बिना कोई रौशनी से नहीं भर सकता जलने के लिए पहले जला हुआ चिराग ढूँढ़ना पड़ता है। समझदारी यही है कि हम आग से नहीं चिराग से जलें।

दुनियाँ की विषय भोग की आग में जलने के लिए सत्यता को पाना जरूरी नहीं है दुनियाँ की धधकती आग में जलना बहुत सरल है हम अभी तक पुरुषार्थ हीन होकर जिये इस कारण हम चिंताओं की लपटों में धधकते ही रहे। सत्यता क्या है इस बात पर हमारा विचार ही नहीं गया और प्रयास भी नहीं किया कभी-कभी किन्हीं संतों ने बताया भी तो ध्यान नहीं दिया। संत ही ऐसे चिराग हैं जो परमात्मा के चिराग से जलते हैं परमात्मा के चिराग से जो जलता है उसे बुझाने वाली उसे डराने वाली कोई भी हवा इस धरती पर पैदा ही नहीं हुई।

''परमात्मा का चिराग अनपेक्षित ज्योतिर्मय है और दुनियाँ की आग अपेक्षित दाहमय है'' जब तक हम विषयों की चाह में दहकते हैं तब तक जन्म मरण के चक्करों से गुजरते हैं लेकिन अनपेक्षित चिराग किसी से जलने की अपेक्षा नहीं रखता इसीलिये अनपेक्षित चिराग अद्‌भुत चिराग है जो जलता तो है पर बुझता नहीं है, जिसमें प्रकाश ही प्रकाश है परमात्मा के चिराग से अपना चिराग जलाने के लिए थोड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। आकांक्षा रहित मीरा जैसी भक्ति अपने हृदय में पैदा करनी पड़ती है, महावीर जैसा दृढ़ संकल्प बनाना पड़ता है, जीवन की शैली ढंग की बनानी पड़ती है तभी हमारा चिराग चिरकाल तक जलता है। यदि चिंता - इच्छा और वासना की आग से हमारा चिराग जले तो रोग - दुख परेशानियाँ - अंधकार बढ़ता है और हमें मौत घेर लेती है और यदि हमारा चिराग संकल्प, सत्य, अनाकांक्षा, भक्ति, दया, संयम से जले तो हमारा चिराग मौत को भी मौत के घाट उतार देता है और अजर अमर पद को प्राप्त करा देता है। अतः हम सभी संकल्प - सत्य के चिराग से जलें परमात्मा की ओर बढ़ें तभी हमारा जीवन मंगलमयी होता हुआ आनन्दमयी और सफल हो सकता है।

सीखना है तो जीना सीखो, मरना नहीं

दुनियाँ में हर आदमी जन्म मरण के आतंक से भयभीत है जहां से जाने के बाद लौटकर आने का मतलब है कि हम फिर मरने को आ गये, हम फिर ऐसे काम कर गये जिससे मरना पड़ेगा। मरने के लिए कोई कलाएँ सीखना जरूरी नहीं है, मरने के लिए कुछ करना भी जरूरी नहीं है, नदी में डूबने के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं जरूरत तैरने के लिए है। तैरना कला है तो डूबना बला है। डूबने वाला जब डूबा तब भी कुछ न कर सका और जब निकला तब भी मरा निकला कुछ नहीं कर रहा है। धर्म हमेशा जीने की कला सिखाता है मरने की नहीं मरना अधर्म सिखाता है हर आदमी का ख्वाब जीने का ही है आज हमें ऐसा आदमी न मिला जिसे मरने में आनन्द आता हो। किसी को आत्महत्या करने में, फाँसी लगा लेने में, सल्फास खा लेने में आनन्द नहीं आता बहुत ही गम दिल में भर जाता है तब इन कार्यो के द्वारा उभरके आता है। ये निकृष्ट कार्य तीव्र गम की अभिव्यक्ति है। और इस तरह गम के उभरने पर मरने से किसी का गम से छुटकारा नहीं हो जाता बल्कि गम का नज़ारा और अधिक बढ़ जाता है। अतः हमें सीखना ही है तो जीना सीखना चाहिए, मरना नहीं।

जीने की कला सीखने का मतलब स्पष्ट है कि सीखने वाला कभी भी मरना नहीं चाहता अथवा वह मौत को डरा कर मारना चाहता है जीने की कला को जो इंसान जीवन में उतार ले उसकी ज़िन्दगी जिन्दा हो जाती है, उसकी उम्र अनन्त वर्षों की हो जाती है। वह सर्व शक्तिमान हो जाता है यह जीने की कला सीखने का अधिकार केवल इंसान को है। इसके अलावा धरती पर किसी भी प्राणी को नहीं है।

परमात्मा इस धरती पर अब नहीं है परमात्मा का स्थान अलौकिक है जहाँ न जमीं है, न मकां है, केवल आसमां है वो स्थान कहाँ है? इस जमीं पर आज तक जितने भी परमात्मा हुए हैं वे सभी जिन्होने जीने की कला अपने जीवन में चरितार्थ की। मरने की कला तो जानवर भी जानते हैं, नारकी भी जानते हैं, नीच से नीच - मूर्ख से मूर्ख भी मरना जानते हैं। यह सीखना कोई होशियारी नहीं हैं अतः इस जीवन में हम सभी अब नये अध्याय से जीवन को जोड़ें तभी हमारा जीवन खुशियों से भरकर अजरता अमरता की ओर प्रयाण कर सकता है। यही जीवन का सफलतम कदम है।

देने वाला देवता, लेने वाला दैत्य है

यदि माँ अपने स्तनों के दूध का त्याग न करे, बादल अपने पानी का त्याग न करे, पेड़ अपने फलों का त्याग न करे, कुआँ अपने जल का त्याग न करे, स्त्री अपने गर्भ का त्याग न करे, पेड़ अपने पुराने पत्तों का त्याग न करे ये सब इस अच्छाई को ग्रहण न कर सके तो इन्हें दिव्यता की प्राप्ति न हो पाये। इनके देने पर ही आज इस धरती पर जीवन यापन चल रहा है। दिये बिना कभी नयापन हासिल नहीं हो सकता है नयापन हासिल किए बिना ज़िन्दगी को नया नहीं कह सकते और नये के बिना जीवन में कोई आनन्द नहीं है। हर आदमी आगे-आगे नये-नये की खोज में है। पुराने की खोज महावीर स्वामी की खोज नहीं, महावीर की खोज, ज़िन्दगी के नये-नये सूत्रों की है न कि बीती हुई ज़िन्दगी की। महावीर इसलिये आज भी परम देव हैं क्योंकि उन्होंने जो दिया है वो देवता बनने के लिये काफी है। महावीर आज भी दिव्य हैं महावीर को पाना ही देवता होने का सफल प्रयास है। महावीर ने दुनियाँ से कुछ लिया नहीं वे देते ही रहे।

जो वस्तु देने पर बढ़ती जाये वह मेरी निजी वस्तु है लेकिन जो वस्तु घटती जाये वह मेरी स्वयं की नहीं हमने उसे जबरदस्ती अपना बना लिया है। हमारा अधिकार अपनी वस्तु पर हमेशा है लेकिन पराई वस्तु पर अधिकार जमाना पड़ता है शरीर यदि लेता ही रहे तो मरना पड़ जाये जब तक हम शरीर से मल को हटा नहीं देते तब तक अस्वस्थ, परेशान रहते हैं। किसी को अपना बनाना चाहते हो तो कुछ देकर ही बना सकते हो फिर चाहे वह प्रेम ही क्यों न हो, बिना दिये किसी को भी अपना नहीं बना सकते हो, लेने वाले के द्वारा देने वाला हमेशा - हमेशा सम्मानीय है।

महर्षियों ने प्राचीन समय में और आज भी दान को बहुत महत्वशाली बताया है। यहाँ तक भी कहा कि दान देने वाला मोक्ष को पाने का अधिकारी है दान के बिना श्रावकपना जीवन में आता ही नहीं, जो दे नहीं सकता प्रकृति उसे भी नहीं दे सकती देने वाला आसमां से भी ऊँचा है क्योंकि वह देवता है देने वाले के सामने आसमां भी बौना हो जाता है। जो देने के लिए अपने हाथ उठाते हैं परमात्मा उनका सर ऊँचा उठा देता है जब वह जमीं से उठ जाता है तो परमात्मा उसे आकाश से भी ऊँचा उठा देता है।

अत: हम सभी इस जहां में देवता बनें दैत्य नहीं देवता बनने में ही मानव की मानवता निहित है। दैत्य बनने में मानवता नहीं दानवता है। मानवता हमारा धर्म है और मानवता ही जीवन है।

अपना दिया स्वयं जलाओ

दुनियाँ में ऐसा दीपक तो सबने देखा होगा जो मिट्‌टी के तेल से, घी से या सरसों के तेल से जलता होगा लेकिन ऐसा दीप खोजना बहुत ही मुश्किल है जो बिना तेल घी के जलता हो। ऐसा दीप कोई और नहीं हमारे अन्दर जलने वाली परमात्मा की परम ज्योति है हम स्वयं ही एक अद्‌भूत जलते हुए दीप हैं। अपना चिराग हम दुनियाँ के तेलों से नहीं बल्कि सत्य ज्ञान के तेल से और संयम की बाती से व अनुभव की दिया सलाई से जला सकते हैं। विषय भोगों की इच्छा से हमारे चिराग का घी मिट्‌टी का तेल बन जाता है। और सत्यता को पाने की भावना करने से हमारा चिराग घी से भरने लगता है। घी से भरने पर हमारे चिराग में ऐसी ज्योति पैदा होती है जो आँख की ज्योति तेज करती है और प्रकाश भी करती है। सारे आँगन को महकाती है। यदि मेरा चिराग मिट्‌टी के तेल रूपी पाप से भरे तो हमारे चिराग में से जलते समय कार्बन निकलता है वह कार्बन स्वयं का भी दम घोंटता है और दूसरों की भी दम घोंटता है। यहाँ तक कि कार्बन से आस पास का वातावरण भी दूषित हो जाता है जबकि अपना दीपक तो ऐसा है जिसमें न धूम है न बाती पर ज्योति जलती जाती प्रकाश होता जाता है जिसका। इसीलिए प्रभु से नाता जोड़ो अतः अपना चिराग स्वयं ही जलाओ।

हर आदमी को अपनी ज़िन्दगी में उम्र के तेल के कारण जलना होता है जब तक उम्र है तब तक हर एक प्राणी इस दुनियाँ में अपनी लौ से जलता है यह बात अलग है कि कोई घी से जलता है कोई मिट्‌टी के तेल से तो कोई सरसों के तेल से जलता है ये तो जलने जलने के तरीके हैं। लेकिन परमात्मा को प्राप्त करने वाला इंसान सबसे विचित्र है। परमात्मा को पाने वाला आदमी अद्‌भुत ज्योति से भरा हुआ है परमात्मा ही वह चिराग है जो सारे चिरागों को जलाकर ज्योतिर्मय कर देता है।

अतः हम सभी को अपना चिराग स्वयं जलाकर ज्योतिर्मय होना है तभी हमारा इस जमीं पर इंसान बनकर जीना सार्थक हो सकता है।

धोखा खाना बुरा नहीं, देना बुरा है।

It is not bad to be cheated but to cheat others is bad
OR
Duping is worse than to be duped.

मूल से फूल और भूल से शूल पैदा होंगे

संसार में हर आदमी का जीवन दो आधार पर टिका हुआ है एक मूल पर और एक भूल पर। मूल के आधार पर हम अपना जीवन बनाते हैं तो हमें कई गुणों की कई शक्तियों की उपलब्धि हो जाती है। सच्चा ज्ञान भी बढ़ने लगता है, मूल सर्व शक्तियों की आधारशिला है। दूसरा जीवन भूल के आधार पर पनपता है। भूल का जीवन पराये को अपना मानने लगता है। जैसे टिकिट लेकर हम जहाज में, ट्रेन में, बस में यात्रा करते हैं कुछ घंटे हमारे उसमें गुजरते हैं कुछ समय गुजरने से वह जहाज, बस, या ट्रेन हमारी नहीं हो जाती उसे अपना मानना ही सबसे बड़ी भूल है। ठीक वैसे ही शरीर, घर, दुकान, पत्नी, बच्चे आदि ये सभी संयोग से मिल गये हैं ये अपने नहीं हैं ये बात मूल से समझ में आती है।

जीवन को भूलना सरल है क्योंकि अभी तक हम सभी वास्तविक जीवन से परिचित हुए ही नहीं सत्य को भूलना सरल है क्योंकि आज तक हम असत्य से ही परिचित रहे हैं। अकेलेपन में रहना कठिन है क्योंकि अभी तक हम साथ में रहे हैं। अकेलापन हमें कलंकित सा महसूस होता है। जबकि अकेलेपन में और वास्तविक जीवन में ही सत्य के फूल या मूल प्राप्त होते हैं। सच्चा धर्म ही हमें भूल से हटाकर मूल पर जाकर ठहरा देता है। गर मूल न होता तो भूल भी नहीं होती।क्योंकि दुनियाँ में शब्द समाप्त हो जायेंगे कागज राख हो जायेंगे।

हमें जीवन का मूल सच्चे ज्ञान से प्राप्त होता है और सच्चा ज्ञान अनुभव के संस्कार से उद्घटित होता है शब्दों के संग्रह से नहीं। सच्चे ज्ञान के लिए अंतमुर्खी होना निहायत जरूरी है। भूल आठ वर्ष के बाद सौ वर्ष के बीच में कभी भी नष्ट हो सकती है। भूल में हम जिदंगीभर स्वयं के प्रति भूले रह सकते हैं भूल को अन्तमुहूर्त तक ही भूल सकते हैं इससे ज्यादा नहीं। भूल निकालने के लिए और मूल प्राप्त करने के लिए है। यदि हम स्वयं की भूल को समझकर दूर कर दें तो कई लोगों को मूलपथ दिखा सकते हैं। अतः हम सभी अनादि की बैठी भूल को हटाकर नई जिंदगी जीने की मशक्कत करें तभी जीवन की सफलता है।

जि़न्दगी सवाल नहीं जबाबों का जबाब है।

Life is not a puzzle but answer of all questions..

साक्षी बनो या पुरुषार्थी पर आलसी नहीं

दुनियाँ में वस्तु को देखना सहज है लेकिन वस्तु को वास्तविकता में देखना पुरुषार्थ है। आलसी होकर जीना बहुत सरल है और मरना भी सरल है। पुरुषार्थी होकर जीना कठिन अवश्य है लेकिन असंभव नहीं। ''आलस में जीने पर किसी को पुरस्कृत नहीं किया जाता और पुरुषार्थी को कभी बेइज्जत नहीं होना पड़ता।'' दीनता और हीनता आलसी होने के लक्षण हैं। आलसी अपना काम भी अपने हाथों से नहीं कर सकता वह जानवरों से भी गया बीता प्राणी है। स्वयं अपने आपको जानना तथा परमात्मा की भक्ति में हमेशा तत्पर रहना, गुणों से प्रेम करना, अच्छे और बुरे को जानना, ये सभी पुरुषार्थ हैं। और जो इसे अपनाता है वही पुरुषार्थी है। लेकिन जब पुरुषार्थ को करते हुए हम संसार और वस्तु को प्रकृति की व्यवस्था के अनुसार देखें तो हमारे अन्दर साक्षीपना पैदा होता है। ''साक्षीपना है न अच्छे में खुशी न बुरे में दुःख।'' धर्म काँटे की तरह है। न बाँट से प्रेम न वस्तु से प्रेम।

हम यहाँ पर आलसी बनकर जीते हैं तो भविष्य में हमें बहुत ही ज्यादा कार्य करके कुछ मिल सकेगा और यदि यहाँ पर पुरुषार्थी बनते हैं तो भविष्य में हमें बहुत कुछ स्वयंमेव ही मिलेगा। आदमी कुछ भी करे या न करे उसका प्रतिफल अवश्य है। करे तो करे जैसा है, न करे तो न करे जैसा है। आज जो भी भिखारी या अर्थहीन मनुष्य दिखाई देते हैं वे सभी पूर्व के आलसी हैं। लेकिन जो सम्पन्न हैं, सुखी हैं, ज्ञानवान हैं वे सभी पूर्व के पुरुषार्थी हैं। लेकिन कई लोग ऐसे महापुरुष हैं जो महान होकर भगवान हो गये, वे सभी पूर्व के साक्षी भाव वाले लोग हैं। पुरुषार्थ उच्चस्तर है लेकिन साक्षीपना तो सर्वोच्च स्तर का प्रतीक है।

इस धरती पर कई लोग ऐसे हैं जो ज़िंदगी भर तक दुख में जीवन गुजारते हैं। कुछ ऐसे भी होते हैं जिनने कभी दुःख देखा ही नहीं है यह अंतर पूर्व स्थिति का दर्पण है। जो धर्म कार्य करने के लिए जी चुराता हो, आलस करता हो या धर्म कार्य न करता हो परमात्मा का आशीष उसे कम मिलता है या मिलता ही नहीं है। धर्मियों पर परमात्मा का व संतो का आशीष बरसता ही रहता है। इसलिए धर्मी धन से सम्पन्न होता हुआ हमेशा सुखों में दिन गुजारता है अतः हम सभी को आलस त्यागकर पुरुषार्थ में तत्पर होते हुए साक्षी भाव में लीन होना चाहिये तभी हम पुरुष कहलाने के वास्तविक अधिकारी हैं। तभी मनुष्य जीवन की सफलता है।

जीवन को मौतमय नहीं मौजमय बनाओ

हर इंसान के पास अपना एक स्वतंत्र जीवन है हर आदमी की स्वतंत्रता पर किसी का भी दबाव नहीं है कोई भी आदमी किसी की गुलामियत में नहीं जी रहा है फिर भी उसकी ज़िंदगी गुलाम जैसी है तो यह बात निश्चित है कि यह गुलामियत उसकी स्वयं की पैदाइश है। वह स्वयं ही गुलाम है जीवन स्वतंत्रता से पूर्ण भरा हुआ है स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है लेकिन यह भी सत्य है कि स्वतंत्रता हमारे अंदर से ही उद्घटित होगी न कि वह बाहर से हमें प्राप्त होगी और न ही हमें कोई वह दिला सकता है। यदि कोई दिलाने वाला इस दुनियाँ में होता तो स्वतंत्रता हमें परमात्मा ने कब की दिला दी होती। जीवन मौज का खज़ाना है मौज स्वतंत्रता के बीज का ही फलित वृक्ष है मौज में ही शांति और आनंद की यात्रा है शांति और आनंद जीवन के नैसर्गिक गुण हैं। यदि हम स्वतंत्रता के प्रति कटिबद्ध नहीं हो पायेंगे तो परतंत्रता निश्चित हमारे जीवन का फंदा बनेगी, परतंत्रता हमारे जीवन को मौत में बदल देती है स्वतंत्रता जीवन को मौजमय बना देती है।

आजकल दुनियाँ में सभी का जीवन मौतमय बना हुआ है, मौज का जीवन उसी का हो सकता है जो हँसकर मौज में मर सके, लोग दुनियाँ में मरते भी हैं तो रो-रोकर दवाएँ खा-खाकर। इससे उनकी मौतें और अधिक बढ़ जातीं हैं मौत सबको भय दिखाती है लेकिन भयभीत वही होते हैं जो विषय - भोगों की धन संपदा को और भोगने की हृदय में इच्छा रखते हैं। लेकिन जो संत वासना-भोगों से ऊपर उठ चुके हैं उन्हें मौत भयभीत नहीं कर पाती ऐसे संत ही मौत को भयभीत कर देते हैं। जो मौत को भयभीत करने की हिम्मत रखते हैं मौजमय जीवन जीने का अधिकार ऐसे ही लोगों को ही है कायरों में ये हिम्मत नहीं होती। कोई परमात्मा का आशिक ही यह काम कर सकता है पदार्थ का आशिक नहीं। परमात्मा के आशीष से ही जीवन को मौजमय बनाकर खुश्बू बिखराने वाला फूल जैसा बनाया जा सकता है। जीवन कई उत्तम लक्षणों का पिण्ड है जो उन्हें प्रकट करने का साहस करता है वही परमात्मा को प्यारा लगने लगता है परमात्मा अपने प्यारों को ढूँढ़ता फिरता है।

न खाने-पीने में ज़िंदगी है, न अच्छे वस्त्र पहनकर जेवरों से लदकर दूसरों को दिखावे में ज़िंदगी है, न जायदाद संपदा में ज़िंदगी है, न पत्नि बच्चों के साथ समय बिताने में ज़िंदगी है, न ही ख्याति-पूजा-सम्मान में ज़िंदगी है, ज़िंदगी तो केवल आनंद के स्रोत में है और आनंद का स्रोत तब फूटता है जब हम स्वयं को सर्वानंदित परमात्मा के चरणों में समर्पित कर दें। हमारे समर्पण में ही परमात्मा से सब कुछ पाने की शक्ति है ''समर्पण से ही मौजमय जीवन नसीब हो सकता है अहंकार से नहीं।'' दुनियाँ हमें मौत दे सकती है मौज नहीं और परमात्मा हमें मौज दे सकता है मौत नहीं। हम सभी अपना जीवन मौजमय बनाएँ तभी हमें हमारे जीवन की सार्थकता हासिल हो सकती है।

भलाई से अच्छाई और बुराई से बदनसीबी मिलती है

जीवन में जीवंत जीवन की सुगंध लोगों की भलाई में ही निहित है। हमारे द्वारा दूसरों की की गई भलाई हमें ही भला बना देती है। हम एक के प्रति भला सोचते हैं तो कई लोग हमारा भला सोचने लगते हैं, हमारी सोच पर लोगों की सोच भी किसी न किसी हिस्से में जुड़ी हुई है हमारे द्वारा दूसरों के प्रति किये गये प्रेम वात्सल्य के विचारों से हमारा हृदय विस्तृत होता है और परमात्मा का प्रेम हमें प्राप्त होता है प्रभु का असीम प्रेम अपनी व दूसरों की भलाई करने से प्राप्त होता है। किसी के बारे में बुरा सोचने पर सामने वाला मुझे बुरा समझे या न समझे लेकिन परमात्मा की पैनी नजरों से कोई भी नहीं बच सकता है। उसकी नजर में हम गुनाहगार हो ही गये हैं। यह बात सत्य है और इस अपराध का दण्ड प्रकृति जरूर देगी जो परमात्मा का ही एक स्वरूप है। संसार का यह विधान है कि हम लोगों को प्रेम देंगे तो लौटकर हमें प्रेम कई गुना मिलेगा और यदि हम घृणा की पौध लगायेंगे तो निश्चित घृणा ही प्रतिफल में प्राप्त होगी।

हम सामने वाले के गुणों को देखते हैं तो हमारा हृदय गुणों से भरता हुआ दिखता है। यदि हम सामने वाले के अवगुणों को देखकर आलोचना निन्दा करने लगें तो हमारा हृदय क्रोध, मानादि के विचारों से परिपूरित होने लगता है। जब हम दूसरों के अवगुणों को देखते हैं तो वे अवगुण मेरी ओर आकर मेरी आत्मा से लिपट जाते हैं। लेकिन जब अपने अवगुणों को दूसरों को बताते हैं तो मेरे ही अवगुण बाहर निकल जाते हैं और हम अपने आपको हल्का सा प्रतीत करते हैं। इसलिए जब कभी टेंशन होता है तो दूसरों को बताने से अपना मन हल्का सा हो जाता है। इसलिए हर आदमी अकेला नहीं रहना चाहता, न कोई स्त्री ही अकेली रहना चाहती है एक पुरुष को प्रेम और स्त्री को हमदर्द की जरूरत मात्र उत्पन्न हुऐ गमों को बाँटने के लिए होती है। भलाई में भले गुण अव्यक्त रूप से छिपे हुये हैं।

हमारी आँख में और कैमरे में कोई अन्तर नहीं है। कैमरे के सामने जो कुछ हो वह बटन दबते ही कैमरे की रील में जाकर फोटो में परिवर्तित हो जाता है, ठीक वैसे ही आँख जिसको देख लेती है वही वस्तु कैमरे की भाँति फोटो बनकर हमारे आचरण में अभिव्यक्त होने लगती है इसलिए हमें आँख से अच्छा ही अच्छा देखना चाहिए। जिससे हमारा आचरण अच्छा ही अच्छा होता चला जाये। यह भी अकाट्य सत्य सिद्ध है जो दूसरों की भलाई करेगा वही अपना भला कर सकता है। अथवा अपनी भलाई इसी में है कि हम दूसरों की भलाई करें। ''आनंद का स्रोत बाँटने से बढ़ता है। आनंद को बाँटना ही पड़ेगा।'' अतः हम सभी को हमेशा भला ही करना चाहिये तभी हमारा जीवन भला बन सकेगा।

आकांक्षा धर्म की कीमत को घटाती है

हम प्रकृति पर अपनी नज़र डालें तो लगता है कि कृति का फल प्रकृति देती है। प्रकृति न्यायशील है अन्यायशील नहीं, प्रकृति दूध का दूध पानी का पानी करने वाली है। हम अपनी आकांक्षा के वशीभूत होकर कभी-कभी प्रतिफल की कीमत को कम कर देते हैं। धार्मिक कार्य करना हमारा पुरुषार्थ है लेकिन पुरुषार्थ की कीमत निश्चित करना मालिक का काम है। मेहनत मेरे द्वारा की जाती है और मेहनत के अनुसार माल मालिक द्वारा निर्धारित किया जाता है। कभी-कभी क्या अक्सर लोग धर्म का कार्य करते हैं तो व्यापार की तरह करते हैं, लॉटरी की तरह करते हैं, वो धर्म के बदले परमात्मा से कुछ चाहते हैं, यदि कोई धर्म कार्य करने के बाद कुछ भी न चाहे तो भी वह कहीं ना कहीं धोखा कर रहा है। भगवान की भक्ति हो या कोई सांसारिक कार्य हो कुछ ना कुछ अपेक्षा तो रखनी ही पड़ेगी। आकांक्षा सांसारिक वस्तुओं की हो तो धर्म की कीमत कम हो जाती है। यदि भगवान के गुणों को पाने की अथवा अपना ही स्वभाव पाने की भावना हो तो भक्ति सोने में सुहागा की तरह हो जाती है। ऐसी भक्ति को ही वास्तविक भक्ति कहा जाता है। ऐसी भक्ति की तुलना कीमत से नहीं की जा सकती वह तो अमूल्य हो जाती है। ''अमूल्य भक्ति ही अमूल्य परमात्मा से मिलन कराकर जीवन को अमूल्य बना देती है।'' लेकिन आकांक्षा भक्ति की कीमत कम कर देती है।

परमात्मा जगत में न्यायशील है प्रकृति भी परमात्मा का अनुशरण करने वाली है। क्योंकि प्रकृति बेजान है, परमात्मा सबकी जान है और अपनी भी। परमात्मा ने वही बताया है जो प्रकृति में घटित हुआ है या होना है इसलिए प्रकृति परमात्मा का ही एक रूप है। प्रकृति ने कहा कि जो व्यक्ति परमात्मा की आराधना करते हुए धन सम्पदा की आकांक्षा करते रहते हैं तो उन्हें आरधाना के प्रतिफल स्वरूप धन सम्पदा तो मिल जाती है लेकिन आकांक्षा पर आशक्ति इतना जोर पकड़ लेती है कि फिर उन्हें त्याग की भावना नहीं बनती। जिस कारण वह तीसरे भव में नरक के गर्त में ले जाकर पटक देती है। ''फल की इच्छा न करो वरना वरदान में कमी आ सकती है।''

हर व्यक्ति धर्म करता है बहुत कम लेकिन उसका प्रतिफल बहुत चाहता है अधिक न मिलने पर भी दुःख होता है और कम माँगा तो भी पछतावा ही हाथ लगता है इससे यही सिद्ध होता है कि हमें धर्म कार्य के बदले फल की इच्छा नहीं करना चाहिये। धर्म कार्य वही है जिससे अंतरंग आनंद की अनुभूति हो और बाहर में धन दौलत वैभव भी हो, बाहर का वैभव अंतरंग आनंद पर निर्भर करता है। यदि अंतरंग में इच्छायें और धन वैभव पनप रहा है तो अंतरंग आनंद नहीं हो सकता। उसके अभाव में धर्म एक सौदे से ज्यादा कुछ भी नहीं रह जायेगा। अतः हम सभी को धार्मिक कार्य अपना गुणमयी वैभव पाने के लिए करना चाहिये न की धन सम्पदा पाने को, तभी हमारा जीवन सफल हो सकेगा।

सूत्रा में सार और संस्कार छिपे रुस्तम हैं

भगवान महावीर हो या गौतम बुद्ध, भगवान राम हो या हनुमान सभी ने आदमी को उच्च गति पाने के लिए सूत्रों को निरूपित किया है। उन्होंने छोटी-छोटी सूक्तियाँ दी जिनसे इंसान सद्व्यवहार में परिवर्तित हो सके। शिष्य भी दुनियाँ में दो तरह के होते हैं एक वे जो सूत्र को सुनकर ही सार तक पहुँच जाते हैं, और संस्कार में उतार लेते हैं, एक वो शिष्य होते हैं जिन्हें सूत्र से कुछ समझ नहीं आता, ऐसे शिष्यों को कई उदाहरण देकर कई दृष्टांतों से समझना पड़ता है। सूत्र से जानने वाले शिष्य बुद्धिमान होते हैं और सूत्र को विस्तार से जानने वाले शिष्य मंदबुद्धि वाले होते हैं मंदबुद्धि वालों को सार बहुत परिश्रम से समझ में आता है लेकिन सूत्र से समझने वाले सार और संस्कार दोनों से परिचित होते हैं। मनीषियों ने बड़ी से बड़ी बात को छोटे रूप में कहने का प्रयास किया है। महापुरुषों के सूत्रों में सब कुछ समावेश होता है। सार और संस्कार उनके सूत्रों में ही निहित हैं। सूत्र बहुमुखी अनेकांत धर्म को लिए होते हैं। महावीर का धर्म अनेकांतमयी है जिसे केवल स्याद्वाद पद्धति से ही प्रकाशित किया जा सकता है अन्य पद्धति से नहीं।

चाहे सूत्रों को पढ़ा जाये, चाहे कथा को पढ़ा जाये, चाहे काव्य में रामायण - महाभारत को पढ़ा जाये, चाहे किसी महापुरुष के चरित्र को सुना जाये महत्व तो उसमें सारभूत तत्त्व का है। सार मिलने के बाद वस्तु निरर्थक हो जाती है जैसे पास हो जाने के बाद ट्यूशन निरर्थक हो जाती है। नींबू का सत, मौसमी का सत्, संतरे का सारभूत रस निकल जाने के बाद वह वस्तु निरर्थक हो जाती है। यह सार संस्कार से प्राप्त होता है। सार अनुभव का फल है और अनुभव संस्कार से निर्मित होता है संस्कार संगति से और ज्ञान से उपलब्ध होता है। लेकिन सार हो या अनुभव अथवा संस्कार हो सभी सूत्र रूपी बीज से ही अंकुरित होते हैं।

ज़िदंगी का राज ज़िदंगी के साम्राज्य में ही दिखाई देता है साध्य साधन में ही दिखाई देता है, कार्य कारण में ही दिखाई देता है ठीक ऐसे ही सार और संस्कार सूत्र में ही दिखाई देते हैं ''सूत्र वह सुई है जो धागे को गंतव्य स्थान तक पहुँचा देती है।'' सूत्र मार्गदर्शक यंत्र है, सूत्र बड़े शास्त्रों की एक छोटी प्रति है जिसकी उपलब्धि संस्कार के रथ पर चढ़कर हो जाती है। अतः हम सभी को महापुरुषों के सूत्रों को समझना हो तो पहले उनके चरित्र को जीवन में संस्कारित करना पड़ेगा। तब वैसा ही सार हम सभी पा सकेंगे तभी मानव जीवन की सफलता है।

सबेरा उजाले से नहीं जागने से होता है

कौन नहीं चाहता कि मेरे घर में आकर सूरज ठहर जाये और घर उजाले से जगमगा जाये? कौन नहीं चाहता कि मेरे घर में सुबह की किरण न आये? कौन नहीं चाहता कि हमारे घर का चिराग हमेशा-हमेशा रोशनमय रहे। लेकिन ये सभी चाह जागने पर ही साकार हो सकती हैं। सूरज का प्रकाश बाहर गलियों में सड़क पर और जंगलों में उजाला कर सकता है लेकिन हमारे कमरे को रोशनमय नहीं कर सकता क्योंकि हमने कमरे के खिड़की दरवाजे बंद कर रखे हैं ठीक वैसे ही शास्त्रों का शाब्दिक ज्ञान हमारे व्यवहार को अच्छा बना सकता है वास्तविक अच्छा नहीं। वास्तव में अच्छा बनने के लिए हमें अपने जीवन के शास्त्र को पढ़ना पड़ेगा हमें स्वयं ही जागना पड़ेगा। यदि हम बिस्तर पर पड़े रहकर अपनी आँखें न खोलें तो सूरज का निकलना व्यर्थ हो जायेगा सुबह हुई है या नहीं ये पता ही नहीं चल पायेगा ठीक वैसे ही यदि हम अंतस् की आँख न खोलें और शास्त्रों को पढ़ते चले जायें तो कभी भी हम जाग नहीं पायेंगे, जागे बिना सूरज का आना और सबेरा होना फिजूल हो जायेगा।

''आँखों के खोलने से शरीर की नींद टूटती है लेकिन ज़िंदगी की नींद से जागने के लिए अज्ञान नेत्र को ज्ञान से खोलना पड़ेगा।'' यदि अंतस् की आँख खुल गई है तो बाहर की आँख बंद भी हो तब भी वह जागा हुआ है। इसलिए कहते हैं कि संत इस जमीं पर सोते हुए भी जागता है और एक भोगी आँखों से जागा हुआ होने पर सोता हुआ है। जीवन की नींद में सोने पर ये पता करना बहुत कठिन है कि हम सोये हुये हैं बाहर का सोना तो सभी को नजर आता है। ज़िंदगी में जागने के लिए हमें कोई जागे हुये संत का विवेक या परमात्मा जैसी दृष्टि चाहिये।

दृष्टि प्राप्त आदमी ही जागा हुआ है दृष्टि से जागने पर विवेक का वृक्ष बहुत तीव्रता से फलीभूत होता है। ज्ञान का विकास ही जागृत अवस्था का प्रतीक है इसलिए जागा हुआ व्यक्ति शीघ्र ही परमात्म दशा को प्राप्त हो जाता है। जागा हुआ दुनियाँ में दुखी कम रहता है उसमें समता, न्याय और सत्य उद्घटित होने से वह हमेशा प्रसन्नचित रहता है। जागे व्यक्ति का हर पल उजाले से भरा हुआ है। उसके जीवन में सबेरा ही सबेरा है। अँधेरा नजर ही नहीं आता अतः हम सभी को जागना अवश्य ही चाहिये।

हमें जलने की जरूरत है, दहकने की नहीं

हर आदमी की तमन्ना है कि हमारे घर ज्ञान की रोशनी हमेशा-हमेशा भरी रहे। हमारे घर में ज्ञान का दीपक जगमगाता रहे, हमें कभी अँधेरों में ठोकर न लग पाये परन्तु यदि चाह और तमन्ना से ही वस्तु की उपलब्धि हो जाती तो फिर किसी को भी मेहनत करने की जरूरत नहीं रह जाती। हम भी एक ऐसे माटी के दिये हैं जिसमें यदि ध्यान रूपी घी और ज्ञान रूपी बाती लगा दिया जाये और किसी ज्ञान ज्योति से जगमगाते हुये संत से अपना चिराग रौशन कर लिया जाये तो हमारे घर में दीपावली जैसी रोशनी जगमगा सकती है। हमारे विवेक की इसमें अहम् भूमिका है यदि हम अपना हित चाहते हैं तो हम चिराग में रोशनी भरते हैं लेकिन जब हम संसार की मिट्टी की तरफ दौड़कर हम अपना अस्तित्व भूल बैठते हैं तब हमारा चिराग रौशनमय नहीं होता बल्कि दुनियाँ की प्रलयंकारी आग में हम खुद ही दहक जाते हैं। हमें अब रौशन होने की जरूरत है न कि दहकने की।

हृदय में सच्चाई ही चिराग को जला सकती है। हृदय का चिराग केवल सत्य की तीली से ही जलेगा यदि हृदय में असत्य आ गया तो, केवल तन ही नहीं हृदय स्वयं भी जलकर राख हो जायेगा। हृदय या तो विषयों को तिलांजली दे सकता है या फिर हृदय खुद ही विषयों में फँसकर आत्मघात कर सकता है। हृदय के पास दोंनों रास्ते चुनने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता है। हमारे ही कारण आज मेरे घर में अँधेरा बैठा हुआ और जिन्होंने चिराग जलाया उनके यहाँ रोशनी जगमगा रही है।

अज्ञान के अँधेरे में हम सभी को भटकते - भटकते अनंत काल व्यतीत हो गये। लेकिन ज्ञान की रोशनी में हम ज्यादा दिन नहीं भटक पाते हैं। ज्ञान को पाकर परमात्मा को साक्षी बनाने वाला दुनियाँ के गम का बोझ नहीं उठाता है। प्रभु की कृपा जिस पर हो जाये उस पर कोई भी वार नहीं कर सकता है। यह प्रभु कृपा केवल उसे ही उपलब्ध हो पाती है जिसका चिराग ज्ञान के तेल और ध्यान की बाती से रौशनमय हो उठता है। अतः हम सभी अपना चिराग जलाएँ तभी हमारा जीवन ज्योतिर्मय हो सकता है।

श्रध्दा हृदय का विषय है तो तर्क मन का।

Faith is the subject of heart but logic is of mind.

हँसके वही मर सकेगा जो हँसकर जिया हो

आज का हर आदमी मौत से घबड़ाया हुआ सा दिखाई दे रहा है जबकि मौत सुनिश्चित है यह सभी जानते हैं। कोई भी इस धरती पर साम्राज्य करके अमर नहीं रह सका। भगवान महावीर, राम जैसे महापुरुष तथा सिकंदर जैसे तानाशाह भी इस जमीं पर हमेशा-हमेशा न रह पाये तो हम किस खेत की मूली हैं हम लोग तो उनके सामने मामूली हैं। मौत का शिकंजा हर एक इंसान के ऊपर मंडरा रहा है केवल समय का भेद है कोई जल्दी तो कोई थोड़े बाद में। ''यह सत्य है जीना ही केवल कला नहीं है मरना भी बहुत बड़ी कला है।'' हँसकर जीना ही ज़िंदगी नहीं हैं हँसकर मरना बहुत बड़ी ज़िंदगी का प्रतीक है। जो रोकर मरते हैं उनका जन्म भी रोते हुए होता है हँसकर मरने वाले हँसते ही जन्मते हैं। यहाँ हँसकर वही मर सकता है जो ज़िंदगी भर हँसके जिया हो।

ज़िंदगी और मौत में कोई फासला नहीं है हमारे देखने के कारण उसमें भेद है हँसती ज़िंदगी और निश्चिंत जीवन ही मृत्यु से बे-फिक्र बनाता है। मृत्यु तभी तक हमारा पीछा करती है जब तक सत्य से वाकिफ नहीं हो पाते। अपने वजूद से मुलाकात होते ही ज़िंदगी हमें हासिल हो जाती है और नसीब भी दिलशाद हो जाता है। हमें मरने की चिंता नहीं करना है ज़िंदगी पर ध्यान देना है क्योंकि अंत में ज़िंदगी का सार ही मृत्यु का लिबास बन जाता है। मृत्यु हमेशा कमजोर है, ज़िंदगी ताकतवर, ज़िंदगी वह है जिसका अंत नहीं है मृत्यु वह है जो अंत समय पर आती है।

हमें अपनी ज़िंदगी को भोग विलासता से हटाकर योगानुभवी बनाना चाहिये सारभूत तथ्यों का निचोड़ पाकर परमात्मा के अस्तित्व से साक्षात्कार करना चाहिये। मृत्यु केवल परमात्मा से ही भय खाती है और किसी से भी नहीं परमात्मा का हृदय में आह्वान ही मुत्यु को ज़िदंगी में बदल सकता है। ''हँस के मरे तो फिर कभी न मरोगे। जल्दी यह कर लो फिर कब करोगे'' किसी ने कहा है

''देख हिस्ट्री इस बात का कामिल यकीं आया।
जिसे जीना नहीं आया उसे मरना नहीं आया''

अतः हम सभी अपना जीवन खुशहाल बनायें तभी हमारा जीवन सफल हो सकता है।

दार्शनिकता अध्यात्म के महल का रास्ता है।

Philosophy is a way of the palace of spirituality.

माँस–शराब व शहद खाना बुद्धि भ्रष्ट करना है

ज्ञान को बढ़ाने की आकांक्षा हर आदमी के दिल में इतनी तीव्र है कि वह आज चाहे कितना ज्ञान पा ले लेकिन फिर भी वह चाह पूर्णता को उपलब्ध नहीं होती। संसार में भाँति-भाँति के लोग पाये जाते हैं यदि सारे लोगों को बनाने वाला एक परमात्मा है तो परमात्मा ने सभी इंसानों के साथ भेदभाव क्यों किया? यदि भेदभाव परमात्मा भी करता है तो फिर यह बात सही है कि परमात्मा को सभी लोग स्वीकार नहीं कर सकते इसलिए परमात्मा प्रकृति का ही एक सुंदर रूप है और प्रकृति का यह अटल नियम है कि तुम जैसा प्रकृति को अपने विचार व व्यवहार से दोगे वैसा ही विचार और व्यवहार सारी प्रकृति तुम्हारी और फेंक देगी अथवा जैसा दोगे वैसा पाओगे, जैसा बोवोगे वैसा काटोगे, जैसा करोगे वैसा भरोगे। अतः हमारे कृत्य से ही हमारी बुद्धि कमजोर मंद या तीव्र होती है। बुद्धि को कमजोर करने में माँस खाना व शहद खाना कारण है लेकिन इससे भी मुख्य कारण है शराब। शराब – माँस के सेवन से बुद्धि शीघ्र पतन को प्राप्त होती है।

हमें यदि अपना जीवन सुयोग्य, सुशील एवं ज्ञान से लबालब भरा हुआ बनाना है तो हमें चाहिये कि हम स्वच्छ साफ एवं शुद्ध अहिंसक होकर जियें व शुद्ध वस्तुओं को मर्यादा में खायें यदि हम अपवित्र वस्तुएँ बाजार की चाट पकोड़े, होटलादि का भोजनादि ग्रहण करेंगे तो यह निश्चित है कि आपके मस्तिष्क की क्षमता गिरेगी। बाजार में बने भोज्य पदार्थ मर्यादा से रहित होते हैं जो खाने के योग्य नहीं है। यदि अचार एक दिन के बाद का रखा हुआ है तो उसमें कई माँस वाले जीव पैदा हो जाते हैं इसलिए एक दिन के बाद वाला अचार भी हमारी बुद्धि की क्षमता गिराकर हमें कायर बना देता है। शहद मक्खियों की लार से मिश्रित एकत्रित किया हुआ गुड़ है जिसे खाने पर हमारे शरीर में विकृतियाँ पैदा होती है और बुद्धि का ह्रास होता है।

''शराब पीने वाले ऐसा देते हैं जवाब, कि खुद का व दूसरों का जीवन कर देते हैं खराब।'' शराब पीकर लोगों से कई अनर्थ हो गये हैं। द्वारिका जिसे सोने की कहते हैं वह भी मात्र शराब के कारण ही अग्नि में भस्म हो गयी थी। शराब से कई लोगों से स्वयं का जीवन ही नहीं परिवार के परिवार तक मिट जाते हैं। अतः शराब तरल आग है। जो खुद को भी जलाती है और दूसरों को भी जलाती है। हम सभी को अपने जीवन में उच्च विचार रखकर सादा जीवन बनाने की जरूरत है तभी इस दुनियाँ के बाग में फूलों सा खिलकर अपना जीवन व इस गुलशन को महका सकेंगे। तभी हमारा जीवन बुद्धिपूर्वक सफल हो सकता है।

लिखा हुआ जल जाएगा लखा साथ में जाएगा

हर इंसान दुनियाँ में आकर अपना संस्कार बनाता है कोई अच्छा संस्कार बनाता है कोई बुरा संस्कार बनाता है। संस्कार कोई नई चीज नहीं है। जिसे पाने के लिए हम कई स्थितियों से गुजरते हैं वही हमारा संस्कार बन जाता है, जिसको पाया जाता है वही हमारा लक्ष्य होता है यदि लक्ष्य हमारा उच्च है आदर्शमयी है तो संस्कार बहुत अच्छा होगा स्वयं को आनंदित कराने वाले के साथ दूसरों को भी आनंदित कराने वाला होगा। यदि लक्ष्य हीन होगा तो सस्कार भी हीनता को लिए तुच्छ ही होगा। संस्कार लक्ष्य की आधार शिला है लक्ष्य पर ही आधारित करता है। लेकिन जो संस्कारित नहीं है केवल जान लिया है वह जानकारी अनुभविक न होने से आत्मिक नहीं है जो आत्मिक नहीं है वह मानसिक है, जो भावात्मक नहीं हो वह भावनात्मक है। जो याद किया जाता है, पढ़ा जाता है वह मन के पृष्ठ पर लिखा जाता है जो मन के पृष्ठ पर लिखा जाता है वह अंत में चिता पर जल जाता है, भस्म हो जाता है लेकिन जो लक्ष्य संस्कारों से अनुभूत कर लिया जाता है। वह आत्म प्रदेशों पर लिप जाता है जो लिप जाता है वह इस जीवन से उस जीवन में साथ जाता है। अतः आत्म प्रदेशों पर ऐसा संस्कार लिम्पन करना चाहिए जिससे हमें सुख शांति आनन्द की प्राप्ति हो।

यदि हमारे विचार भावनात्मक न हुए तो भवात्मक हो जायेंगे। भावनात्मक विचार बहुत समय से चले आ रहे हैं लेकिन भावात्मक आज तक एक बार भी नहीं किए। हम वस्तुओं का संयोग तो करते हैं लेकिन वस्तुओं का अनुभव नहीं कर पाते। अनुभव नहीं कर पाये तो वस्तु का भोग भी असत्य रूप में रहेगा भ्रमात्मक रहेगा तो भ्रमण भी नहीं रुकेगा। भविष्य का निर्माण भी वर्तमान के अनुभवों के आधार पर है और संस्कार उसकी धुरी है।

जीवन तो सभी को मिलता है लेकिन कोई खुश होकर जीता है कोई गम में जीता है लखने का परिणाम ही है खुश होना लिखने में सुख हो भी या न भी हो। सभी को संयोग - वियोग दोनों मिलते हैं। संयोग- वियोग पाप व पुण्य दोनों के उदय से मिलता है। संयोग का सार यही है कि सार को प्राप्त कर लेना। यदि हमें धर्म का संयोग मिला है तो आनन्द को पा लेना चाहिए यदि धन का संयोग मिला है तो भय चिंता राग आदि का अनुभव होना चाहिए। ये अनुभव ही संसार को मिटाने में सहायक बनेगा ये अनुभव ही आत्म चिंतन की ओर प्रेरित करेगा तभी हम सत्य को लख सकेगें और नया जीवन लिख सकेगें और लखना ही जीवन की सफलता है।

आधि–व्याधि–उपाधि से रहित होती है समाधि

जीवन में जब तक सत्य की उपलब्ध नहीं होगी तब तक आदमी समाधि की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ा सकता है। समाधि ही व्यक्ति को व्यक्तित्व विकास की प्रेरणा देती है। समाधि ही जीवन का वह शिखर है जिस पर चढ़कर हमें सारा विश्व हथेली पर रखी वस्तु की तरह स्पष्ट दिखाई देता है। यदि समाधि न होती तो राम – रहीम– हनुमान– महावीर और बुद्ध अपने वैभव को उपलब्ध नहीं होते। दुनियाँ में ऐसा कोई भी आदमी नहीं है जो समाधि का नाम सुनकर आश्चर्य में न पड़ जाये, हर व्यक्ति के दिल के एक कोने में समाधि को उपलब्ध होने की ख्वाहिश अवश्य पड़ी होगी, हर आदमी समाधि को उपलब्ध व्यक्ति को अवश्य देखना चाहता है। देखने का मतलब ही है कि उसके अंदर समाधि की कामना विद्यमान है। समाधि जीवन में जीवंत साधना का अंतिम परिणाम है समाधि से ही व्यक्ति का सारा जीवन और व्यक्तित्व स्पष्ट समझा जा सकता है। यदि हमें समाधि को उपलब्ध होना है तो हमें आज से ही अपनी ज़िंदगी जीवंत बनाना पड़ेगी। कोई चाहे कि हम अभी तो मौज कर लें अंत समय में जीवन को सुधारेंगे तो यह उसकी भूल है समाधि को उपलब्ध होने के लिए हमें पूरी ज़िंदगी दाँव पे लगाना पड़ेगी। उसके लिए आधि – व्याधि – उपाधि से दूर रहकर स्वयं में विलीन होना पड़ेगा।

आधि वह है जो मन को विचलित करती है जैसे सांसारिक इच्छाएँ – वासनाएँ ये सभी टेंशन पैदा करतीं हैं। टेंशन युक्त व्यक्ति अपने भोजन की 80 प्रतिशत ऊर्जा फिजूल में नष्ट कर लेता है और हमेशा उपाधि के कारण होती है, पत्नी बच्चे, लखपति, करोड़पति, अरबपति अमीर होना भौतिक सुविधाएँ ये सभी आदमी के लिए हैं। ये उपाधियाँ इंसान को जब मिलती नहीं है तब यह विचलित होता हुआ टेंशन युक्त हो जाता है, इस टेंशन से ही कई तरह के पापाचार होते हैं, बुरे परिणाम होते हैं इनसे पापकर्म अर्जित होते हैं। फिर कर्म शरीर में उदय होने पर उत्पन्न करते हैं जिससे कई रोग बीमारियाँ अकाल मौत, हार्ट–अटैक, ब्लड–प्रेशर आदि व्याधियाँ पैदा हो जाती हैं फिर आदमी समाधि को भूल बैठता है।

आधि वह है जो मन को विकृत करती है, व्याधि वह है जो तन को बिगाड़ती है, उपाधि वह है जो वतन और चिंतन बिगाड़ती है और समाधि वह है जो स्वयं से मिलाकर परमात्मा का स्वरूप दिखा देती है। यदि हम परमात्मा को पाकर ज्ञान, सुख, शांति की अथाह को देखना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले उपाधियों से दूर हटना पड़ेगा, फिर आधि से दूर हटना पड़ेगा, इन दो से दूर हटेंगे

तो विचारों की निर्मलता के कारण व्याधियाँ स्वयमेव ही दूर हो जायेंगीं। आज हर आदमी भौतिक वस्तुओं के प्रति इतना आशक्त और आश्वस्त है कि आधि उपाधि को न छोड़कर समाधि को प्राप्त करने के ख्वाब देखता रहता है और इस आशा में जीता है कि हम बहुत सा धन कमाएँगे एक दिन जब यह मन तृप्त हो जायेगा तब हम उपाधि - आधि से हट जाऐंगे और समाधि को प्राप्त कर लेंगे। लेकिन वह इस बात को नहीं जानता कि मन कभी भी तृप्त नहीं होता तृप्त तो चेतन होती है मन की भूख तीनों लोकों की सम्पदा मिलने पर भी नहीं मिटती। कहा भी है'' तन की भूख तनिक है, एक पाव या सेर, मन की भूख अपार है, चाहे मिले सुमेर'' अतः अब हम सभी को समाधि पाने के लिए निरंतर जागृत रहना चाहिए और आधि - उपाधि - व्याधि को तिलांजलि देते हुए समाधि को प्राप्त करना चाहिए।

हमें कृतज्ञ होना चाहिए अकृतज्ञ नहीं।

Be obliged (grateful) not ungrateful

विज्ञान ध्यान केन्द्र तो दे सकता है ध्यान नहीं।

Science can give meditation center but not meditation.

विज्ञान धन तो दे सकता है मगर धन्यता नहीं।

Scince can give money but not glory.

ढोंग का नहीं ढंग का जीवन बनाइये।

Be honest but not a hypocrite in life.

जीवन स्रजन के लिए है, सर्जन के लिए नहीं

हर आदमी को ढूँढ़ - ढूँढकर पूछा जाये कि तुम अपनी ज़िंदगी का स्रजन करना चाहते हो या नहीं तो हर आदमी के मुख से यही आवाज निकलेगी कि हाँ, लेकिन जब उसके जीवन की ओर नजर डालते हैं तो स्रजन की जगह पतन दिखाई देता है, हम यदि एक जहाज ऊपर की ओर उड़ाते हैं तो हमें कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है, मन को एकदम एकाग्र करना पड़ता है और अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग करना पड़ता है, लेकिन यदि उस जहाज को नीचे पटकना हो तो शक्ति की कोई जरूरत नहीं, मन को एकाग्र करने की कोई जरूरत नहीं है, केवल निष्क्रिय हो जाना है, लेकिन यह बिल्कुल सत्य है कि निष्क्रियता से ज़िंदगी खतरे में आ जाती है, खतरे की ज़िंदगी सर्जन की ज़िंदगी है, क्योंकि वहाँ मौत ही मौत नजर आती है। यदि हम जीवन को स्रजन की यात्रा पर ले जाना चाहते हैं तो हमें अनुभवों से गुजरना पड़ेगा और वस्तु में सारभूत तत्त्व को देखकर उसका अनुभव करना पड़ेगा, वह सारभूत तत्त्व कोई शास्त्र में नहीं मिलेगा। कोई अन्य पर वस्तुओं में न मिलेगा यदि सार मिलेगा तो अपने अंदर में बैठे परमात्मा को देखने पर मिलेगा जैसे ही परमात्मा के दर्शन होंगे तुम्हें सत्य हासिल हो जायेगा उसका अनुभव ही हमारे जीवन की यात्रा को बदल देगा जैसे ही यात्रा बदलेगी जीवन स्रजन होने लगेगा। जीवन की स्रजनता ही ज़िंदगी को सर्जन से बचा सकती है।

कई लोग अपनी ज़िंदगी खाने-पीने में, कमाने में, बच्चों को पालने में एवं ऐशो आराम में व्यर्थ गँवा देते हैं। ऐसे लोग अपनी ज़िंदगी से खिलवाड़ कर रहे हैं। ये ज़िंदगी की चीरा-फाड़ी कर रहे हैं। चीरा-फाड़ी करने पर जब शरीर ही विकृत और कुरूप हो जाता है तो ज़िंदगी भी आनंद के स्रोतों से दूर अशांति - भय - दुखों से कुरूपित हो जाती है। आज का आदमी अपना सारा जीवन सर्जन में तो गुजारता है, लेकिन स्रजन की ओर उसका कोई ध्यान ही नहीं है। आदमी इन्द्रियों के माध्यम से विषयों में इतना लिप्त हो गया है कि वह स्रजन की यात्रा को बहुत ही कठिन महसूस कर रहा है। यही कारण है कि आज के आदमी में सहनशीलता बहुत ही कम है जरा-जरा सी बात पर मर्डर और आत्म हत्याएँ हो जातीं हैं। धार्मिक जीवन स्रजनशील होता है। जिसमें सहनशीलता ज्यादा होती है और सहनशीलता जीवन शक्तियों के स्रोत पैदा कर देती है।

यदि हम कुछ भी त्याग करने को राजी न हों तो हमारा ज्ञान रंच मात्र भी विकसित नहीं होता जबकि हम महाज्ञानी हो सकते हैं। यदि हम कुछ

त्याग करके जियें तो हमें कुछ ज्ञान होता है, ध्यान रहे त्याग ज्ञान के ऊपर की भूमिका है, क्योंकि जिनसे हम तृप्त हो जाते हैं उन्हीं को त्याग सकते हैं और तृप्त तभी होते हैं जब हमें वस्तु का वेदन व अनुभव हो जाता है। यदि हम बहुत कुछ त्याग करें और संत बनकर अध्यात्म की साधना करें तो हम ज्ञान को विकसित करते हुए बहुत कुछ पा लेते हैं, लेकिन जब हम सब कुछ त्याग करके जीवन जीते हैं तो हमें सर्व ज्ञान यानि केवल ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

ज्ञान की वृद्धि और आचरण की वृद्धि ही जीवन की स्रजनता का परिचायक है। यदि हमारा आत्मिक ज्ञान घटता हुआ है तो हम अपने जीवन को सर्जन की ओर ले जा रहे हैं। ''ध्यान रहे उगते सूरज को सारी दुनियाँ प्रणाम करती है लेकिन डूबते सूरज को कोई प्रणाम नहीं करता है।'' उसी प्रकार उठते जीवन की सभी प्रशंसा करते हैं लेकिन डूबते जीवन को कोई देखना भी नहीं चाहता, तैरती नाव पर सभी बैठना चाहते हैं डूबती नाव पर कोई कदम भी नहीं रखना चाहता। अतः हम सभी अपने जीवन को स्रजनता की ओर ले जायें तभी हमारा यह अमूल्य जीवन इस धरती पर सफल हो सकता है।

क्रान्ति, शान्ति के लिए हो भ्रान्ति के लिए नहीं।

Revolution should be for peace not for illusion.

भगवान के सम्मुख की गई सब क्रियायें साधन
बन सकतीं हैं।

All the activities done before lord become the resource.

सफलता साहस की गुलाम है आलस की नहीं।

Success is Slave to courage not to laziness.

ज्ञान का चिराग भक्ति से जलता है युक्ति से नहीं

कौन नहीं चाहता कि हमारे भीतर का चिराग जल्द से जल्द ही ज्योतिर्मय हो जाये और उस चिराग की रौशनी में हम सब कुछ आराम से जान सकें, कोई भी हमसे कुछ पूँछने के लिए आये तो हम आसानी से उसके प्रश्न का उत्तर दे सकें। हम कितने प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं ? हम किसका उत्तर नहीं दे सकते हैं ? अभी इस बात का भी आज के इंसान को अता - पता नहीं है ज्ञान की सीमा कितनी है और हम कितने ज्ञान को उद्घाटित करने की क्षमता रखते हैं इस बात का भी बोध हम लोग आज तक नहीं कर पाये, इससे यह बात तो स्पष्ट नजर आती है कि ज्ञान असीम है हम इसको सीमा में बाँधकर अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं। यदि कोई सीमा बनाकर व्यक्त करता है तो वह अपनी ही अल्प बुद्धि की सीमा व्यक्त कर देता है। यद्यपि ज्ञान का चिराग वह चिराग है जो अनपेक्षित है, मतलब जब जलेगा तब स्वयं की प्रज्ञा से ही जलेगा, दूसरे की अपेक्षा नहीं रखता, बाहर का प्रकाश अपेक्षित है, बाहर के दीपक के लिए संयोग की जरूरत है लेकिन अंतस् का चिराग संयोग - वियोग से परे स्वयं की ज्योति से जलता है। उस स्वयं की ज्योति को प्रज्ज्वलित करने के लिए तर्क नहीं समर्पण सहित प्रज्ञा चाहिए उसके लिए युक्ति नहीं समर्पित भक्ति चाहिए।

परमात्मा के चरण ऊर्जा निर्सन के पवित्र स्थान हैं और परमात्मा स्वयं ऊर्जावान है। उसकी ऊर्जा को पाने के लिए हमें उसका गुणगान गाना जरूरी है। हमारा अज्ञान का पर्दा परमात्मा के गुणगान की ऊर्जा से ही फट सकता है। परमात्मा की रौशनी हमें उसकी भक्ति समर्पण से मिल सकती है। हम जितनी ज्यादा भक्ति करते हैं ऊर्जा उतनी ही ज्यादा मिलती है, उस ऊर्जा से हमारा चिराग जलने लगता है। परमात्मा की भक्ति से हमें शुद्ध ज्ञानरूपी घी और भक्ति में तन्मयता से शुद्ध धुँआ रहित ज्योति मिल सकती है। ज्ञान रहित भक्ति करने से अपना चिराग नहीं जलता है। विवेक तो प्रत्येक कार्य में समाहित है धर्म विवेकहीनों को है ही नहीं दरअसल आज जितना ही धर्म बदनाम हुआ है या हो रहा है, वह विवेकहीनों के कारण ही हो रहा है।

भक्ति के पथ में हम प्रज्ज्वलित तब हो सकते हैं, जब हमारी तन्मयता विषय - आकांक्षाओं से रहित हो। विषयों का धुँआ भक्ति की ज्योति पर अँधकार की पर्त बना देता है। यदि केवल ज्ञान का दीप प्रकाशित करना है तो हमें अपनी ओर मुखरित होना पड़ेगा सही बात तो यह है कि ''भक्ति तो एक बहाना है सच तो यह है कि हमें अपना चिराग जलाना है।'' यदि हम तर्क से या

विचारों से अपने चिराग में रौशनी भरना चाहें तो बाती तो पैदा हो सकती है लेकिन तेल नहीं मिलता है। अपने भीतर ही ऐसा तेल है जो ज्ञान के जोर से निकलता है और किसी से नहीं। भक्ति में प्रेम – समर्पण जरुरी है। हम संकल्प के अभाव में भक्ति करते हैं, इसलिए हम सभी का जीवन आज तक खतरे में है। आज के युग में कोई भी ऐसा नहीं है जो अपने आपको स्वतंत्र मानता हो। यदि कोई अपने आपको स्वार्थवश कह दे कि मैं स्वतंत्र हूँ, तो उसका कहना गलत ही होगा। क्योंकि सच को बताने कि जरूरत नहीं कि मैं सत्य हूँ वह तो मात्र स्वयं ही सत्य की ज्योति है। हम सभी अपने चिराग को भक्ति से जलाएँ युक्ति से नहीं तभी जीवन ज्योतिर्मय हो सकेगा।

मानवता, मनुष्य के व्यक्तित्व की कृति है।

Humenity is a creation of the personality of man.

संत समागम करोड़ों वर्षों की भक्ति का फल है।

Saints compani is the result of devotion of millions years.

पानी का महत्त्व तब है जब प्यास है।

Importance of water will be when thirsty.

OR

water becomes very important when you are thirsty.

महावीर वन गये तो बन गये।

Mahaveer rose to lord in forest. (Jungle)

भय मिटाने के लिए सामना जरुरी

आज हर आदमी जन्म से ही भयशील है। केवल आदमी ही नहीं है हर प्राणी यहाँ पर भयाक्रांत है उसे खुद ही नहीं पता कि हम भयशील हैं क्यों? भय का अभ्यास काफी पुराना होने के कारण हम उससे इतने अभिन्न हो गये हैं कि उसे हम आदमी का स्वभाव समझने लगे हैं, विभाव को स्वभाव समझने लगे हैं। हुआ यह कि भय का सामना नहीं करना चाहते जिससे भय भयशील न होकर हमारे लिए भयानक बना हुआ है। भय भयशील नहीं है हमने उसे भयशील बना लिया है। हर आदमी चाहता है कि भय हमें न होवे यह बात भी सही है कि भय तभी तक होता है जब तक हम अज्ञान से घिरे रहते हैं, अज्ञान हमारे हृदय को मजबूत नहीं, भय के लिए मजबूर कर देता है और जब हमें सत्य ज्ञान हासिल हो जाता है तो भय का सामना करने की शक्ति तीव्र होती चली जाती है। और यह भी सत्य है कि जितना डरोगे भय उतना ही डराएगा यदि सामना एक बार अच्छी तरह से हो जाये तो भय भी भय खाने लगता है, अतः भय मिटाने के लिए सामना करना जरुरी है।

भय उसी को शिकार करता है जो भयभीत है भय स्वयं ही कायर है क्योंकि वह हमेशा कायरों पर वार करता है। भय ने कभी वीरों पर नजर तक नहीं डाली जिस वीर पर नजर डाली उसी के द्वारा भय को जड़ से मिटा दिया गया। भय कुत्ते के स्वभाव वाला है। कुत्ते से जितने डरो वह उतना ही डराता है, यदि कुत्ते के सामने डटकर खड़े हो जाओ तो कुत्ता स्वयं ही पूँछ हिलाकर अपने मालिक की तरह पाँव चाटने लगता है। भय जुगनुओं की भाँति है जो अँधेरे में चमकते हैं और सूर्य के उजाले में अपना अस्तित्व खो बैठते हैं, ठीक वैसे ही अज्ञान के अँधेरे में भय अपना मुँह उठाए रहता है, लेकिन ज्ञान के सूर्य में भय स्वयं भयभीत होता हुआ अपने अस्तित्व की सुरक्षा हेतु इधर - उधर भागता है। भय चेतन में नहीं भीतर में नहीं, अचेतन में है, बाहर में है।

भय को मिटाने के लिए सेल्फॉस खाने की जरूरत नहीं, आत्महत्या करने की जरूरत नहीं है, स्वयं से लड़ने की जरूरत नहीं बस स्वयं को जानकर अपने अस्तित्व को समझकर भय का सामना करने के साहस की जरूरत है। ये साहस ही हमारे जीवन में शक्तिवर्धक टॉनिक है। कहा भी है, शक्ति का विकास साहस के प्रदर्शन से होगा अर्जित विचारों से होगा।

भय की मूल जड़ परिग्रह है हम जितना - जितना धन, सोना, जायदाद एकत्रित कर लेते हैं, हमारा भय उतना - उतना अधिक होता चला जाता है, एक गरीब उतना भयभीत नहीं है जितना एक अमीर भयभीत है, एक अपरिग्रही साधु उतना भयभीत नहीं है ,जितना एक परिग्रही साधु भयभीत है। साधु दोनों है अतः भय परिग्रह का होता है, हम सभी भय को मिटाने के लिए एक बार भय का सामना जरूर करें, सामना किये बिना भय भयभीत नहीं हो सकता है, सामना नहीं करने से भय हमारे लिए और कमजोर बनाता है। सामना जरूरी है यदि हम निर्भय होना चाहें तो।

सच्चाई अँधेरे में नहीं उजाले में ही दिखेगी

दुनियाँ में एक छोटे से छोटा दरिद्री और हीन व्यक्ति भी सच्चाई से परिचित होना चाहता है, फिर बड़े और बुद्धिमानों का कहना ही क्या? सच्चाई वह सुंदर हीरा है जिसे पाने के लिए आदमी कुछ भी कर सकता है, एक संत सच्चाई पाने के लिए सब कुछ दाँव पर लगा देता है ओर अपना चिराग जलाने का भरसक प्रयास करता है। वह सच्चाई बाहर की वस्तुओं में नहीं बल्कि अपने अंदर के अस्तित्व में खोजता है। संत की दशा दुनियाँ में रहते हुए भी न रहने जैसी होती है वह परमात्मा के ख्याल में खोया - खोया सा रहता है, परमात्मा ही परम् सत्य है, यदि परमात्मा अपने अनुभव में आ जावे तो सत्य को पाना बहुत ही सरल हो जावे, लेकिन परमात्मा का अनुभव सच्चाई को आचरण के रूप में प्रकाशित करना है सत्य का आचरण अज्ञान के अँधेरे में नहीं ज्ञान के उजाले में उद्घटित होगा और जब तक हमें ज्ञान नहीं होगा तब तक सच्चाई के अस्तित्व का पता करना भी नामुमकिन है अज्ञान के अँधेरे में असत्य भी सत्य भासित होता है।

यदि किसी कमरे में वर्षो से अँधेरा है और उसमें अँधेरा भरना चाहें तो क्या किया जा सकता है। उसमें अँधेरा भरोगे कैसे? वहाँ तो पहले से ही भरा हुआ है। यदि उजाले की कहते हो तो हमारी हर क्रिया उजाले को भरने की होनी चाहिए। अँधेरों के मैदान में एक दीप जलाना पुरुषार्थ का काम है और दीप जलाकर हमेशा हमेशा जलाए रखना, हमेशा जागृत रहकर जीने के समान है। पुरुषार्थ की तीली दीप जला ही सकती है बुझा नहीं सकती। एक आलस ही तो है जो इंसान का शत्रु भी है और अँधेरे का हेतु भी, यदि आलस हमारे जीवन में न होता तो उजाला ही उजाला होता, आलस अँधेरे का शत्रु है और पुरुषार्थ है सच्चाई को उद्घटित करने वाला आईना।

हमारी सारी आराधना का लक्ष्य उजाले की किरण को पाना है, हमारी पूरी ज़िंदगी की यात्रा उजाले की खोज में है, हमारा अंतिम पड़ाव आनंद, शांति, सुख में विलीन होने का है, लेकिन तब हम हताश हो जाते हैं, जब हमें ये नसीब नहीं होते। उजाला पाने के लिए हमें अँधेरे को समझना जरूरी है, यदि अँधेरे की तह तक हम न पहुँच पायेंगे तो उजाला नसीब कैसे होगा, सत्य का भान असत्य को पूर्णतः से समझ लेने पर ही होता है। क्योंकि सत्य को असत्य कहने वाला या तो अज्ञान है या अधकचरा ज्ञान है। धर्म के फूल उजाले के वृक्ष पर फलते हैं, धर्म के फल सत्यता के बीज से पनपते हैं। ज्ञान की ज्योति में हमें अपना अस्तित्व भी दिखाई देता है और दूसरों का भी। लेकिन यह अकाट्य सत्य है कि अपना चिराग जब अपने ही बोध से जलेगा, अपने ही बोध से भरेगा तभी हम सच्चाई को लख सकेंगे और अपने अदृश्य रूप को लख सकेंगे, और यह हमारा यह तुच्छ जीवन सफल हो सकता है।

शांति और सुख सत्य की छाया में

संसार में सुख शांति पाने के फार्मुले हैं तो दुख अशांति पाने के सूत्र भी हैं। संसार में लोगों को देखकर यही महसूस होता है कि लोगों ने असत्य को ज्यादातर अपनाया है। आज लोग सत्य की चाह रखे हुये हैं और असत्य को अपनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। आज सत्य केवल विचारों में है और असत्य आचारों में है याद रहे जितना भी परिणाम मिलता है वह सब आचरण का मिलता है आचरण से ही भविष्य निर्मित होता है। आचरण ही हमारा संस्कार बनाकर हमारा जीवन निर्मित करता है। आदमी शांति व सुख की चााह में न जाने कहाँ - कहाँ दौड़ता है लेकिन शांति फिर भी नसीब नहीं होती तो यह बात सत्य है कि कहीं ना कहीं मेरी खोज में गलती जरुर है। यह गलती सुधार दी जाये तो शांति व सुख अवश्य ही उपलब्ध होगा। शांति और सुख सत्य की छाया में ही प्रकट हो सकेगा

असत्य ही जीवन में अशांति को जन्म देता है। असत्य के कारण कई ज़िंदगी में हमें कष्टों का सामना करना पड़ता है, असत्य हमेशा परमात्मा के विपरीत चलता है, असत्य हमें अँधेरे मे धकेलता है, असत्य अँधेरे की परत है जिससे जला हुआ दीप भी बुझ जाता है, असत्य ऐसी आँधी है जिसमें सभी गुण तबाह हो जाते हैं। दुनियाँ में सत्य भी अभी जीवित है। और असत्य भी जिंदा है क्योंकि अभी आदमी दुखी भी है, अशांत भी है और परमात्मा को याद कर कुछ सत्य भी समझता है। आज आदमी को सुख - दुख दोंनों ही महसूस होते हैं।

सबसे बड़ा सत्य परमात्मा है। और परमात्मा का दर सत्य पाने की प्रथम सीढ़ी है। सत्य परमात्मा तक पहुँचने का रास्ता है। सत्य पाने के लिए परमात्मा की उपासना जरूरी है सत्य को खोजना केवल संतों के हाथ में है और किसी के हाथ में नहीं। हम सत्य देखना चाहते हैं तो संतों के नजदीक आकर उनके अनुभवों से परिचित होवें तभी हम शांति और सुख की छाया में पहुँचकर सत्य को उपलब्ध हो सकते हैं। सत्य सार्वभौम है सत्य को पाने का प्रयास हम सभी को पूरी शक्ति लगाकर करना चाहिए तभी जीवन की सफलता है।

प्रकृति की रक्षा संस्कृति से हो सकती है।

The security of nature can only be by culture.

इंसानियत ही इंसान की मूल धरोहर है

हर इंसान के अन्दर एक ख्वाहिश निरंतर पनप रही है कि सारी दुनियाँ मेरी मुट्ठी में हो मेरा अधिकार एक छोटे से देश पर हो सारा देश मेरी अँगुलियों पर नृत्य करे। इस विचारधारा में भी आदमी की धरोहर अदृश्य रूप में छिपी हुई हैं। आज आदमी में वह शोहरत शान ही नहीं जिससे वह अपनी शोहरत पहचान सके आज के आदमी को अपनी धरोहर भी पता नहीं संसार की धरोहर को वह अपनी धरोहर मान बैठा है, जिस कारण अपनी अमानत को पूर्णतः भूल चुका है। आज आदमी इंसान की कीमत वस्तु से किया करता है वास्तविकता से नहीं, और परमात्मा इंसान की कीमत वास्तविकता से करता है, वस्तु से नहीं। परमात्मा और इंसान में मतभेद होने के कारण आदमी चिंतित परेशान और तत्त्व भूला नजर आता है, दूसरों पर अत्याचार करता हुआ नजर आता है मेरा ख्याल है इंसानियत के अभाव में इंसान का जीवन वैसे ही है जैसे खूशबू के अभाव में फूल का, प्रकाश के अभाव में सूरज का, साँस के अभाव में जीवन का। अतः इंसानियत ही इंसान की धरोहर है।

मानव अपने स्वभाव व धर्म पर नजर डाले और उसे प्राप्त करने की कयामत करे तो यह पृथ्वी स्वर्ग बन जाये और देव भी यहाँ उतरकर निवास करने लगें। इंसानियत का बीज यदि इंसान में अंकुरित हो जाये तो मानव प्रेम- दया- विश्वास- सहानुभूति व समानुभूति से भरने लगे ये सभी मानव के स्वभाव होना चाहिये लेकिन विडम्बना यह है कि मानव आज अपरिचित है तो मात्र अपने ही स्वभाव से। यदि स्वभाव अपने पास है तो सबकुछ अपने पास है, इज्जत - शौहरत स्वभाव के पीछे चलने वाली छाया हैं। सत्यधर्म और सच्ची चाह के अभाव में हम मजदूरों की मजदूरी जैसी वस्तुओं को तो पा सकते हैं लेकिन महान वैभव हम कभी भी हासिल नहीं कर सकते हैं। मानवता की नींव पर ही हमारे जीवन का महल खड़ा होता है मानवता इंसान की वह रीढ़ है जिसके बिना मानव धर्म व समाज में बैठने योग्य भी नहीं हो पाता है।

हम संसार की सारी वस्तुओं के मालिक बनकर भी हम मालिक नहीं हो सकते अपराधी तो हो सकते हैं। लेकिन यदि हम अपने ही मालिक बन जायें तो सभी के मालिक हो सकते हैं। संसार इंसान को खुली चेतावनी दे रहा है कि कोई इंसान इंसानियत को प्रकट करके तो दिखाये, हम उसकी आराधना करने को तैयार हैं। दुनियाँ यही फरमा रही हैं कि कोई दिल से सूरज निकालकर के तो दिखाये, कोई अपने शौहरत के नजारे प्रकट करके तो दिखाये, हम उस सूरज की शौहरत पर जान लुटाने को तैयार बैठे हैं। अतः हम सभी को इंसानियत-मानवता से इतना लगाव रखना चाहिये इतना प्रेम करना चाहिये कि उसकी किरणें हमारे जीवन से प्रस्फुटित होकर हमारा अल्प जीवन उज्ज्वल बनाने लगें तभी हमारा जीवन मंगलमय होता हुआ प्रशस्त हो सकता है।

आत्मा की शरण में ही स्वतंत्राता का फूल खिलेगा

भवकानन् में हमें ऐसा कोई आदमी दिखाई नहीं देता जो अपने और दूसरे की जरूरत न हो और जिसको किसी भी प्रकार का भय भी न हो जहाँ पर अपना ही अपना हो, अपनी ही सत्ता पर हो और अपना ही सत्व हो। यह भी सही है कि सभी के हृदय से पूछो तो सभी यही चाहते हैं कि मुझे किसी की शरण न लेना पड़े। एक बूढ़ा पिता एवं वृध्द माँ भी यही चाहती है, एक पुत्र भी अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है, एक लड़की भी स्वयं जीना चाहती है किसी की दासता को वह हृदय से स्वीकार नहीं करती है। लेकिन सभी की दासता है कि हम सभी पराधीनता को प्राप्त हैं यह सही है कि जब तक हम अपने भीतर बैठे परमात्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं कर पाते उसका वेदन नहीं कर पाते तब तक हमारी आत्मा मरण धर्मा ही बनी रहती है वह जन्म और मरण को ही जीवन समझती हैं, परतंत्रता में स्वतंत्रता पाने का प्रयास ही पुरुषार्थ है और वह पुरुषार्थ जिसके द्वारा किया जावे वह ही धर्म है जिससे स्वतंत्रता हासिल हो वह ही धर्म है। ऐसी स्वतंत्रता का फूल केवल अपनी आत्मा की शरण में जाने पर अपनी आत्मा की बात को हृदय से स्वीकार करने पर ही खिलेगा, बाहर की वस्तुओं से नहीं।

अंतरंग हृदय की बात को आत्मसात् करके न स्वीकारने पर मृत्यु को बढ़ावा मिलता है। आत्मा की शरण लेने पर मौत भी मौत के घाट उतर जाती है। पराधीन को शरण मानने पर हमारे अंदर भय के काँटे पैदा हो जाते हैं यदि हम एकांत में शांति से बैठकर यह खोजें कि हम क्या चाहते हैं? तो हर आदमी का ही नहीं हर प्राणी का यही उत्तर होगा कि सुख चाहते हैं। सुख शांति की चाह हर दिल में बैठी हुई है। यदि हम हृदय की बात को मानकर हृदय में ही अवस्थित रहें मन की मान्यता को नकार दें तो यह बात सही है कि हमारे अंदर व बाहर के जीवन में सुख शांति के फूल ही खिलेंगे। अशांति नाम मात्र की भी नहीं होगी। मृत्यु का मिटना बहुत सरल है। भय को तभी मिटाया जा सकता है जब उसका सामना कर लिया जावे। जब तक हम भय का सामना नहीं करेंगे भय का भूत हमें भ्रमित करता ही रहेगा। भय और भ्रम में कोई अंतर नहीं है भ्रम के कारण ही भय निर्मित हो गया है।

जीवन मरणशीलता नहीं अमरत्व को लिए हुये है यह बात ऐसे सत्य है कि हर आदमी अमरत्व को प्रणाम करता है, हर आदमी अमरत्व को पाने के लिए प्रयासरत है, मरण से किसी को भी प्रेम नहीं हैं। स्वतंत्रता ही अमरत्व का अनुभव कराने में समर्थ है। वह स्वतंत्रता ऐसी हो जो किसी से भी प्राप्त न हुई हो और किसी से भी नष्ट न हो सके यदि चंद वस्तुओं या प्रतिकूलता से स्वतंत्रता

नष्ट होती है तो वह दो कौड़ी की स्वतंत्रता परतंत्रता ही है। जीवन में धर्म के गुल लगाकर जीवन को जीवंत गुलशन बनाना तभी हो सकेगा जब हम परमात्मा के हाथ में अपने जीवन की बागडोर सौंप देंगे। परमात्मा उसी का ध्यान रखता है जो परमात्मा का ध्यान रखता हो यह कथन सुप्रसिद्ध है। अतः हम सभी को चाहिये की अपने परतंत्र जीवन में स्वतंत्रता का फूल खिलाएँ, स्वतंत्रता ही स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक है परतंत्रता मौत को निमंत्रण है। जीवन में जीवंतता हमारा धर्म है मौत हमारे अपराध की सजा। फूल तभी महकेगा जब हम स्वयं अपनी आत्मा को अच्छे सद्‌गुणों से सुसज्जित करेंगे, इसी में हमारे अमूल्य जीवन की सफलतम आकांक्षा छिपी हुई है।

जानवर कभी पूर्ण नहीं हो सकता, आदमी ही
हो सकता है।

An animal never be perfect, only man can be.

धर्म, सिद्धान्त नहीं, प्रयोग है, चेतन, योग नहीं, उपयोग है।

Religion is not a principle but an experiment (application),
awakning is not a joga but a use.

गुड़ गोबर (पुण्य-पाप) को एक समझना बुद्धिमानी
नहीं जड़ता है।

It is no wisdom not to diseriminate virtues.

झगड़ा सत में नहीं मत में है।

Dispute is not in truth but in View.

धर्म से धन व सुख दोनों प्राप्त होते हैं

हर आदमी उन ख्यालों में डूबा हुआ है जिससे धन और सुख की प्राप्ति होती है। ख्याल वह विचार है जिसे हर कोई बनाने में स्वतंत्र है मानव की एक मान्यता को तोड़ना टेढ़ी खीर है। यदि किसी के दिल पर यह मान्यता बैठ गई हो कि धन से धन व सुख दोनों की प्राप्ति होती है तो फिर उसकी सारी ज़िंदगी की दौड़ धन की लालसा में गुजर जाये तो कोई इसमें आश्चर्य की बात नहीं। धन से धन होता है यह हमेशा नहीं कहा जा सकता है। कभी - कभी धन से हार्ट अटैक, बी. पी. तेज, भय, टेंशन एवं कई रोग पैदा हो जाते हैं। यह बात भी साफ जाहिर है कि गरीब किसान या कोई मजदूर जो मेहनत करता है धनहीन है उसे कभी हार्ट अटैक, भय, बी. पी. तेज, टेंशन जैसी बीमारियाँ नहीं होतीं और एक पैसे वाले के पास ये सभी दुख पैसे के साथ उपहार में मिलते हैं। धन से सुख हो यह जरूरी नहीं है लेकिन धर्म करने से धन व सुख दोनों प्राप्त होते हैं।

धन सभी अनथों की जड़ है आज दुनियाँ में जितने भी अनैतिक कार्य हो रहे हैं वो सभी धन के लिए हो रहे हैं। जितने भी जुल्म हो रहे हैं वो धनिकों के यहाँ ही हो रहे हैं। एक शेर फरमाया है ''जुल्म देखा तो शहंशाओं की हस्ती में देखा और खुदा देखा तो गरीबों की बस्ती में देखा'' धर्म वह है जो व्यक्ति को अहम् से नहीं अर्हत् से जोड़ता है धर्म के अभाव में यहाँ पर कोई परमात्मा नहीं रह पाता और जहाँ परमात्मा का अभाव हो जाता है वहाँ अहंकार का अँधेरा अपने पाँव पसार लेता है। फिर उसका पतन अवश्य ही होगा। धर्म की नाव को पकड़कर जो समुद्र में कूद पड़ा है उसमें पानी हवाओं तथा तूफान के थपेड़े तो लग सकते हैं लेकिन वो कभी डूब नहीं सकता। धर्म के लिए जिसने अपना जीवन सौंप दिया है उसकी रक्षा फिर भगवान को या देवताओं को करनी ही पड़ती है।

धर्म के अलावा दुनियाँ में कोई ऐसी वस्तु नहीं जो व्यक्ति को सुख प्रदान कर सके क्योंकि पर वस्तु में सुख का लेश मात्र भी नहीं है यदि हम भोजन व्यंजनों से सुख मानते हैं तो अधिक भोजन करने पर दुख क्यों होता है? यदि हम कूलर से सुख मानते है तो चार कूलरों की हवा से हम बीमार क्यों हो जाते हैं? इससे ये बात सिद्ध है कि वस्तु से नहीं वास्तविकता से सुख मिल सकता है ये हमारी भूल है कि बाह्य वस्तु से सुख समझते हैं। वास्तविकता यह है कि आनन्द का स्रोत भीतर से झरता है और निमित्त बाहर की वस्तु का होता है तब हमें बाहर की वस्तु दिखाई देती है लेकिन भीतर से हम अनभिज्ञ हैं तब हम बाहर की वस्तु से सुख होता है ऐसा समझ लेते हैं और आश्चर्य यह कि यह भूल इतनी गहरी अंतःकरण में बैठ जाती है कि फिर पूरी ज़िंदगी भी इसी भूल में गुजर जाये तो कोइ आश्चर्य नहीं। अतः हम सभी धर्म को अंतःकरण से करें तभी हम सुख शांति को पाकर समृद्ध होकर अपना जीवन सफल कर सकते हैं।

गलत जीवन अंत में भयभीत नज़र आता है

हमारे जीवन का एक-एक समय कीमती है हम खुद नहीं समझ पाते कि ऐसा कैसे है? क्योंकि जीवन का काफी समय हम सभी का व्यर्थ निकल जाता है हमारे जीवन का लगभग 80 प्रतिशत भाग पाप में लिप्त रहता है। कभी - कभी लोग गरीबी को दुःख समझकर धन मिलने पर अपने आपको सुखी मानते हैं लेकिन उनके हृदय को टटोला जाये तो पता चलेगा कि वह बहुत ही भयभीत हैं अमीर होने का मतलब ही है बड़ा पापी। जैसे - जैसे व्यक्ति पर धन वैभव बढ़ता जाता व्यक्ति भयशील और कमजोर होता जाता है लेकिन जैसे - जैसे ज्ञान - अनुभव संयम से भरता जाता है वैसे-वैसे वह संकल्पी, शक्तिवान और धैर्यशाली साहसी होता जाता है। प्राणी जब साहस धैर्य संकल्प व शक्ति से भरता है तब इसका जीवन सुन्दर और सादगी से भरा हुआ होता है ऐसे इंसान को मृत्यु के समय भय नहीं होता हैं अंत समय में भी विवेक के तंतु जागृत रहते हैं और ऐसा व्यक्ति ही भविष्य में मृत्यु का अंत करता हुआ स्वयं को स्वयंभू बना लेता है ऐसा आदमी ही उगता हुआ सूरज के तुल्य होता है।

एक बालक स्कूल जाने से तभी डरता है जब उसका होमवर्क गलत होता है, एक व्यापारी इन्कमटेक्स ऑफीसर से तभी डरता है जब उसका हिसाब - किताब गड़बड़ होता है। ऐसे व्यक्ति मृत्यु के समय तभी डरते हैं जब उसकी ज़िन्दगी में परमात्मा का नाम कम लिया गया है और पैसा - पत्नि का ध्यान ज्यादा रखा गया है। पैसा - पत्नि - पप्पू - पप्पी पर ध्यान देने के कारण ज़िन्दगी भय और गलत धारणा से भर गई है और अंत समय पर प्राणी को परमात्मा के दर पे जाना पड़ रहा है क्योंकि जिसने मुझे वे तन दिया है अंत वह इस तन को प्राप्त करने का हिसाब भी मांगेगा। यदि गलत हिसाब दिया गया तो कई बार सजाये मौत की सजा मिलेगी यदि जीवन सही पाया गया तो आनंदित गुणात्मक मौज मिलेगी।

हमारा जीवन तन- मन- वचन- धन ये सभी सदुपयोग करने के लिए मिले हैं इनको पाकर हमें नैतिक जीवन बनाकर के ज्ञानार्जन करना चाहिए एक डॉ. एम.एस. पढ़ने वाले विद्यार्थी से खुश होता है, एक कलेक्टर, आइ.ए.एस. करने वाले से खुश होता है, ठीक वैसे ही परमात्मा उसी से खुश होता है जो अनंत ज्ञान, दर्शन, सुख की सत्ता को पाने के लिए निरन्तर प्रयत्न करता रहे, अपने जीवन को निरन्तर उज्ज्वल बनाता रहे, अपनी प्रज्ञा को तब तक प्रखर करता रहे जब तक सम्पूर्ण ज्ञान नहीं हो जावे परमात्मा ही इस दुनियाँ में ऐसा है जिसने मौत को भी मौत के घाट उतार दिया है उसी की शरण और उसी की आराधना से हमारा जीवन भय रहित हो सकता है क्योंकि भय उसी से समाप्त होगा जो भयभीत नहीं है। अतः हम सभी राम-महावीर- हनुमान जैसा जीवन जीने का, बनाने का प्रयास करें और भय को मिटाने का प्रयत्न करें तभी इस मानव जीवन की सफलता हमें हासिल हो सकेगी।

जाओ वहाँ, जहाँ सब कुछ मिले

पाने की चाह में हर आदमी ही नहीं हर जानवर, पक्षी, देव भी चारों ओर बे हताश होकर घूम रहे है। इन सभी में आदमी की जितनी तेज दौड़ है उतनी तेज दौड़ किसी की भी नहीं है। पाने में कोई भी वस्तु हो सकती है आदमी जितना पा सकता है उतना कोई भी नहीं पा सकता। अन्य प्राणी आदमी से ज्यादा खो सकते हैं। लेकिन इंसान कितना पा नहीं सकते। पाने की चाह सभी में है लेकिन पाने के पहिले यह भी खोजना चाहिए कि हमें पाने के लिये कहाँ हाथ पसारना चाहिए? हर जगह अपने हाथ न फैलाये क्योंकि बेइज्जती होती है उस राजा के यहाँ भी हाथ न फैलाएँ जो राजा खुद कहीं हाथ रोज फैलाता है यही बात सही है कि कहीं पर भी हाथ फैलाए जायेंगे तो कुछ न कुछ तो मिलेगा लेकिन उतना नहीं मिलेगा जितना कि तुम चाहते हो पाने का भाव ही आदमी में हताश पैदा करता है करने का भाव पुरुषार्थ पैदा करता है कहा भी है'' चेहरे पे लिखा है हर एक आम के हम है गुलाम वो भी गुलाम के'' हमको उसके दर पर अपनी झोली फैलानी चाहिए जो किसी से लेनदार नहीं है सबको देनदार है हमें उसी को शरण बनानी चाहिए जो किसी से लेनदार नहीं है सबको देनदार है, हमें उसी को शरण बनानी चाहिए जो स्वयं ही पूर्णतः स्वतंत्र है हमें वहाँ अपनी मिन्नते दुहराना चाहिए जहाँ सभी मिन्नते पूर्ण होने में कामयाबी हासिल हो।

''माँगन से मरना भला, यही बढ़न की सीख। अपने स्वारथ कारणे कभी न माँगो भीख।।'' परमात्मा के दर पर भी माँगने के लिये जाये तो कोई जरूरी नहीं कि फिर यह कहीं मेरे द्वार पर आना बंद न कर दें। और सही बात तो यह है कि माँगते वही है जो कामचोर हैं अथवा कम मेहनत में ज्यादा चाहते हैं। यदि कोई मेहनत करता है और माँगता है तो भी उसे मेहनत का फल मिलता है और कोई मेहनत न करके माँगता है तो भी उसे कुछ नहीं मिलता इससे यह सिद्ध है कि माँगना नपुंसकों के दिमाग की उपज है जबकि न माँगना ज्ञानियों की दहाड़ है हमें परमात्मा में आस्था रखकर उसकी भक्ति तो करनी चाहिए लेकिन भक्ति के प्रतिफल में कुछ चाहत का भाव नहीं रखना चाहिए। परमात्मा आदमी जितना धोखेबाज नहीं वहाँ तो न्याय है आदमी है जो अधिक श्रम के बदले कम देना चाहता है परमात्मा को न्यायप्रिय है जितनी आराधना करोगे प्रतिफल उतना ही होगा कम या ज्यादा नहीं।

परमात्मा के दर पर हम जाते हैं तो मिन्नतें पूरी हों इसके लिये नहीं जाते बल्कि परमात्मा की जो शक्ति और स्वतंत्रता है उसे देखकर हमें अपनी शक्ति ज्ञान स्वतंत्रता का ख्याल आ जाये और हमारे अंदर उस भगवत्ता को

प्रकट करने की दहाड़ पैदा हो जाये। जिससे एक दिन परमात्मा जैसा ज्ञान मेरे अंदर भी प्रकट हो सके। कहा भी है जैसा द्रव्य देखते हैं वैसे ही भाव बनने लगते हैं। यदि किसी पहलवान की तस्वीर देखें तो भाव होने लगता है मैं भी पहलवान बनूँ किसी हीरो का चित्र देखकर एक्टिंग के भाव बनने लगते हैं ठीक वैसे ही परमात्मा का रोज और बार - बार देखने पर परमात्मा बनने संत बनने के भाव बनने लगते हैं ये भाव जब साकार रूप ले लेते हैं तो हम अपना अस्तित्व पाकर हमेशा - हमेशा के लिए सुखी हो जाते हैं हम सब कुछ पा जाते हैं। अतः हम सभी को वहाँ लाख बार जाना चाहिए जहाँ दुनियाँ का ही नहीं अपना भी सब कुछ मिल जाता है। तभी अपना जीवन सफलता की ओर व मंजिल की ओर बढ़ सकेगा।

शक्ति की कमी विचारों में कमी नहीं लाती,
साकार करने में कमी लाती है।

Decrease of energy doesn't reduce thoughts but their materialization.

धर्म समझने में एक समय लगता है,
धर्म समझाने में बहुत समय लगता है।

Religion takes sometime to understand but longer to teach.

उत्तम विचारों का दमन करना आत्महत्या है।

Suppression of noble thoughts is a Suicide.

चिराग न जला तो चिरकाल तक दु:ख रहेगा

यदि कोई आदमी ने अपने हृदय के चिराग को रोशनी से भर लिया है तो हर आदमी उसके चिराग से अपने चिराग को जलाना चाहता है और दुनियाँ में आदमी जितने भी प्रयत्न कर रहा है अपने चिराग को रोशन करने के लिये ही कर रहा है। जले हुए चिराग की हिफ़ाजत भी जरूरी होती है हम भगवान की आराधना करते हैं, ग्रंथों का स्वाध्याय करते हैं, हम अपने चारों ओर एक परिमाण की सीमा खींचते हैं ये सब चिराग की ज्योति को बरकरार रखने के लिए उपाय है जो पैदा किया जाता है हृदय का चिराग कभी दूसरों की दम पर नहीं जलता है। यह एक ऐसा चिराग है जो स्वयं की दम पर ही रौशन होता है दूसरे के दम पर जला चिराग दूसरों के द्वारा बुझ भी जाता है। लेकिन अपनी दम पर जला चिराग दूसरों से नहीं बुझता अपने से ही बुझ सकता है। चाहे राम कहो, महावीर कहो या कहो हनुमान प्रभु ये सभी अपनी दम पर चिराग जलाने वाले थे इसलिये आज सभी का मस्तिष्क उनके लिये झुका हुआ है। ये ऐसे महापुरुष थे जो जल करके आये और दुनियाँ के लोगों को जलाकर के चले गये जब भी अपना चिराग जलेगा तो ऐसे ही भगवंतों से जलेगा और अगर अपने चिराग को हम यहाँ पर न जला पाये तो सजा कई जन्मों तक हो सकती है।

दुनियाँ में चार तरह के लोग होते हैं एक वो जो अंधेरें में आते हैं और अंधेरें में जीकर अंधेरे में ही मर जाते हैं। दूसरे वो जो अंधेरे में आकर उजाले में जाते हैं तीसरे वो जो उजाले में आते हैं और अंधेरे में जाते हैं। चौथे वो जो उजाले में आते है और कई लोगों के चिराग जला जाते हैं। जो व्यक्ति अपना ज्ञान का चिराग जला लेता है अंधेरा उसके पास फटकता नहीं है। अंधेरे से लड़ना नहीं है अन्यथा सारी शक्ति लड़ाई में ही नष्ट हो जायेगी हमें केवल अपना चिराग जलाना है। देखा जाये तो चिराग में ज्योति की ही कीमत है शाम को चिराग में ज्योति जलाते समय उसे प्रणाम करते हैं इसका मतलब है कि जो अंधेरे में रोशनी पैदा कर दे उसको प्रणाम है।

अंधेरे में हम कई जन्मों तक रह सकते हैं लेकिन उजाले में कई भवों तक नहीं रह सकते हैं। अंधेरा कभी भी पूर्णता को प्राप्त नहीं हो सकता लेकिन उजाला एक दिन पूर्ण हो जाता है। आज का अंधेरा कल और अंधेरा बढ़ाएगा लेकिन एक उजाले की चिनगारी एक भगवतता प्राप्त करा देगी। गर हम अपना चिराग न जला पाए तो दुनियाँ की आग हमें जला देगी और अगर हमने चिराग जला लिया तो मेरा चिराग दुनियाँ की आग को पानी बना देगा। हम या तो जलें आग में या जलायें चिराग को। यदि हम चिराग न जला पाये तो हमें कई बार मरने की सजा सुना दी जाएगी। अतः हम सभी अपना चिराग अपनी ज्ञान की ज्योति से विभूषित करके रौशनी से भरें तभी अपने दु:खों को नष्ट करने में हम सफल हो सकते हैं। तभी जीवन की सफलता है।

कर्माधीनता में नहीं स्वाधीनता में है मोक्ष

जो भी प्राणी इस संसार में जी रहा है फिर वह चाहे कोई भी हो तिर्यंच हो संत हो या भगवंत भी क्यों न हो वह कर्माधीन अवश्य होगा कर्म से संसार है और कर्म में संसार भ्रमण है। धर्म एक ऐसी पवित्र वस्तु है जो पराधीनता को मिटाकर स्वाधीनता पैदा कर देती है यदि संसार में धर्म का अस्तित्व न होता तो कोई भी पवित्र न होता ''धर्म का इत्र ही जीवन को पवित्र बनाता है'' धर्म के इत्र की सुगंध जब फैलती है तब सारा जीवन महकता है उस जीवन के परिवेश में सभी लोग घुलना चाहते हैं धर्मी के पास बैठकर सभी सुगंधित होना चाहते हैं। हम कर्म करते रहेंगे और कर्म के बहाव में बहते रहेंगे तो निर्वाण भूमि पर कदम रखना असंभव हो जाएगा। कर्माधीनता के बंधन को जानकर उसे तोड़ने का पुरुषार्थ करेंगे बाहर की इन्द्रियों के विषयों से हटकर निज में विलीन होंगे तभी धर्म उद्घटित होगा। ये धर्म ही हमें स्वाधीनता और पराधीनता का बोध कराकर संसार से विमुक्त कराकर मोक्ष महल तक ले जायेगा। जिस दिन हम 48 मिनिट तक बिना सोचते हुए निज में विलीन होने की क्षमता रखने में समर्थ हो जायेंगे उसी दिन मोक्ष हमें स्वतः ही हासिल हो जाएगा।

आत्मानुभव मोक्ष का मूलभूत बीज है जब बीज हमारे पास होता है तो वृक्ष भी लग सकता है और उसमें फल-फूल भी फल सकते हैं बीज के अभाव में ये सब कुछ होना असंभव है। कर्माधीन होने के कारण हमारी अंतरंग की शुद्धता, अशुद्धता में परिवर्तित हो गई है और जब हम धर्म के द्वारा अशुद्ध शरीर में शुद्धता पैदा कर लेंगे तो यह अशुद्ध शरीर ही शुद्ध परमाणु रूप में परिवर्तित हो जाएगा। शुद्धात्मा स्वयं को भी शुद्ध कर लेती है और शरीर के परमाणुओं को भी शुद्ध कर देती है ऐसी शक्ति सभी के अन्दर विद्यमान है। कर्माधीन व्यक्ति संसार का गुलाम है आत्मानुभवी व्यक्ति स्वतंत्रता सैनानी है। कुछ करना अपने आपको बाँधना है लेकिन कुछ करने में स्वयं का वेदन करना भव के बंधनों से मुक्त होना है। संसार से निर्बन्ध होना पुरुषार्थ ही नहीं महापुरुषार्थ है। ''कर्म में वाण हैं, स्वतन्त्रता में निर्वाण है।'' वाण में संसार का निर्माण है इसलिए हम सभी सत्यज्ञान को प्राप्त करके सत्कर्म जीवन में लाएँ फिर निष्कर्म होते हुए निर्वाण को प्राप्त करें तभी मानव जीवन की सफलता है।

गुरु का आशीष सम्पदा की तिजोरी है।

Blessings of preceptor are the vault of wealth.

ज़िन्दगी प्रश्न नहीं, उत्तरों का उत्तर है

हम चाहे वेद पढ़ें, चाहे कुरान पढ़ें, चाहे सिद्धान्त पढ़ें, चाहे आगम पढ़ें, चाहे कथा पढ़ें, चाहे अध्यात्म ग्रंथों को पढ़ें यदि जीवन को नहीं पढ़ा है तो इन सभी को पढ़ना वास्तविक फलदायी नहीं बन सकता। हम अपनी बातों के प्रमाण कभी कभी शास्त्रों में खोजने लगते हैं। शास्त्रों की बातों को अपने दिमाग में एकत्रित करके पण्डिताई का सेहरा अपने सिर पर लगाना सरल है लेकिन शास्त्रों की बातों को दरियादिली में समाना बहुत कठिन है। कुछ लोग शास्त्रों की बातों पर वाद विवाद करते हैं यदि सफल हो जायें तो वे अपने आपको ज्ञानी विद्वान समझते हैं। ये लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि शास्त्र वाद-विवाद के लिए नहीं निर्विवाद और संवाद के लिए हैं। शास्त्र पढ़ करके समय गुजारना जीवन नहीं, जीवन को पढ़कर व समझ करके उसका उत्तर मिलाने के लिए शास्त्र हैं शास्त्र वह उत्तर माला है जिसमें जीवन के सारे प्रश्नों के उत्तर लिखे हुए हैं।

शास्त्रों की बात हो, वेद-पुराणों की हो, कुरान-गीता की हो, या उपनिषेदों की जीवन को पढ़े बिना किसी को भी नहीं समझा जा सकता। जीवन के अनुभवों का संकलन ही शास्त्र है। हम अनुभवों से वाकिफ नहीं हुए तो शास्त्र कथा की तरह सिद्ध होंगे। शास्त्र तब शस्त्र बन जाते हैं जब हम ज़िन्दगी को नहीं समझ पाते हैं। ज़िन्दगी एक है लेकिन शास्त्र अनेक हैं ज़िन्दगी शास्त्रों का समूह है लेकिन एक शास्त्र ज़िन्दगी का एक छोटा सा अंश है ज़िन्दगी समझने पर हम ज्ञान की पूर्णता को उपलब्ध हो सकते हैं। परन्तु शास्त्रों को पढ़ने पर पूर्ण ज्ञान नहीं पा सकते हैं। ज़िन्दगी कई प्रश्नों का पिण्ड है शास्त्र हैं उत्तरमाला। ज़िन्दगी को हल करें फिर उत्तर निकालें शास्त्रों में मिलायें यदि वह मिल जाये तो समझिये आप स्वयं ही भगवान बनेंगे अन्यथा आप भ्रमणवान ही रहेंगे। अतः हम सभी ज़िन्दगी का सार पायें तभी ज़िन्दगी की सफलता है।

समर्पण की भूमि पर उत्तम विचार होते हैं
तो भक्ति के तल पर संकल्प होता है।

If great thoughts used to be in the land of surrender, then determination is on the surface of devotion.

तस्वीर से नहीं, तासीर से प्रेम कर

भगवान तो एक है ऐसा सभी लोग कहते हैं लेकिन साढ़े तैतीस करोड़ देवताओं का अलग - अलग रूप और अलग उनकी आराधना करने की पद्धति का इस जमीन पर कौन निर्माता है? उन देवताओं की अलग- अलग तस्वीर का निर्माण किसने किया यदि तस्वीर अलग- अलग है तो तासीर भी अलग- अलग ही होगी। एक देव तलवार लिए क्रोध में मारने को तैयार है तो एक शांतमुद्रा में आशीष दे रहा है दोनों की तासीर एक नहीं हो सकती है फिर दोंनों को पूज्य कैसे माना जाना चाहिए मुझे लगता है इतने देवों की तस्वीरें इस इंसान ने ही निर्मित की हैं और इंसान ही पूज रहा है। इंसान को वेदों-पुराणों में संतों के महा उपकारी शब्द मिले जिससे उसने अपने मन में विचार कर उसी आकृति में तस्वीर को निर्मित किया। यदि हम तस्वीर के चक्कर में पड़ जायेंगे तो तासीर भूल जायेंगे जबकि तस्वीर तासीर बताने के लिए होती है परमात्मा की तासीर हम जिस दिन जान जायेंगे उसी दिन हमें वास्तविक तस्वीर पता चलेगी तासीर के जानने पर हमारे पास परमात्मा की एक ही तस्वीर रह जायेगी यदि परमात्मा एक है तो उसकी तस्वीर भी एक सी और एक ही होना चाहिए। यदि दस व्यक्ति बहुत कुपित हों तो सभी की आँखें लाल होंगीं ठीक वैसे ही यदि परमात्मा एक सी तासीर वाला है तो परमात्मा की सभी तस्वीरें एक सी ही होनी चाहिए। हमें तासीर से प्रेम करना है तस्वीर से नहीं।

तासीर को जानने के लिए यदि तस्वीर से प्रेम किया जाये तो हमें परमात्मा से साक्षात्कार अवश्य होगा और केवल तस्वीर से प्रेम किया जाये तो हमें शरीरों में भटकते हुए कई दुःखों का सामना करना पड़ेगा। तस्वीर में परमाणुओं के अलावा कुछ नहीं है तासीर में गुणों का भण्डार है। गुणों को देखेंगे तो हम गुणों से भर जाएँगे और पुद्‌गलों को या पत्थरों को देखेंगे तो पत्थरों से भर जायेंगे। हमारा प्रेम ही हमारे हृदय को भरता है यदि हम गुनाहों से प्रेम करने लगें तो हमारा हृदय गुनाहों से भर जाता है। प्रेम ही हृदय भरने का आयाम है। जिनने भी आज तक गुणों को पाया है वह गुणों से प्रेम करके ही पाया है। यदि ज्ञान पाया है तो ज्ञानियों से प्रेम करके ही पाया है। तासीर जीवन का वास्तविक भाव है यही स्वभाव है और स्वभाव से प्रेम करने का मतलब है परमात्मा से प्रेम करना, और परमात्मा से प्रेम करना ही परम सुख शांति पाने का आयाम है। तासीर बीज है और बीज में सब कुछ निहित है।

ज़िंदगी राह के लिए है गुनाह के लिए नहीं

दुनियाँ में ऐसा कोई आदमी नहीं जिसके पास ईश्वर प्रदत्त खिली हुई ज़िंदगी न हो यह ज़िंदगी तभी से प्रारंभ हो जाती है जबसे उसका जन्म होता है। जन्म के साथ ज़िंदगी उपहार में मिलती है लेकिन यह जिंदगी परमात्मा की है और परमात्मा एक स्वच्छ निर्मल आत्मा है। इसमें कभी भी कहीं भी गुनाह को स्थान नहीं है जो लोग दुनियाँ के झंझटों में अपनी ज़िंदगी को गुजारते हैं पापों में गुनाहों में अपनी ज़िंदगी गुजारते हैं उन्हें तब तक पता चलेगा जब मृत्यु के बाद परमात्मा की अदालत में कटघरे में खड़े करके वह पूछेगा कि यह ज़िंदगी तुम्हें गुनाह के लिए दी थी या राह के लिए और परमात्मा नाराज होकर जहन्नुम में पटकेगा और दण्ड देगा सो वह अलग। आज ज़िंदगी में विषय भोगों में इतने भूल चुके हैं कि जिसने ज़िंदगी दी जो रोज ज़िंदगी के क्षण दे रहा है। उसको धन्यवाद देने भी नहीं जाते। उसकी आराधना तो छोड़ो उससे प्रार्थना करने भी नहीं जाते हैं, कर्ज चुकाना तो भूल ही गये साथ में फर्ज निभाना भी भूल गये। ईश्वर का एहसान भूले और शुक्रिया अदा करने की पद्धति भी मिटा डाली। जो फर्ज निभाना भूल जाते हैं वे ईश्वर की नजर में बहुत बड़े गुनाहगार हैं इसकी सजा मिलना अवश्यंभावी है। सजा हमेशा दण्ड की ही होती है और दण्ड अपराध ही होता है। परमात्मा अपराधी की तरफदारी नहीं करता। कुछ लोग खुदा से मिली जिंदगी को अपने हाथों बर्बाद करते हैं वे लोग परमात्मा के दुश्मन है। परमात्मा उन्हीं लोगों के लिए है परमात्मा उन्हीं का है जो ज़िंदगी को मंज़िल की राह बनाता है। सदाचार से ज़िंदगी को सजाता है, ज़िंदगी में सुख शांति का परिवेश पैदा करता है, इसलिए परमात्मा प्रदत्त ज़िंदगी राह के लिए है, गुनाह के लिए नहीं।

परमात्मा की भक्ति में जब तक हृदय के कपाट खोलकर भक्ति करते हुए सदाचरण को जब तक जीवन में न उतारा जायेगा, जब तक परमात्मा से वास्तविक मिलन न किया जायेगा तब तक ज़िंदगी के लिए सही राह मिलना असंभव है, राह कोई सड़कों जैसी नहीं है राह समीचीन श्रद्धा से आचरण में पैदा होती है। यदि ज़िंदगी को तुमने राह न बना पाया तो ज़िंदगी तबाही की ओर गिरती चली जायेगी। जहाँ आह ही आह, दर्द ही दर्द पैदा होगा। परमात्मा कभी भी नहीं चाहता कि कोई भी व्यक्ति गम के दरिया में डूबे वह तो हमेशा बचाने के लिए है। परमात्मा हमेशा ऊपर उठाने के लिए है क्योंकि वह ऊपर बैठता है, नीचे गिराने के लिए नहीं अन्यथा उसे भी साथ में गिरना पड़ेगा। आज इंसान गुनाहों में इतना दबा हुआ है कि राह नहीं खोज पा रहा है। यदि खोजता भी है तो गलत खोज बैठता है। जिससे गलत राहों में ठोकरें

खाता फिरता है। गिरता फिरता है कभी संत ही ज़िंदगी की खिली हुई सही राह बता सकते हैं, जो सही राह पर नहीं वह दूसरों को सही राह कैसे दे सकता है। परमात्मा से साक्षात्कार किये बिना सही राह का दिखना पूर्णतः असंभव सा प्रतीत होता है। अतः सही राह के लिए परमात्मा का मिलन आवश्यक है।

दुनियाँ में हर आदमी की ख्वाहिश है कि हम सुख चैन - शांति से रहें हमें कभी भी एक पल भी गम महसूस न हो। हर आदमी ज़िंदगी की सही राह की खोज में दिन रात मशक्कत कर रहा है। आश्चर्य यह है कि इतनी मशक्कत के बावजूद वह नाकामयाब है, इस नाकामयाबी में कमजोरी इस आदमी की है। कामयाबी मेहनत के अनुसार ही सबको हांसिल हुआ करती है। हमें गम इस बात का नहीं करना है कि हमें ज़िंदगी खुशनसीब न मिली गम इस बात का करो कि हम पूर्व में अपनी ज़िंदगी में कुछ न कर पाये इसके बाद हमें यह भी सोचना चाहिए कि अब चाहे कुछ हो जाये हम अपनी ज़िंदगी में खुशियों के फूल जरूर खिलाएँगे अपनी ज़िंदगी को मंजिल की राह पर जरूर लगाएँगे, हम परमात्मा को इतना खुश रखेंगे कि वह हमसे हमेशा-हमेशा प्रसन्न रहेगा।

फूल वही है जो पेड़ों में खिले और हवाओं में लहराये तथा खुशबू से आकाश को महकाये। फूल वही है जो इस तरह खिले कि बाग में जो भी आकर उसे देखें तो उसके पास आने के लिए तैयार हो जाये। ठीक उसी प्रकार ज़िंदगी वही है जो सभी के बीच में रहकर भी खुशी से जिये तथा ज़िंदगी में मंजिल की राह को पाकर खुद महके और ये आकाश को भी महकाये। वैसे ज़िंदगी की राह पाना बहुत सुगम है, केवल अपने जीवन में उतारना है जब हृदय की बात को मन अस्वीकारता है तब ज़िंदगी गुनाहों की तरह लुढ़क जाती है और जब मन हृदय की बात को स्वीकार कर लेता है तब ज़िंदगी मंजिल की ओर बढ़ती है। इसलिए हम सभी को हृदय की बात स्वीकारना चाहिए वहीं से राह निकलेगी वहीं से राम निकलेंगे तभी यह जीवन सफल हो सकेगा।

विचारों का स्थायित्व हमें लक्ष्य तक पहुँचाता है।

Stability of thoughts makes us to reach to the object.

देखोगे वो छपेगा, सोचोगे वो लिखेगा

हम ज़िन्दगी में देखें तो दो ही वस्तु ऐसी दिखाई देंगीं जिनका हमारे जीवन में हमेशा हमेशा अस्तित्व है। इस अस्तित्व के द्वारा ही हम अपनी पहिचान कर पाते हैं। यदि यह वस्तु न होती हमारा जीवन ही नहीं हमारा अस्तित्व ही हमें समझ में नहीं आता वे वस्तु हैं देखना और जानना। हमारी आँखें बहुत ही खतरनाक कैमरा की तरह हैं इनके सामने जो भी दृश्य परिलक्षित होता है अन्तर की रील पर वह दृश्य अंकित हो जाता है जब उस पर उपयोग से धुलाई होती है तो वह चित्र स्पष्ट और साफ छपा हुआ नजर आता है इसीलिये मैं कहता हूँ ''देखना है तो ऐसा देखो जिसमें शर्मिन्दगी न हो और सोचना है तो ऐसा सोचो जिसमें गन्दगी न हो।'' देखने से पोजिटिव रूप तैयार होता है लेकिन सोचने से हमारे जीवन में संस्कार निर्मित होता है। संस्कार इस जन्म के अन्त तक चलता है और भविष्य में शुरू से ही चलने लगता है। हमें देखने और सोचने में सबसे ज्यादा समझदारी रखना है यदि यहाँ चूक गये तो पूरी ज़िन्दगी की नींव खोखली हो जायेगी।

हमें किस संस्कार का जीवन निर्मित करना है यह हमारी सोच पर आधारित है। यदि हम परमात्मा की मूर्ति में पत्थर का आकलन करें तो हमारे सोचने में परमात्मा के प्रति परम आदर का भाव उद्‌घटित नहीं होगा महर्षियों ने स्पष्ट कहा है जो व्यक्ति प्राणी में परमात्मा न देख सका उसे पत्थर की मूरत में परमात्मा कहाँ से दिखेगा? जो हर जगह परमात्मा न देख सका उसे मन्दिर और मस्ज़िद में परवरदिगार कहाँ से दिखेगा? अन्तरंग की सही सोच ही हमारी दृष्टि बनाता है। हम खराब सोचते हैं कि नहीं इसका पता तब चलता है जब हम आधा घंटे आँख बन्द करके एकान्त में बैठें तो वही रील चलेगी जो तुमने देखा और सोचा होगा। यदि कुछ नहीं देखा सोचा है तो तुम शान्त मुद्रा में परमात्मा की तरह आनन्दित होते हुए बैठे रहोगे। हम सभी को सूरदास की तरह आँखें और दिमाग नहीं फोड़ना है बल्कि अन्तर दृष्टि से सब कुछ देखना और सोचना है तभी हम जीवन में सफल हो सकते हैं।

आत्मरक्षा अपने प्रति जागृति का सबूत है।

Self security is a proof of awakening.

सन्त जीवन्त शास्त्रा हैं, मृत नहीं

हम काफी समय तक शास्त्रों का अवलोकन करने के बाद भी शास्त्र की बातों को समझ नहीं पाते हैं कैसी विडम्बना है हमारी बुद्धि की। मनीषियों ने जीवन को जिया और जीवन की बात को शब्दों में लिपिबद्ध कर दिया ये बातें ही शास्त्र बन गइ उन्हीं ऋषियों की बातों को जब जीवन में सन्त उतार लेता है और उन्हें आचरण बना लेता है तो सन्त का जीवन ही जीवन्त शास्त्र बन जाता है। सच्चे संत की चर्या देखकर हमें यह पता लग जाता है कि शास्त्रों में ऐसा ही लिखा होगा। संत ऊर्जा बिखेरता हुआ एक उपकारी सूरज है। सन्त के पास बैठने पर ही उसकी सुवास हमें महसूस होती है। फूल के पास जब हम जाते हैं, बाग में जब हम जाते हैं तभी हमें सुगन्धि की अनुभूति होती है। सन्त महकता हुआ एक गुलाब का फूल है। सन्त को देखकर कई शास्त्रों का ज्ञान अपने आप सहज ही हो जाता है। सन्त के अभाव में वाणी निर्जीव है।

जैसे एक बूढ़े व्यक्ति के जीवन में अनुभवों का भण्डार होता है उसके जीवन में ज़िन्दगी के कई उतार चढ़ाव होते हैं ठीक वैसे ही एक सन्त के जीवन में अद्वितीय विलक्षण अनुभव होते हैं। जिन्हें समझ पाना एक ग्रहस्थ के बस की बात नहीं। ग्रहस्थ, साधु की हर बात को अपने स्तर से जानता है क्योंकि हम वही समझते हैं जिससे हम परिचित होते हैं। यहाँ तक हम शास्त्रों की बातों को भी अपने स्तर से समझकर उसका अर्थ कर लेते हैं। अतः शास्त्र का अन्तिम निचोड़ सन्त ही बता सकता है शास्त्र को जीवित एक संत ही कर सकता है। ऐसे संत को पाकर हम शास्त्र को समझें और अपना जीवन भी जीवन्त बनायें। तभी हम सभी का जीवन भी जीवन्त शास्त्र बन सकता हैं।

महान् विचारों का उभरना श्रद्धा है तो उन्हें साकार
करना है भक्ति।

If the rise of Noble thoughts is Faith then to materialize them is worship.

प्रयोजन रहित किया गया परिश्रम मात्र
शारीरिक श्रम है।

Hard work without object is merely a phtsical labour.

ज्ञान से न जले तो अज्ञान से दहकना होगा

हम जिस दुनियाँ से आये हैं उस दुनियाँ में दहकते हुए आए हैं यह बात हमारे दुखों से साफ जाहिर हो रही है हमारे चारों ओर संक्लेशता भरी पड़ी है। दुनियाँ एक ऐसी आग है जहाँ या तो चिराग की तरह जलकर रोशनी बिखराई जा सकती है या आग की तरह जलकर भस्म हुआ जा सकता है आग की तरह जलने में बुद्धिमानी नहीं है केवल जानवरों की तरह अबोध होकर अपने जीवन को राग के हवाले कर देना है। राग का कहर पल पल में है पग-पग पर है। अपना अस्तित्व पाना कठिन जरूर है लेकिन असंभव नहीं है अस्तित्व परिचित नहीं है पर वस्तु से बाह्य सुख से हम बहुत पहले से परिचित हैं उसी को सुख समझकर अज्ञान की धधकती आग में झुलसते रहे हैं। दुनियाँ में जो आये हो तो यह बात अकाट्य सत्य है कि या तो ज्ञान से जलो सा अज्ञान की भट्टी में अपने आपको जला लो और झुलसकर मिली सम्पदा भी खो बैठो।

मनुष्य को मनुष्य इसीलिये कहा जाता है कि वही अकेला ऐसा प्राणी है जो इतना ज्ञाना प्रकट करने की क्षमता रखता है कि दुनियाँ की कोई भी वस्तु उसके ज्ञान से अछूती न रहे वह सम्पूर्ण दुनियाँ का दृष्टा हो सकता है। इंसान ही एक ऐसा प्राणी है जो भगवान बनने का चैलेंज ले सकता है लेकिन दूसरी ओर यदि इंसान अज्ञान की आग में गिर पड़े तो नीच से नीच नरक में पड़कर असंख्यात वर्षों तक दुखों के सागर में तड़फता हुआ भी जी सकता है। हमें यदि चिराग की तरह जलना है तो यह कला सीखने के लिए कोई जलते हुए चिराग के पास जाना पड़ेगा और अपने चिराग में ज्ञान रूपी तेल भरना पड़ेगा संयम रूपी बाती लगानी पड़ेगी तब यह चिराग जलेगा और खुद रौशन होगा तथा अज्ञान के ईंधन को दहन करके रख देगा। ऐसा ही ज्ञान हम सभी के अन्दर प्रकट हो तभी हमारा जीवन सार्थक हो सकता है।

आत्महत्या का हक सबको है दूसरे की हत्या का नहीं

Everybody has the right of Sucide but not the right to kill others.

घर को जला दिया घर के चिराग ने ।

Own house flammed by own lamp.

कर्तव्य ही पतित को पावन कर परमात्मा बना देता है

पतितों के लिये ये दुनियाँ है, पतितों की ये दुनियाँ है, ये संसार पतितों की वजह से ही चल रहा है कुछ पतित पापों से घबराकर परमात्मा का सहारा ले लेते हैं जिस कारण वे पावनता की ओर बढ़ने लगते हैं परमात्मा का सहारा उनके हृदय को पावन कर देता है वैसे ही सारे हृदय अपवित्र हैं खून और माँस से निर्मित हैं लेकिन ऐसे अपवित्र स्थान पर कर्तव्य के द्वारा परम पवित्र परमात्मा को हृदय से भावविभोर होकर ध्याया जाता है, उसे गाया जाता है, बुलाया जाता है तब वह हृदय पतित से पावन होने लगता है। परमात्मा अपवित्र से अपवित्र स्थान पर आ जाये तो वह स्थान भी पवित्र हो जाता है सबरी के जूठे बेर रामचन्द्र जी ने खाये तो उसके बेर भी पवित्र हो गये और उसकी कुटिया भी पवित्र हो गई।

यदि परमात्मा न होता तो कोई भी वस्तु या कोई भी इंसान पावन नहीं होता। परमात्मा का उपकार, गुरुओं का उपकार उसी के लिए है जो उन्हें स्वीकार करने के लिए तैयार है। गुरु ही भक्त और भगवान को मिलाने का सेतु है गुरु बीच में न होता तो भक्त कभी भी भगवान से नहीं मिल पाता। जिन भक्तों को परमात्मा के दर्शन करना हैं उन्हें गुरु को बीच में ढूँढना या लाना जरूरी है। इसीलिए किसी ने कहा है कि गुरु के बिना जीवन शुरू नहीं होता है। यदि कोई व्यक्ति छः कर्तव्यों को न करके केवल दो कर्तव्य प्रतिदिन करता है तो भी वह पूर्ण पावन नहीं हो सकता है। छः कर्तव्यों में से कोई एक भी कर्तव्य तब सफल और कार्यकारी है जब छः कर्तव्य किये जावें प्रत्येक कर्तव्य के पीछे भाव छिपा हुआ है कर्तव्य का मतलब ही है कि वह कार्य जो करने योग्य हो और ऊर्ध्वगामी बनने के लिए भावों से किया जाये। भावों के बिना किया गया कार्य कर्तव्य नहीं हो सकता है।

कई लोग कहते हैं कि दुकान खोलना भी कर्तव्य है, बच्चों की देखभाल करना भी कर्तव्य है, पत्नी को देखना भी कर्तव्य है, घर बनवाना भी कर्तव्य है लेकिन ये वे लोग हैं जो कर्तव्य निष्ठ नहीं हैं ये कार्य भोगियों के लिए कर्तव्य हो सकते हैं धर्मियों को नहीं। सही बात तो यह है कि वे कर्तव्य नहीं हैं अपने द्वारा किये गये अपराध की सजा है। अतः कर्तव्यशील होना ही जीवन को पावनता की ओर ले जाना है यही जीवन की सफलता है।

कर्तव्यशील को ही सत्य नसीब होगा

हर आदमी की तमन्ना है कि मुझे सत्य का साम्राज्य अभी और इसी वक्त नसीब हो जाये मैं सत्य को उपलब्ध हो जाऊँ या सत्य मेरा गुलाम हो जाये लेकिन तमन्ना वे ही करते हैं जो कामचोर और कमजोर होते हैं। कर्तव्यशील कर्तव्य करता है तभी तो वह सत्य को प्राप्त कर पाता है कोई व्यक्ति अपने कर्तव्य को भूलकर दुनियाँ के कार्य करता है तो न इस जन्म में सुखी रहता है और न भविष्य के जन्म में सुख प्राप्त करता है और कर्तव्यशील व्यक्ति वर्तमान में सुख चैन से रहता है तथा भविष्य में भी दुखी नहीं होता। सत्य नसीब होगा तो कर्तव्यशील को ही होगा अकर्तव्यशील को सत्य की बात तो दूर सत्य की खुश्बू भी न आयेगी।

श्रावक का प्रथम कर्तव्य देव पूजा है। यदि वह देव पूजा कर्तव्य रूप में नहीं करता तो वह समुचित फल पाने का अधिकारी नहीं होता कर्तव्य का मतलब है फल की आकांक्षा न रखते हुए कार्य करना। गीता में भी कहा है कि '' कर्म करते हुए जो फल की इच्छा नहीं रखता वह ही सच्चा भक्त कहलाता है। '' सही बात तो यह है कि फलाकांक्षा ही भक्ति के परिणाम को हीन कर देती है और आनन्द में कमी कर देती है। पूजन ही परमात्मा से बात करने का सुगम तरीका है यदि परमात्मा की पूजन किन्हीं संतों के द्वारा न लिखी जाती और किन्हीं भक्तों के द्वारा न की जाती तो परमात्मा के सम्मुख काफी देर तक कोई खड़ा भी नहीं हो पाता और न ही बात कर पाता। अतः देव पूजा परमात्मा से साक्षात्कार करने का सबसे सुगम तरीका है। भगवान की भक्तिपूर्वक आराधना करने के बाद यदि अपने नगर में संत हों तो उन्हें आहारदान भक्तिपूर्वक देना चाहिए आहारदान के फल से ही व्यक्ति भोगभूमि को प्राप्त कर लेता है तथा महापुरुषों की कथाओं को पढ़ना चाहिए तथा शास्त्रों का स्वाध्याय करके अपने जीवन में शक्तिशः उसे अभिभूषित करना चाहिए ये सभी कर्तव्य जीवन को ऊर्ध्वगति की ओर ले जाते हैं। तथा सत्य से साक्षात्कार कराकर उसे प्राप्त कराते हैं। सत्य की प्राप्ति ही जीवन है।

अपने प्रति सजगता सबसे बड़ी सफलता है।

The awareness towords self is the greatest success.

रहस्य को साकार करने की उत्कंठा, सफलता है

The longing to materialize is the secret to success.

हमारे सारे प्रयास अँधेरा मिटाने के लिए हैं

हम अपनी ज़िन्दगी के सम्पूर्ण क्षणों पर एक नजर डालें तो पता चलेगा कि हम अपने जीवन में उजाला करने के लिए ही जिये थे। ये बात अलग है कि हम अँधेरा मिटाने में रंच मात्र भी सफल न हुए, चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा है। अँधेरे में ही हमारा जन्म हुआ है अँधेरे में ही हम जी रहे हैं। पूरे जीवन में सत्य की एक किरण भी पैदा नहीं कर पाये हैं। यह हमारी जड़ता परम्परा अनादि से चली आ रही है। आश्चर्य की बात यह है कि हम अँधेरे में रहना तो पसन्द नहीं करते पर अँधेरों का ही पोषण करते हैं, अँधेरों का ही इंतजाम कर रहे हैं। अँधेरे से हमें घबराहट होती है लेकिन फिर भी हम उजालों से दूर भागते हैं अँधेरा अज्ञान ही है। अज्ञान तीन काल में कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता है लेकिन ज्ञान पूर्ण हो सकता है केवल ज्ञान की अवस्था में ज्ञान की पूर्णता हो जाती है हमारे सारे प्रयास उजाला पैदा करने के हैं।

अँधेरे में कई दिन रहें तो घबराहट होती है लेकिन उजाले में एक नहीं कई जिन्दगी गुजारने पर भी घबराहट नहीं होती है उजाला मौत को ही मौत के घाट उतार देता है। अँधेरे में हम बिल्कुल अकेले हैं कोई अपना नजर नहीं आता जिसे अँधेरों में अपना कहा जाता है वह धोखा है और कहने वाला धोखेबाज है। अँधेरे में अपनी छाया भी अपने साथ नहीं होती उजाले में परमात्मा अपने साथ होता है और छाया तो जीवन साथी बनकर अपने साथ चलती है।

यदि हमें अँधेरा मिटाना हो तो किसी ज्ञानी संत के चरणों में जाकर अपना मस्तिष्क माचिस की तीली की तरह रगड़ना पड़ेगा तब कहीं जलती मशाल वाला वह संत तुम्हारे चिराग में ज्योति डाल सकता है। हमें यदि माचिस भी मिल जाये और तीली भी तो भी यदि माचिस सीडी है तो जलने वाली नहीं है। संत के पास जाये बिना किसी भी आदमी का चिराग नहीं जल सकता संत ही हैं जो राग में चिंगारी लगा देते हैं राग को जला देते हैं तो चिराग जल जाता है। हम सभी अपने चिराग में ज्योति पैदा करें तभी हमारा यह मानव जीवन ज्योतिर्मय हो सकता है।

ईश्वर पूजा से नहीं, आचरण से प्रसन्न होता है।

Lord pleases by conduct not by worship

अध्यात्म है हृदय को गुलशन बनाना

यदि हृदय को मन के पत्थरों से भरा जाये तो हृदय वीरान खण्डहर हो जावे, यदि मन को हृदय के फूलों से भरा जाये तो मन खुश्बू की बहार बन जावे, यदि मन हृदय की बात को स्वीकार कर ले तो मन की गति परमात्मा की ओर होती है यदि हृदय मन की बात स्वीकार कर ले तो हृदय की गति पापात्मा की ओर होती हुई दुर्गति की ओर हो जाती है। हृदय केवल हृदय की बात को स्वीकार कर अपने आप में ठहर जाये तो अध्यात्म की गति बन जाती है अपने आप में ठहर जाती है बस यही मोक्ष है, यही मुक्ति है, यही मंजिल है। हर आदमी की ख़्वाहिश मंज़िल को पाने की है लेकिन मंज़िल पाने का मतलब है मानव जीवन का ही नहीं 84 लाख जीवनों का अंतिम पड़ाव। इसके बाद भ्रमण समाप्त हो जायेगा ऐसी मंजिल भी तब मिलेगी जब पहिले जीवन की चरम सीमा का अंगरखा ओढ़ लिया जायेगा। सारी इच्छाओं को तिलांजलि देकर दुनियाँ की ज्वालाओं में से बे-गुनाह निकला जाएगा। इस गुनाहगार और लपटों से भरी इस दुनियाँ में अपने हृदय को गुणों का स्थान बनाना, अपने हृदय में प्रेम - वात्सल्य - समता - ज्ञान - शक्ति के वृक्ष लगाकर उन्हें सींचना और सुन्दर गुलशन बनाना ही अध्यात्म है। ऐसा अध्यात्म ही जीवन को चिराग बनाकर आत्मा को ज्योतिर्मय बना देता है। ऐसा ही जीवन परमात्मा को प्यारा है।

जो परमात्मा को प्यारा होता है वह हम सभी को भी प्यारा होता है वह ही दीन दुखियों का सहारा है परमात्मा की बात स्वीकार किये बिना कोई भी परमात्मा का प्यारा नहीं बन सकता है। अध्यात्म के बिना जीवन मृत तुल्य है। इंसान आकाश की तरह पैदा होता है। यदि अध्यात्म अपने जीवन में पैदा न कर सका तो एक गंदी झौपड़ी की तरह मर जाता है ऐसा आदमी पूनम के चाँद की तरह जनमता है तो है पर अमावश की रात की तरह मर जाता है ऐसा आदमी चिराग की तरह जनमता है और आग की तरह मर जाता है। अध्यात्म जले हुए वल्ब की तरह है जैसे वल्ब जब जलता है तो काँच दिखाई नहीं पड़ता और बुझा हुआ हो तो काँच दिखता है रौशनी नहीं दिखती वैसे ही अध्यात्म में काँच रूपी ये शरीर दिखाई नहीं देता। शरीर दिखे तो आत्मा नहीं दिखती और आत्मा दिखे तो शरीर नहीं। अध्यात्म को एक पेड़ में भी अपने जैसी आत्मा नजर आती है एक चींटी भी स्वयं आत्मा जैसी नजर आती है। अध्यात्म वह पैनी दृष्टि से पैदा होता है जिसमें अदृश्य वस्तु भी स्पष्ट दिखाई देती है। हृदय को खुले आकाश की तरह विशाल बनाना व जीवन को गुलशन बनाने से ही अपने जीवन को सफल बनाया जाता है। यही मानव जीवन की सार्थकता है।

झुकना, भरने का आयाम है

हर आदमी कुछ पाता है तो पहले कुछ खोना पड़ता है कहीं – कहीं तो पहिले खोना पड़ता है बाद में पाना हो या न हो यह जरूरी नहीं। जुए में जुआरी पहले दाँव पर लगाने के लिए खो देता है, पाना उसकी किस्मत पर निर्भर करता है। मन हमारा जितना ज्यादा वस्तुओं में फैलता है आत्मा उतनी ही सिकुड़ती है और जब आत्मा गुणों के प्रति फैलती है तो मन को उतना ही संकुचित दायरे में होना पड़ता है। मन दायरे में हो तो आत्मा दरिया बनकर समन्दर में मिल जाती है और मन दायरे में न रहे तो आत्मा दरिद्री बनकर दर – दर की ठोकरें खाती है। मन आत्मा से दुनियाँ की वस्तु माँगने को कहे तो वह भोगी व रोगी आत्मा होती है और यदि मन आत्मा से गुण माँगे तो आत्मा महात्मा बनती है। संत और महंत वही बनते हैं जो अपने गुणों को पाने के लिए झुकते हैं क्योंकि झुकना भरने का तरीका है आज जो गुणों से नहीं भरे वो वास्तव में झुके नहीं हैं।

शिष्य परमात्मा के प्रति गुरुओं के प्रति जितना विनम्र होता जाता है उसके हृदय में ऋद्धि – सिद्धि उतनी ही अधिक प्राप्त होती है। पहाड़ अकड़कर जमीन पर खड़ा रहता इसीलिए पानी बरसने के बाद भी सूखा का सूखा रहता है और तालाब जितने झुके होते हैं तो बरसात में उतने ही भर जाते हैं। बाँस का पेड़ जितना ऊँचा खड़ा रहता है उतना ही एक हवा के झोंके से चकनाचूर हो जाता है और घास तीव्र हवा में झुक जाती है तो तीव्र हवा भी उसे उखाड़ने में समर्थ नहीं हो पाती है।

आज तक चाहे एकलव्य हो, चाहे उपमन्यु, चाहे अर्जुन, चाहे श्रवणकुमार जिसने भी विद्या आदि गुणों को प्राप्त किया है वे सभी गुण विनम्रता से प्राप्त हुए हैं अतः हम सभी को महान् गुणों को पाना है तो सर्वप्रथम झुकने का विचार बनाना पड़ेगा तभी ज्ञान के क्षेत्र को विकसित करके अपने जीवन को उज्ज्वल बना सकते हैं और अपना जीवन गुणों से भर सकते हैं।

तुमने जो सत्य माना था वही तुम्हें मिला है।

You got the some which believed as truth

अध्यात्म हृदय से उपजता है मन से नहीं

जीवन को चलाने वाले हमारे पास दो ड्राईवर हैं एक योग दूसरा उपयोग। शरीर एक हमारी जिन्दगी की गाड़ी है। गाड़ी भी दो तरीकों से चलती है एक तब, जब हम ड्राईवर रखते हैं, एक तब, जब हम स्वयं ड्राइव करते हैं। ऐसा ही अध्यात्म और अनध्यात्म है हमारे जीवन के रथ के दो ड्राईवर हैं। जब हम मन - वचन - काय से हटकर स्वयं ड्राइव करते हैं तो अध्यात्म कहलाता है और हम योग के आधीन हो जाते हैं तब अनध्यात्म पैदा होता है। जीवन की वास्तविकता और महाआनन्द आध्यात्मिकता में हैं। जो वास्तविकता में दुख है वह अज्ञानवश दुःख महसूस होता है यही अधार्मिकता या अनध्यात्मिकता है। अध्यात्म को हर आदमी पाना चाहता है लेकिन मन - वचन - काय की युक्तियों से पार नहीं होना चाहता, स्वयं ड्राइव करना नहीं चाहता यह बात तर्कहीन नज़र आती है। दूसरों से अपना काम कराकर स्वयं को अनुभवी सिद्ध करना गलत है ऐसी गलती करके स्वयं को सत्य समझना महागलत है। वह अध्यात्म हृदय की धारा से निकलता है यदि हृदय हिमालय है तो अध्यात्म गंगा है अतः हृदय से अध्यात्म उपजता है मन से नहीं।

स्व - संवदेन अध्यात्म की नींव है भोग विलास स्व- संवेदन नहीं विषवेदन है जब कभी कोई वस्तु पाकर इन्द्रिय की प्रसन्नता को जाहिर करने के लिए चेतन खुश होती है तो समझना चाहिए यह अध्यात्म की खुशी नहीं। अध्यात्म की खुशी को आत्मानन्द से ही व्यक्त किया जा सकता है वस्तु आनन्द से नहीं यदि पर वस्तु के माध्यम से आनन्द आता है तो आनन्द भी पराया है। हृदय वह केन्द्र बिन्दु है जहाँ से आनन्द के रास्ते मंज़िल की ओर फूटते हैं हृदय वह फव्बारा है जहाँ से स्वभाव की धाराएँ निकलती हैं और देखने वालों को आनन्दित करतीं है। हृदय वह गुलशन है जहाँ आनन्द की खुश्बू के कई पेड़ लगते हैं और उनमें फूल खिलकर महकते हैं। हृदय वह समन्दर है जहाँ आनन्द की खुश्बू के कई पेड़ लगते हैं और उनमें फूल खिलकर महकते हैं। हृदय वह समन्दर है जहाँ पर सभी आनन्दित नदियों का संगम है हृदय वह तीरथ है जहाँ सारे तीर्थ समा जाते हैं। हृदय से जब भी कोई आवाज आती है तो सारा शरीर रोमांचित हो उठता है शरीर का एक - एक अंग पुलकित होकर विस्तृत होने लगता है। हृदय की आवाज कोई आम आदमी की आवाज नहीं वह अध्यात्म से लबालब भरे परमात्मा की आवाज है। यदि हृदय कमल न होता तो परमात्मा को पैदा होने का स्थान भी न होता जिनके हृदय नहीं होता वहाँ परमात्मा प्रकट भी नहीं होता अतः परमात्मा की लहर पाने के लिए अध्यात्म पैदा करना जरूरी है व हृदय को निर्मल बनाना जरूरी है तभी जीवन में अध्यात्म पनपता है।

अनंत भ्रमण का अंत हृदय की विशालता से होगा

कौन नहीं चाहता मेरा हृदय विशाल न हो जाये ? कौन नहीं चाहता कि मैं दुनियाँ का सर्वशक्तिमान व्यक्ति न बन जाऊँ लेकिन चाहने से कुछ होता तो आज सारे व्यक्ति ईश्वर बने बैठे होते कोई भी दुखी नहीं होता सभी सुख में बैठे होते। हृदय को विशाल करने के लिए हमें प्रत्येक प्राणी का दर्द अपने जैसा समझना पड़ेगा, हृदय में प्रतिदिन प्रतिपल गुणों की ऊर्जा भरनी पड़ेगी, परमात्मा के यशगान में हृदय को अर्पित करना पड़ेगा जब हृदय अर्पित हो जायेगा तो परमात्मा की ऊर्जा हमें मिलना शुरू हो जायेगी। ब्रह्मा वह है जो समस्त ब्रह्माण्ड में फैला हुआ है उसको हृदय में बिठाने के लिए ब्रह्माण्ड कितना बड़ा हृदय भी चाहिए यदि हमारा हृदय संकीर्ण बुद्धि वाला है तो परमात्मा हमारे हृदयालय में न आएगा। हृदय तब विशाल होगा जब हमारा मन सीमित होने लगेगा, मन यदि सीमितता तोड़ दे तो हृदय संकुचित होने लगेगा। हृदय का फैलना संसार को सीमित करने की कला है। मन हमेशा सीमित वस्तु को ही माँगता है जबकि हृदय असीमित वस्तु पर नजर रखता है। हृदय जब भी पुकारता है तो असीमित पर उसकी नजर सबसे पहिले जाती है लेकिन विषयाधीन होने के कारण मन से जो सुख - दुख हो रहा है वह सभी हृदय की सिकुड़न है। हृदय की विशालता ही अनन्त के भ्रमण का अंत कर देती है।

किसी कवि ने कहा है कि ''मन के मते न चालिए मन के मते अनेक। जो मन के मत चालता उसको दुःख अनेक'' मन रेल की पटरी है और हृदय है उस पर चलने वाली ट्रेन। जब हृदय विशाल नहीं होता तब वह संसार की भोग की वस्तु को इष्ट मानता हुआ जीता है मन भोगी है और हृदय निर्भोगी है मन जितना जितना फैलता है दुख संसार उतना ही विस्तृत होता है यदि हृदय फैले तो वह सत्य को प्राप्त कर लेता है और सर्वोच्च पद तीर्थंकर पद को भी प्राप्त कर लेता है मन हमेशा पराधीनता को ही स्वाधीनता समझता है मन हमेशा गुलामियत को स्वीकार करता है जबकि हृदय स्वाधीनता और मालकियत की ओर ले जाता है। दुनियाँ अनन्त है, अनन्त का भ्रमण तभी रुकता है जब हम अनन्त की ओर आकर्षिक होकर उसे पा लेते हैं। अनन्त भ्रमण तभी रुकता है जब हम अनन्त की ओर आकर्षित होकर उसे पा लेते हैं। अनन्त भ्रमण का अनन्त गुण ही अन्त कर सकते हैं। अनन्त गुण पर अनन्त अवगुण हैं। एक - एक अवगुण हटाएँ तो गुण भरते जाएँ हम गुणों के सागर हैं बस हृदय विशाल बनाने की जरूरत है। हमारी विशालता ही अनन्त संसार को स्थिति में ला सकती है। संसार का अन्त होते ही हमारा जीवन सफल होने लगता है यही पुरुषार्थ है और यही सफलता है।

सद्‌भावना शक्तिवर्धक टॉनिक है

एक व्यक्ति परमात्मा की आराधना प्रतिदिन करता है संतो का समागम भी करता है शास्त्रों वेदों को भी पढ़ता है लेकिन उसके अन्दर सद्‌भावना नहीं तो उसका सारा धर्म बाहर का भेष बदलना है। सद्‌भावना ही जीवन को उज्ज्वल बनाती हुई ज्ञान को विकसित करती है। सद्‌भावना के द्वारा ही हम दूसरों के दर्द को अपने जैसा महसूस कर सकते हैं, सद्‌भावना से ही मेरा सभी प्राणियों से मैत्रीभाव बन सकेगा। यूँ कहें कि सद्‌भावना ही हमें परमात्मा की उँगली पकड़वा सकती है, सद्‌भावना से ही हम सभी से आशीर्वाद रूपी ऊर्जा पाने में कामयाब हो जाते हैं और सभी महान पुरुष और सामान्य लोग जब हमें आशीर्वाद देते हैं तो हमारा सारा शरीर रोमांचित (पुलकित) हो जाता है और हम शक्ति से भरने लगते हैं। सद्‌भावना के कैप्सूल संतों के चरणों में समर्पण करने से मुफ्त में प्राप्त हो जाते हैं और यदि समर्पण नहीं है तो लाखों रुपये खर्च करने पर भी वे कैप्सूल नहीं मिलते हैं। सद्‌भावना के द्वारा ही जो हमारा चिराग जन्मों-जन्मों से बुझा पड़ा है अँधेरे में है वह जल उठता है चिराग के जलते ही सद्‌भावना का बीज पेड़ बन जाता है और संतों के पास पहुँचने पर वह पेड़ फल-फूल से लदने लगता है। सद्‌भावना जीवन के लिये आनन्द का इंजेक्शन है और शरीर के लिए शक्तिवर्द्धक टॉनिक है।

सद्‌भावना के बिना धार्मिक चोला ओढ़ना दिखावा है। दिखावा वही लोग करते हैं जो दुख को अपने गले से लगाने को तैयार हैं, दिखावा वही करते हैं जो अपनी स्वतंत्रता को अपने द्वारा मिट्टी में मिलाना चाहते हैं, दिखावा दुखों का सम्मान है। परमात्मा सर्वशक्तिमान है शक्ति का आबंटन परमात्मा ही करता है शक्तियाँ उसी के घर में आ जाती हैं जिसके घर में परमात्मा की आराधना के सुन्दर गीत गूँजते रहते हैं। सद्‌भावना वह धर्म है जिसको सभी सम्प्रदाय के धार्मिक व अधार्मिक व्यक्ति स्वीकार करते हैं जो सद्‌भावना को धर्म न माने वह न तो धर्मी है न ही उसका कोई धर्म है।

सद्‌भावना को ही भगवान महावीर ने दया कहा, अहिंसा कहा '' ''जीओ और जीने दो'' इस भावना को प्रत्येक प्राणी के पास पहुँचाया। प्रभु राम की सद्‌भावना देखो सीता को रावण द्वारा हरण कर लेने पर राम दुखी थे ऐसे दुख में जटायु को घायल देखकर उनके अन्दर सद्‌भावना उमड़ पड़ी और वे सीताजी के वियोग का दुख भूल गये। सबसे बड़ी सद्‌भावना है अपने आपमें लीन हो जाना। कुरान शरीफ में लिखा गया है कि अपने पडौसी के कुत्ते को भी न सताओ यदि कोई सताता है तो वह खुदा का बंदा नहीं है धर्म का दुश्मन है। अतः हम सभी के हृदय में वह शक्तिवर्धक सद्‌भावना हो जिससे हमारा जीवन ज्ञानमय शक्तिमय बन सके तभी जीवन सफल हो सकता है।

शक्ति चाहक परमात्मा को जरूर ध्याये

दम है तो दुनियाँ में दबदबा है दम नहीं तो गम ही गम है चाहे देखने की बात हो, चाहे जानने की बात हो, चाहे सुख-दुख की बात हो शक्ति पर ही निर्भर करती है। ज्ञान - दर्शन - सुख उतना ही होता है जितनी शक्ति होती है यदि शक्ति से ज्यादा धन मिल जाये तो हार्ट अटैक हो जाता है अथवा ब्लडप्रेशर बढ़ जाता है जिससे मृत्यु तक संभव हो सकती है। ज्ञान व सुख चाहने वालों को चाहिए कि वे अपना हृदय इतना विशाल व गंभीर बनाएँ जिसमें ज्ञान सुख वहन कर सकें। विशाल हृदय में हार्ट अटैक आदि बीमारियाँ नहीं होती यह बीमारी कमजोर हृदय पर अटैक करती है शक्ति तभी भर सकती है जब हम सर्व शक्तिमान को हृदय से ध्यायें और उसे ही अपना आराध्य बनाएँ आज लोगों के हृदय कमजोर हैं। इससे सिद्ध होता है कि ऐसे कमजोर लोग परमात्मा पर कम पैसे पर ज्यादा ध्यान देते हैं पैसा ही हृदय कमजोर करने में सबसे बड़ा सहायक है जितना ज्यादा धनवान को भयवान कहा जाये तो यह भी गलत नहीं होगा। अतः शक्ति चाहक, शक्तिवान को ध्यान कर अपनी शक्ति बढ़ाए।

यदि धनवान के पास ज्ञान है तो उसे भय नहीं होगा लेकिन धन और ज्ञान दोनों एक साथ मिल जायें यह बहुत कम ही संभव है। धन से ज्ञान नहीं होता बल्कि ज्ञान से धन मिल सकता है। धन शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बाहरी उपचार है लेकिन ज्ञान आत्मा को स्वस्थ रखने के लिए अंतरंग उपचार है। यदि जीवन के लिए धन से सम्पन्न होना जरूरी है तो अंतरंग स्वस्थ होना और भी जरूरी है।

परमात्मा अपने बन्दों को सब कुछ देने को तैयार है बस यदि हम अपना हृदय विशाल बना लें उसकी केवल एक ही शर्त है उसका एक ही कहना है कि मैं उसी को दूंगा जिसका हृदय विशाल होगा। हृदय की विशालता प्रेम - ज्ञान - दर्शन व सुख पैदा करती है और हृदय की संकुचितता इसके विपरीत अज्ञान दुख पैदा करता है। इसलिये विशाल हृदय ही शक्तिग्राहक हो जाता है और वही हृदय परमात्मा को पसंद है हृदय विशाल करने पर ही मानव जीवन सफल हो सकता है।

महत्वाकांक्षा न हो तो मानव मरा हुआ है।

Human is dead if there are no ambitions.